@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/ qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
शुक्रवार, 29 नवंबर 2024

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 19 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

ममता ने वक्फ विधेयक को बताया धर्मनिरपेक्ष विरोधी

कोलकाता, 28 नवंबर। विधानसभा में वक्फ संशोधन विधेयक पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने इसे संघीय और धर्मनिरपेक्ष विरोधी बताया। बंगाल की मुख्यमंत्री ने कहा कि यह विधेयक एक विशेष वर्ग के लिए है। उनका कहना है कि वक्फ विधेयक के जरिए मुसलमानों के अधिकारों को छीना जा रहा है। इसके साथ ही उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र ने वक्फ विधेयक पर उनसे बातचीत नहीं की। वक्फ संशोधन विधेयक को लेकर पत्रकारों से बात करते हुए ममता बनर्जी ने कहा, इस विधेयक को लेकर हमारे साथ कोई चर्चा नहीं की गई। यह वक्फ की संपत्ति को नष्ट कर देगा। वै ऐसा विधेयक क्यों लेकर आए, जो एक धर्म के खिलाफ है। यह एक संघीय विरोधी विधेयक है। उन्होंने कहा कि अगर किसी भी धर्म पर हमला किया गया तो वह इसकी निंदा करेगी। विपक्षी दलों ने वक्फ अधिनियम में प्रस्तावित संशोधनों की तीखी आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि इससे मुसलमानों के धार्मिक अधिकारों का उल्लंघन होगा। भाजपा ने आश्वासन देते हुए कहा कि संशोधनों से वक्फ बोर्डों के कामकाज में पारदर्शिता आएगी और वे जवाबदेह बनेंगे। बांग्लादेश मुद्दे पर बात करते हुए उन्होंने कहा, हम नहीं चाहते कि किसी भी धर्म को चोट पहुंचे। मैंने इस्कॉन से बात की। यह एक दूसरे देश का मामला है और केंद्र सरकार को इसके खिलाफ उचित कार्रवाई करनी चाहिए। हम इस मुद्दे में केंद्र सरकार के साथ हैं। वक्फ संशोधन विधेयक के लिए गठित समिति का कार्यकाल बजट सत्र 2025 के आखिरी दिन तक बढ़ाया गया। लोकसभा ने इस प्रस्ताव पर मंजूरी दे दी है। बता दें कि समिति की बुधवार को हुई बैठक में सर्वसम्मति से ये फैसला लिया गया। समिति को इस सप्ताह के अंत तक रिपोर्ट देनी थी। मामले में समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल का कहना है कि समिति के सभी सदस्य इस बात पर सहमत हैं कि जेपीसी का कार्यकाल बढ़ाया जाना चाहिए। लोकसभा में आठ अगस्त को अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरण रिजिजू ने वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 पेश किया था।

शपथ ग्रहण के बाद हेमंत सरकार का पहला फैसला

सिम्मी कौर बब्बर

रांची, 28 नवंबर। झारखंड में नई सरकार के शपथ ग्रहण के बाद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की सरकार ने कुछ अहम फैसले लिए हैं। जिसके तहत राज्य सरकारी मैया सम्मान योजना के तहत महिलाओं को मिल रही धनराशि में बढ़ोतरी की गई है, जिसके तहत अब महिलाओं को 2500 रुपए मिलेंगे, ये राशि दिसंबर महीने से लाभार्थी महिलाओं को दिए जाएंगे। वहीं सरकार के अन्य फैसलों में 9 से 12 दिसंबर तक विधानसभा सत्र का आयोजन किया जाएगा। जिसमें संभवतः सरकार की तरफ से विधानसभा में विश्वास मत हासिल किया जाएगा। मैया सम्मान के तहत मिलने वाली धनराशि में बढ़ोतरी, दिसंबर से 2500 रुपए दिए जाएंगे केंद्र सरकार के पास राज्य का बकाया 1 लाख 36 हजार करोड़ रुपए को लेने के लिए कार्रवाई की जाएगी हेमंत सरकार के अन्य फैसलों की बात करें, तो इसमें विधानसभा में प्रोटेम स्पीकर की नियुक्ति भी शामिल है। जिसके लिए महेशपुर विधानसभा सीट से निर्वाचित विधायक स्टीफन मरांडी का नाम प्रस्तावित किया गया है। इसके साथ ही सरकार ने अपने पहले ही दिन अपने रुख साफ कर दिए हैं, जिसके तहत केंद्र से झारखंड के बकाया पैसे को लेने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी, वहीं इसे लेकर राज्य सरकार की तरफ से कानूनी विकल्प भी तलाशे जाएंगे। मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद हेमंत सोरेन और उनकी पत्नी कल्पना सोरेन ने रांची के मोरहाबादी स्थित सिदो कान्हू पार्क में आदिवासी नेता सिदो और कान्हू की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके साथ ही मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि, केंद्र सरकार ने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अग्निवीर जैसी योजना शुरू की है। युवाओं के भविष्य को लेकर कई सवाल हैं। राज्य सरकार ने पहले ही तय कर लिया था कि वह झारखंड के उन अग्निवीरों के परिवारों के साथ खड़ी रहेगी, जिन्होंने किसी भी घटना में अपनी जान गंवाई है। अग्निवीर अर्जुन महतो ने हाल ही में देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है। हमने अग्निवीर अर्जुन महतो के भाई को नियुक्ति पत्र दिया है और शहीद अग्निवीर अर्जुन महतो के परिवार को 10 लाख रुपये की अनुग्रह राशि प्रदान की गई है। आज अबुआ सरकार के शपथ ग्रहण के बाद वीरगति प्राप्त अग्निवीर अर्जुन महतो जी के आश्रित, भाई बलराम महतो को सरकारी नौकरी और अनुग्रह अनुदान हेमंत सोरेन के झारखंड के 14वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद उनकी पत्नी और झामुमो नेता कल्पना सोरेन ने कहा, यह झारखंड के लोगों द्वारा दिया गया जनादेश है और हमने इसे खुशी-खुशी स्वीकार किया है। अभी भी बहुत सारी चुनौतियां हैं। झारखंड का एक भाई और बेटा होने के नाते, मुझे लगता है कि हेमंत (सोरेन) एक समृद्ध झारखंड बनाने की सभी आकांक्षाओं को पूरा करेंगे।

अजमेर दरगाह बनाम मंदिर विवाद में भाजपा-संघ पर भड़के ओवैसी

नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली, 28 नवंबर। अजमेर दरगाह को लेकर शुरू हुए विवाद पर एआईएमआईएम नेता असदुद्दीन ओवैसी ने भाजपा और संघ पर तीखा हमला बोला है। ओवैसी ने कहा कि ये सब जो हो रहा है, वह देशहित में नहीं है और यह देश को अस्थिर करने की कोशिश की जा रही है। ओवैसी ने आरोप लगाया कि इस विवाद से भाजपा और संघ के लोग सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं। दरअसल अजमेर दरगाह को शिव मंदिर बताने वाली याचिका अजमेर की स्थानीय अदालत में दायर की गई, जिस पर अब अदालत ने दरगाह समिति, सरकार के अल्पसंख्यक मंत्रालय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। इस मामले को लेकर जब एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी से प्रतिक्रिया मांगी गई तो उन्होंने कहा कि दरगाह शरीफ (अजमेर दरगाह) बीते 800 वर्षों से वहां है। 800 साल में अमीर खुसरो की किताब में बताया गया है कि बादशाह अकबर ने वहां कई चीजें बनवाईं फिर मुगलों के दौर के बाद मराठाओं का दौर आया और जब मराठा कमजोर हो गए तो अंग्रेजों का शासन आया और उस दौरान भी देश के कई राजघरानों ने दरगाह की सेवा की। देश के प्रधानमंत्री हर साल उर्स के मौके पर वहां चादर भिजवाते हैं। हमारे पड़ोसी देशों के वहां आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल आते हैं। आज अचानक से ये हरकत हो रही है, ये सब कहां जाकर रुकेगा? ओवैसी ने सवाल किया कि पूजास्थल अधिनियम 1991) का क्या होगा? संभल में आपने देखा क्या हुआ? पांच लोगों की मौत हो गई। अब अजमेर दरगाह मामले में केंद्र सरकार और पुरातत्व विभाग को पार्टी बनाया गया है। अब सरकार क्या कहेगी? ये देश को अस्थिर करने की कोशिश है, ये देशहित में नहीं है। इन लोगों का सीधे या परोक्ष रूप से संबंध भाजपा और संघ से है और इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता। कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने अजमेर दरगाह विवाद पर कहा कि ऐसी चीजों से पूरे देश में आग लग जाएगी। प्रधानमंत्री को इस मामले को देखना चाहिए और सुप्रीम कोर्ट को भी स्वत: संज्ञान लेना चाहिए। एक पूरे समुदाय को किनारे किया जा रहा है? उनके धर्म स्थानों को भी नहीं छोड़ा जा रहा है? हमें इस देश से निकालना चाहते हैं? कितनी मस्जिदों में आप मंदिरों की तलाश करेंगे? क्या इसकी कोई सीमा है या नहीं? वे पूजा स्थल अधिनियम को को भी नहीं मान रहे हैं। क्या वे अपने राजनीतिक फायदे के लिए पूरे देश में आग लगाना चाहते हैं? जब आग लगती है तो सबके घर लगती है। सपा नेता रामगोपाल यादव ने कहा कि जिस तरह के जज (निचली अदालतों में) बैठे हुए हैं, वे इस देश में आग लगाना चाहते हैं। इसका कोई मतलब नहीं है। खुद प्रधानमंत्री मोदी भी अजमेर शरीफ दरगाह पर चादर चढ़ाते हैं। पूरी दुनिया से लोग अजमेर शरीफ आते हैं। ऐसी जगह को लेकर विवाद करना बहुत ही घृणित और ओछी मानसिकता है। भाजपा को लोग सत्ता में रहने के लिए कुछ भी कर सकते हैं उन्हें फर्क नहीं पड़ता कि देश में आग लगे, उन्हें बस सत्ता चाहिए। साल 1991 में लागू किया गया यह पूजास्थल अधिनियम कहता है कि 15 अगस्त 1947 से पहले अस्तित्व में आए किसी भी धर्म के पूजा स्थल को किसी दूसरे धर्म के पूजा स्थल में नहीं बदला जा सकता। इस कानून का उल्लंघन करने पर जुर्माने और तीन साल तक की जेल का भी प्रावधान है। यह कानून तत्कालीन कांग्रेस प्रधानमंत्री पीवी नरसिंह राव सरकार 1991 में लेकर आई थी। यह कानून तब आया जब बाबरी मस्जिद और अयोध्या का मुद्दा बेहद गर्म था। हालांकि राम जन्मभूमि विवाद को इस कानून से बाहर रखा गया था। संभल शहर की जामा मस्जिद को हरिहर मंदिर होने का दावा किया गया है। इस मामले में दाखिल वाद के आधार पर एक टीम रविवार को सर्वे के लिए संभल पहुंची थी, इस दौरान बवाल हो गया और लोगों की भीड़ ने पुलिस पर पथराव कर दिया। इसके बाद हुई हिंसा में चार लोगों की मौत हो गई। तनाव को देखते हुए संभल में अभी भी इंटरनेट सेवा और स्कूल बंद हैं।

बजट सत्र तक बढ़ाया गया वक्फ संशोधन विधेयक

नई दिल्ली, 28 नवंबर। वक्फ संशोधन विधेयक के लिए गठित समिति का कार्यकाल बजट सत्र 2025 के आखिरी दिन तक बढ़ाया गया। लोकसभा ने इस प्रस्ताव पर मंजूरी दे दी है। बता दें कि समिति की बुधवार को हुई बैठक में सर्वसम्मति से ये फैसला लिया गया। समिति को इस सप्ताह के अंत तक रिपोर्ट देनी थी। मामले में समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल का कहना है कि समिति के सभी सदस्य इस बात पर सहमत हैं कि जेपीसी का कार्यकाल बढ़ाया जाना चाहिए। समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल ने कहा था कि समिति की रिपोर्ट लगभग तैयार है और इसे समय से सदन को भेजा जाएगा। हालांकि विपक्ष को इस पर आपत्ति थी। विपक्ष समिति का कार्यकाल बढ़वाना चाहता था। इस संबंध में विपक्षी नेताओं ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से भी मुलाकात की थी। बुधवार को समिति की बैठक में विपक्षी सदस्यों ने समिति का कार्यकाल बढ़ाए जाने की मांग को लेकर हंगामा किया। विपक्षी सदस्य बैठक को बीच में ही छोड़कर बाहर चले गए। तृणमूल सांसद कल्याण बनर्जी ने कहा कि समिति का ज्यादातर समय सत्ता पक्ष से जुड़े लोगों से ही चर्चा में लगाया गया और जिन राज्यों में सबसे ज्यादा वक्फ संपत्ति है, उन्हें नहीं बुलाया गया। इसके बाद संयुक्त संसदीय समिति की बुधवार को पार्लियामेंट हाउस एनेक्सी में बैठक हुई। बैठक के बाद बाहर आए सांसदों ने इस बात की पुष्टि की कि समिति का कार्यकाल बढ़ाए जाने पर सहमति बन गई है। लोकसभा में आठ अगस्त को अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरण रिजिजू ने वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 पेश किया था। इसके साथ ही इससे जुड़े निष्क्रिय हो चुके पुराने अधिनियम को कागजों से हटाने के लिए मुसलमान वक्फ (निरसन) विधेयक, 2024 को भी पेश किया गया था। नए विधेयक का नाम एकीकृत वक्फ प्रबंधन, सशक्तिकरण, दक्षता और विकास अधिनियम होगा। अंग्रेजी में यूनिफाइड वर्क मैनेजमेंट एंपावरमेंट एफिशिएंट एंड डेवलपमेंट यानी उम्मीद। इस विधेयक का विपक्ष ने पुरजोप विरोध किया था।

प्रशांत विहार में मिठाई की दुकान के पास स्कूटर में धमाका

कौमी संवाददाता

दिल्ली, 28 नवंबर। देश की राजधानी दिल्ली के रोहिणी के प्रशांत विहार इलाके में एक स्कूटर में जोरदार धमाका हुआ है। धमाके से इलाके में सनसनी फैल गई। जानकारी मिलते ही दिल्ली पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। इलाके में धमाके की तेज आवाज सुनी गई है। जानकारी के अनुसार, आज सुबह 11.48 बजे पुलिस को प्रशांत विहार इलाके से विस्फोट की सूचना मिली। सूचना मिलते ही पुलिस और दमकल गाड़ियां मौके पर पहुंच गई। शुरुआती जांच में सामने आया कि मिठाई की दुकान के पास एक स्कूटर में जोरदार धमाका हुआ है। अभी किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। मौके पर सफेद पाउडर जैसी

चीज मिलने की सूचना है। फोरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया गया है, इसके बाद ही स्पष्ट होगा। विस्फोट स्थल पर एनएसजी कमांडो और डॉग स्क्वायड पहुंच गई है। इससे पहले, रोहिणी के प्रशांत विहार इलाके में ही 20 अक्तूबर को धमाका हुआ था। सीआरपीएफ स्कूल की दीवार में यह धमाका हुआ था। सुबह में हुए धमाके के बाद ही आसपास के कई लोगों की नींद खुली। धमाका इतना जोरदार था कि करीब एक से दो किलोमीटर तक इसकी आवाज सुनी गई थी। आसपास के क्षेत्रों में 10 मिनट तक धुआं छाया रहा। कई गाड़ियों और दुकानों के शीशे टूट गए। गनीमत रही कि इसमें कोई हताहत नहीं हुआ। धमाके से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के स्कूल की दीवार में बड़ा होल हो गया था। बम धमाके में विस्फोटक का उपयोग किया गया था। घटनास्थल पर काफी मात्रा में सफेद पाउडर बिखरा मिला था।

परमाणु पनडुब्बी आईएनएस अरिघात से के-4 बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण

नई दिल्ली, 28 नवंबर। भारतीय नौसेना ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए बुधवार को के-4 बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया। गौरतलब है कि के-4 मिसाइल का यह परीक्षण नौसेना में हाल ही में शामिल हुई परमाणु पनडुब्बी आईएनएस अरिघात से किया गया। परमाणु पनडुब्बी आईएनएस अरिघात का संचालन स्ट्रेटेजिक फोर्सेस कमांड द्वारा किया जाता है। के-4 बैलिस्टिक मिसाइल की मारक क्षमता 3500 किलोमीटर है। इससे नौसेना की ताकत में जबरदस्त इजाफा होगा। आईएनएस अरिघात को एक बार में 12 के-15, चार के-4 और 30 टॉरपीडो से लैस किया जा सकता है। किसी पनडुब्बी से के-4 बैलिस्टिक मिसाइल का यह पहला सफल परीक्षण है। परीक्षण को लेकर अधिकारी सैन्य और राजनीतिक नेतृत्व को विस्तृत जानकारी देंगे।

नेहरू-गांधी परिवार की 16वीं सदस्य बनीं प्रियंका

नई दिल्ली, 28 नवंबर। प्रियंका गांधी ने सांसद के रूप में शपथ ले ली है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने उन्हें शपथ दिलाई। इसके साथ ही देश की संसद में गांधी परिवार के एक और सदस्य का प्रवेश हो गया है। प्रियंका गांधी नेहरू परिवार की 16वीं सदस्य हैं जो लोकसभा के लिए निर्वाचित हुई हैं। देश के संसदीय इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ जब लोकसभा में गांधी परिवार का कम से कम एक सदस्य न पहुंचा हो। ऐसे भी मौके आए हैं जब गांधी-नेहरू परिवार से जुड़े 5-5 सदस्य लोकसभा में एक साथ पहुंचे। मौजूदा लोकसभा में राहुल गांधी के बाद उनकी बहन प्रियंका भी संसद पहुंच गईं। राहुल और प्रियंका की मां सोनिया गांधी लंबे समय तक लोकसभा सांसद रही हैं। फिलहाल वो राजस्थान से राज्यसभा की सांसद हैं। ऐसा पहली बार होगा जब गांधी परिवार मां और उनके दो बच्चे एक साथ सांसद होंगे। प्रियंका और राहुल के एक साथ सदन में बैठते ही एक और इतिहास दोहराया गया। 71 साल पहले 1953 तक जवहार लाल नेहरू और विजयलक्ष्मी पंडित की भाई बहन की जोड़ी सदन में नजर आती थी। अब 71 साल बाद फिर से नेहरू-गांधी परिवार के भाई बहन साथ नजर आए। पहली लोकसभा से लेकर अब तक किस लोकसभा में नेहरू-गांधी परिवार के कौन से चेहरे पहुंचे? किस लोकसभा में इस परिवार का सबसे ज्यादा प्रतिनिधित्व रहा? कांग्रेस के अलावा किन दूसरे दलों से नेहरू-गांधी परिवार के लोग चुने गए? परिवार का कौन सा चेहरा था जिसने कांग्रेस उम्मीदवार को हराकर संसद की सीढ़ियां चढ़ीं? आइये इन सभी सवालों के जवाब जानते हैंज सबसे पहले बात पहली लोकसभा की कर लेते हैं।

दिल्ली में जापानी इंसेफेलाइटिस का पहला केस

सौरभ शर्मा

नई दिल्ली, 28 नवंबर। दिल्ली में जापानी इंसेफेलाइटिस का पहला मामला सामने आया है। जिसके बाद स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप मच गया है। एमसीडी के स्वास्थ्य विभाग ने सभी जिला स्वास्थ्य अधिकारियों और महामारी विज्ञानियों को लार्वा स्रोत में कमी सहित वेक्टर नियंत्रण उपायों को तेज करने और जापानी इंसेफेलाइटिस की रोकथाम और नियंत्रण के लिए जागरूकता अभियान सहित समुदाय आधारित पहल करने का निर्देश दिया है। जापानी इंसेफेलाइटिस, संक्रमित मच्छरों के काटने से फैलता है। ज्यादातर संक्रमितों में हल्के लक्षण दिखते हैं हालांकि गंभीर बीमारी वालों को बुखार, सिरदर्द और उल्टी जैसी दिक्कतें हो सकती हैं। अगर समय रहते इनपर ध्यान न दिया जाए तो इससे भ्रम, दौरे पड़ने और कोमा का खतरा भी हो सकता है। बच्चों में जापानी इंसेफेलाइटिस के कारण दौरे पड़ने जैसे लक्षण अधिक देखे जाते रहे हैं। अध्ययनों में पाया गया है कि ग्रामीण इलाकों जहां स्वच्छता की कमी होती है या मच्छरों के अधिक प्रजनन वाले क्षेत्रों में इस रोग का खतरा अधिक देखा जाता रहा है। जिन स्थानों पर पहले से जापानी इंसेफेलाइटिस के मामले अधिक हैं वहां की यात्रा करने से आपमें भी

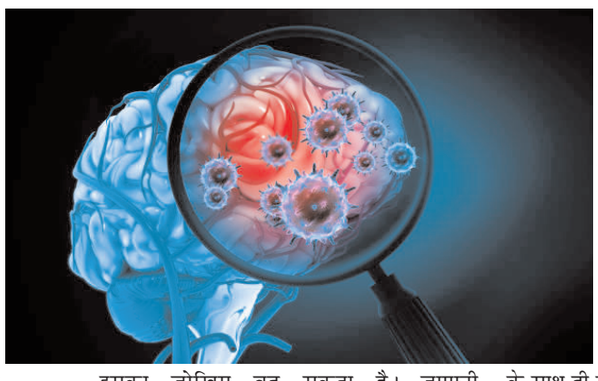

इसका जोखिम बढ़ सकता है। जापानी इंसेफेलाइटिस के मामले गर्मियों और बरसात के मौसम में काफी अधिक रिपोर्ट किए जाते रहे हैं। बच्चों में इसका खतरा अधिक होता है क्योंकि जिन क्षेत्रों में यह वायरस स्थानिक (एंडेमिक) है, वहां वयस्क आमतौर पर उम्र बढ़ने के साथ इससे प्रतिरक्षित हो जाते हैं। जापानी इंसेफेलाइटिस मस्तिष्क को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है। मस्तिष्क संबंधी लक्षणों के कारण कुछ लोगों में आजीवन जटिलताएं जैसे बहरापन, अनियंत्रित भावनाओं की समस्या या शरीर के एक तरफ कमजोरी जैसी दिक्कतें बनी रह सकती हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, घरों के आसपास स्वच्छता का ध्यान रखकर, पानी का जमाव न होने देने वाले उपाय करके, मच्छरों से बचाव करके इस खतरनाक रोग से सुरक्षित रहा जा सकता है। भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार, अप्रैल, 2013 से जापानी इंसेफेलाइटिस के स्थानिक जिलों के लिए वैक्सीन उपलब्ध कराई गई है। दो खुराक वाली वैक्सीन, पहली 9 महीने की उम्र में खसरे के साथ तथा दूसरी 16-24 महीने की उम्र में डीपीटी बूस्टर के साथ दी जाती है। बच्चों को ये टीके लगवाकर उन्हें जापानी इंसेफेलाइटिस और इसके कारण होने वाली गंभीर स्वास्थ्य जटिलताओं से बचाया जा सकता है। जापानी इंसेफेलाइटिस के लिए रोकथाम ही सर्वोत्तम उपचार है। स्वच्छता के उपाय और मच्छरों के काटने से बचाव करके इस घातक बीमारी से बचा जा सकता है।

सीबीआई की यासीन मलिक के खिलाफ दिल्ली की तिहाड़ जेल में ही मुकदमा चलाने की मांग

तेजिन्दर कौर बब्बर

नई दिल्ली, 28 नवंबर। जम्मू-कश्मीर के अलगाववादी यासीन मलिक के खिलाफ जम्मू में चल रहे ट्रायल को दिल्ली ट्रांसफर करने की मांग वाली सीबीआई की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने सभी पक्षों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। अब इस मामले में अगली सुनवाई 18 दिसंबर को होगी। जस्टिस अभय एस ओका की अध्यक्षता वाली पीठ मामले में सुनवाई कर रही है। सीबीआई सुरक्षा कारणों से यासीन को जम्मू में पेश करने का विरोध कर रही है। यह पेशी रुबिया अपहरण केस और वायु सेना अधिकारी हत्या केस में होनी है। फिलहाल यासीन तिहा? जेल में उम्रकैद की सजा काट रहा है। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति ऑगस्टिन जॉर्ज मसीह की पीठ ने मलिक और अन्य आरोपियों को 18 दिसंबर तक जवाब दाखिल करने को कहा है। मामले की सुनवाई के दौरान सीबीआई की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कोर्ट को बताया कि तिहा? जेल में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मामले की सुनवाई करने की सुविधा पहले से उपलब्ध है। उसे अदालत ले जाने की जरूरत नहीं है। एसजी ने बताया कि तिहा? जेल में कोर्ट लगता है, इससे पहले भी कई मामले की सुनवाई होती रही है। एसजी मेहता ने कहा, हमने कॉज टाइटल में संशोधन के लिए आवेदन दायर

किया है। हमने इस तथ्य को भी रखा है कि जेल में पहले से ही एक अदालत मौजूद है, जिसमें आवश्यकता पड़ने पर वीडियो कांफ्रेंसिंग की सभी सुविधाएं भी हैं। पहले भी कार्यवाही जेल में उस अदालत कक्ष में हो चुकी हैं। शीर्ष अदालत जम्मू ट्रायल कोर्ट के 20 सितंबर, 2022 के आदेश के खिलाफ सीबीआई की याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें तिहाड़ जेल में उम्रकैद की सजा काट रहे मलिक को निर्देश दिया गया था कि उन्हें राजनेता मुफ्ती मोहम्मद सईद की बेटी रूबिया सईद के अपहरण के मामले में अभियोजन पक्ष के गवाहों से जिरह करने के लिए शारीरिक रूप से पेश किया जाए। सुप्रीम कोर्ट में यह मामला 2022 से लंबित है। तब सीबीआई ने जम्मू की विशेष टाडा कोर्ट के उन आदेशों को चुनौती दी थी जिनमें दो अलग-अलग मामलों में यासीन मलिक को व्यक्तिगत रूप से पेश करने के लिए कहा गया था। जम्मू की कोर्ट ने सितंबर 2022 में यह प्रोडक्शन वारंट रुबिया सईद अपहरण केस और वायु सेना के चार अधिकारियों की हत्या केस में जारी किए थे। सीबीआई ने अपनी याचिका में कहा था कि दिल्ली की तिहा? जेल में बंद मलिक को सुरक्षा कारणों से जम्मू नहीं ले जाया जा सकता। सुप्रीम कोर्ट ने 2022 में ही जम्मू कोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी थी। पिछली सुनवाई में सीबीआई की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा था कि जम्मू स्पेशल कोर्ट का कहना है कि यह अनुकूल नहीं है कि उसे व्यक्तिगत रूप से पेश करें। हम यासीन मलिक को जम्मू-कश्मीर नही ले जाना चाहते हैं।

चिराग पासवान ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को लेकर की भविष्यवाणी

पटना, 28 नवंबर। राजनीति के मौसम वैज्ञानिक कहे जाने वाले अपने दिवंगत पिता राम विलास पासवान को याद करते हुए अपनी पार्टी लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) का दफ्तर दोबारा हासिल करने के बाद आह्लादित केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर भविष्यवाणी जगजाहिर की है। उन्होंने अपने कार्यालय में प्रवेश के दूसरे दिन मीडिया को भी बुलाया और अपनी बात भी रखी। उन्होंने कहा कि मैं अगले साल जब इस कार्यालय में पार्टी की सालगिरह पर कार्यक्रम करूंगा तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही रहेंगे। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के अंदर इसपर कोई और विचार नहीं आ रहा है। नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री बनाने के लिए एनडीए के सभी घटक दल एकजुट हैं। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के 25वें स्थापना दिवस पर पार्टी के नए रूप में सजे-संवरे दफ्तर में कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान अपने परिवार के साथ यहां पहुंचे। यहां पर कार्यकर्ताओं और वरीय नेताओं ने उनका स्वागत किया। चिराग पासवान और उनके परिवार ने पूर्व केंद्रीय मंत्री और लोजपा के संस्थापक रामविलास पासवान के तैल चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

मंगोलिया में एचआईवी संक्रामितों की संख्या बढ़कर हुई 388

एजेंसी

उलानबटोर। मंगोलिया में ह्यूमन इम्यूनो डेफिशियेंसी वायरस (एचआईवी) पॉजिटिव व्यक्तियों और एड्स रोगियों की कुल संख्या 388 तक पहुंच गयी है। नेशनल सेंटर फॉर कम्युनिकेबल डिजीज (एनसीसीडी) द्वारा गुरुवार को जारी एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी। एनसीसीडी का अनुमान है कि देश में एचआईवी से पीड़ित लोगों की वास्तविक संख्या 667 तक हो सकती है। यह डेटा 01 दिसंबर को प्रतिवर्ष मनाए जाने वाले विश्व एड्स दिवस के उपलक्ष्य में जारी एक बयान में साझा किया गया है। मंगोलिया को सामान्य आबादी के बीच एचआईवी के कम प्रसार वाले देश के रूप में वर्गीकृत किया गया है। हालांकि, एनसीसीडी ने कहा कि संक्रमण उच्च जोखिम वाले समूहों के भीतर केंद्रित है, जो लक्षित रोकथाम और हस्तक्षेप प्रयासों की आवश्यकता पर बल देता है। उल्लेखनीय है कि मंगोलिया में आज तक एचआईवी या एड्स से पीड़ित 66 व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी है। सभी संक्रमणों में से लगभग 99 प्रतिशत मामलों में यौन संचरण होता है, पुष्टि किए गए मामलों में लगभग 85 प्रतिशत पुरुष शामिल हैं।

सऊदी अरब में रियाद मेट्रो का पहले चरण लॉन्च

रियाद। सऊदी अरब की राजधानी रियाद में मेट्रो ट्रेन का पहला चरण लॉन्च किया गया है। राजधानी में मेट्रो की शुरुआत सार्वजनिक परिवहन परिदृश्य को नया आकार देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। सऊदी प्रेस एजेंसी (एसपीए) के अनुसार, सऊदी सुल्ताल सलमान बिन अब्दुलअज़ीज़ अल सऊद ने इस परियोजना का उद्घाटन किया, जिसके रियाद के सार्वजनिक परिवहन नेटवर्क की रीढ़ बनने की उम्मीद है। रियाद मेट्रो में 176 किलोमीटर तक फैली छह ट्रेन लाइनें और चार मुख्य केंद्रों सहित 85 स्टेशन शामिल हैं। एसपीए ने बताया कि तीन लाइनें एक दिसंबर को जनता के लिए खुलेंगी, क्रमिक लॉन्च के साथ शहर भर में नेटवर्क पूरा हो जाएगा। उद्घाटन के दौरान सुल्तान ने कहा कि रियाद सार्वजनिक परिवहन परियोजना राजधानी की वर्तमान और भविष्य की सार्वजनिक परिवहन आवश्यकताओं पर रियाद शहर के लिए रॉयल कमीशन द्वारा किए गए अध्ययनों के बाद शुरू की गई है। मक्का में पहली मेट्रो लाइन के बाद रियाद मेट्रो सऊदी अरब की दूसरी मेट्रो प्रणाली है, जो केवल हज सीज़न के दौरान संचालित होती है। एक बार पूरी तरह से चालू होने के बाद रियाद मेट्रो एक चरण में पूरी होने वाली दुनिया की सबसे बड़ी और दुनिया की सबसे लंबी चालक रहित मेट्रो लाइन होने की उम्मीद है।

उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान में सांप्रदायिक झड़पों में मारे गये सौ से अधिक लोग

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के कुर्रम जिले में सांप्रदायिक झड़पों में मरने वालों की संख्या बढ़कर सौ से अधिक हो गई है। अस्पताल प्रशासन ने गुरुवार को मीडिया को यह जानकारी दी। हिंसा पिछले उस समय भड़की जब पाराचिनार इलाके में शिया मुसलमानों को ले जा रहे यात्री डिब्बों के एक काफिले पर घात लगाकर हमला किया गया, जिससे जानमाल का भारी नुकसान हुआ। इस हमले से शिया और सुन्नी समुदायों के बीच सांप्रदायिक हिंसा की ताजा लहर फैल गई। जिसके बाद अगले दिनों में कई जवाबी हमले हुए, जिससे सोमवार तक मरने वालों की संख्या बढ़कर 88 हो गई। कोचों पर हमले के बाद प्रांतीय सरकार के एक प्रतिनिधिमंडल ने जिले का दौरा किया और दोनों संप्रदायों के बीच युद्धविराम पर सहमति बनी। हालांकि युद्धविराम के दौरान छिटपुट झड़पें जारी रहीं, जिससे मरने वालों की संख्या 100 से अधिक हो गई। जिले के डिप्टी कमिश्नर जावेदुल्ला महसूद ने मीडिया को बताया कि सरकारी प्रतिनिधिमंडल युद्धविराम सुनिश्चित करने में विफल रहने के बाद पड़ोसी जिलों के आदिवासी बुजुर्ग गुरुवार को जिरगा या आदिवासी अदालत आयोजित करने के लिए कुर्रम का दौरा करेंगे।

इजरायल ने हिजबुल्लाह के 12 हजार 500 ठिकानों पर हमले किए

जेरूसलम। इजराइल रक्षा बलों (आईडीएफ) ने पिछले अक्टूबर में संघर्ष की शुरुआत के बाद से लेबनान भर में हिजबुल्लाह 12हजार 500 ठिकानों पर हवाई हमले किए हैं। आईडीएफ के प्रवक्ता डैनियल हगारी ने एक बयान में यह जानकारी दी।

हगारी ने कहा, हमने हिजबुल्लाह की प्रक्षेपण क्षमताओं को कम कर दिया, उसकी रणनीतिक संपत्तियों पर हमला किया, उसके नेतृत्व को खत्म कर दिया और उसकी कमान और नियंत्रण श्रृंखला को नुकसान पहुंचाया। उन्होंने कहा कि सेना ने हिजबुल्लाह की हवाई इकाई के पास मौजूद लगभग 70 प्रतिशत मानवरहित हवाई वाहन भंडार को नष्ट कर दिया। उन्होंने आगे कहा, हमने उसकी हथियारबंद करने और फिर से आपूर्ति करने की क्षमता को भी निशाना बनाया है और हमारे क्षेत्र में उसकी योजनाबद्ध घुसपैठ को अंजाम देने की क्षमता को गंभीर रूप से बाधित किया है। हगारी ने कहा कि युद्धविराम समझौते के प्रभावी होने से पहले के घंटों में, आईडीएफ ने लेबनान भर में लगभग 180 ठिकानों पर हमला किया, जिसमें सीरियाई सीमा के पास एक केंद्रीय हिजबुल्लाह मिसाइल उत्पादन स्थल भी शामिल है।

युद्ध विराम के दौरान दक्षिणी लेबनान में इजराइली सेना और हिजबुल्लाह के आतंकी भिड़े

एजेंसी

बेरूत। लेबनान में दो माह के युद्ध विराम को प्रभावी हुए 24 घंटे से ज्यादा का वक्त गुजर चुका है। अधिकतर क्षेत्रों से इजराइली सुरक्षा बल (आईडीएफ) और हिजबुल्लाह के आतंकवादी पीछे हट चुके हैं। मगर लड़ाई रुकने के कुछ घंटों बाद दक्षिणी लेबनान के कुछ इलाकों में आईडीएफ के जवानों और हिजबुल्लाह के लड़ाकों के बीच झड़प हो गई। इसमें हिजबुल्लाह को काफी क्षति हुई। द यरूशलम पोस्ट के अनुसार युद्ध विराम लागू होने के बाद ज्यादातर हिस्सों से आईडीएफ के जवान और हिजबुल्लाह के लड़ाके पीछे हट चुके हैं। लेबनान की सेना दक्षिणी लेबनान में उल्लेखनीय रूप से आगे बढ़ रही है। आईडीएफ और हिजबुल्लाह के बीच दक्षिणी लेबनान के कई इलाकों में जमीनी भिड़ंत जरूर हुई लेकिन सुबह चार बजे शुरू हुआ संघर्ष विराम का प्रभाव दिखने लगा है। आईडीएफ ने कहा कि हिजबुल्लाह ने कई जगह संघर्ष विराम के उल्लंघन की कोशिश

की। उसके लड़ाके दक्षिणी लेबनान के कुछ क्षेत्रों में प्रवेश की कोशिश करने लगे। चेतावनी के बावजूद जब वह नहीं रुके तो गोलीबारी करनी पड़ी। इस दौरान कई लड़ाके मारे गए। कुछ घबराकर पीछे लौट गए। चार लड़ाकों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। आईडीएफ ने कहा कि अगर युद्ध विराम के दौरान हिजबुल्लाह ने उल्लंघन की हरकत की तो लेबनान में और शक्तिशाली हमले किए जाएंगे। हालांकि आईडीएफ के आला अधिकारी ने उम्मीद जताई कि हिजबुल्लाह युद्ध विराम की शर्तों का सम्मान करेगा। इस अधिकारी ने दोहराया कि अगर युद्ध विराम समझौते का उल्लंघन हुआ तो इजराइल पूरे लेबनान में कार्रवाई करने के लिए तैयार रहेगा।आईडीएफ ने कहा कि युद्ध विराम लागू होने के कुछ ही घंटों बाद उसके सैनिकों ने निषिद्ध क्षेत्र में पाए गए संदिग्धों पर गोली चला दी। इससे पहले बेरूत में इजराइली वायुसेना के हमले में हिजबुल्लाह के ऑपरेशन अधिकारी जफर अली समाहा की मौत हो गई। इस हमले में हिजबुल्लाह की हवाई इकाई में कमांड की अधिकांश श्रृंखला का सफाया हो गया। लेबनानी संसद के सदस्य और हिजबुल्लाह के सक्रिय कार्यकर्ता हसन फदलल्लाह ने कहा कि अब अगर इजराइल हमला करता है तो आतंकवादी समूह को अपना बचाव करने का अधिकार है। उन्होंने कहा कि युद्ध विराम समझौते में 60 दिनों की अवधि शामिल है। इस दौरान इजराइली सेना दक्षिणी लेबनान से हटेगी। वहां लेबनान की सेना तैनात होगी और हिजबुल्लाह लितानी नदी के उत्तर में आगे बढ़ेगा।

श्रीलंका में मौसम खराब, प्रभावित क्षेत्रों के सरकारी कर्मचारियों की छुट्टियां निरस्त

एजेंसी

कोलंबो। श्रीलंका में खराब मौसम को देखते हुए आज प्रभावित इलाके के सभी सरकारी कर्मचारियों की छुट्टियां निरस्त कर दी गई हैं। सरकार ने समुद्र के निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को बाढ़ के दौरान सतर्क रहने का आग्रह किया है। डेली मिरर समाचार पत्र के अनुसार, कृषि, पशुधन, भूमि और सिंचाई मंत्रालय के सचिव डीपी विक्रमसिंघे ने कहा कि पराक्रम समुद्र के निचले इलाकों में बाढ़ आने की आशंका है। उन्होंने सिंचाई विभाग और महावेली प्राधिकरण के अधिकारियों को अपने संबंधित स्टेशनों पर रहने के साथ अक्करापट्टुवा और नीलवाला गंगा क्षेत्रों के प्रभावित लोगों के लिए तत्काल आवश्यक इंतजाम करने के निर्देश दिए हैं। विक्रमसिंघे ने छुट्टियों पर गए कर्मचारियों को तत्काल प्रभाव से मुख्यालय पहुंचने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि सभी कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। इस बीच बट्टिकलोआ के करैतिवु में कल बाढ़ में बहे ट्रैक्टर सवार 14 किशोरों में से आठ का अभी तक कोई पता नहीं चल पाया है। गोताखोर उनकी तलाश में जुटे हुए हैं। एक 15 वर्षीय लड़के का शव

बरामद कर लिया गया है। पुलिस ने बताया कि यह बच्चे निंटावुर मदरसा स्कूल से पढ़कर घर लौट रहे थे।पुलिस ने कहा कि देशभर में भारी बारिश के कारण ओमानथाई में जाफना की ए-9 मुख्य सड़क जलमग्न हो गई है। आपदा प्रबंधन केंद्र ने कहा कि देशभर में भारी बारिश के कारण 22,532 परिवारों के 77,670 लोग प्रभावित हुए हैं। इनमें से एक की मौत हो चुकी है।

पाकिस्तान में बुशरा, गंडापुर के खिलाफ सात मामले दर्ज

एजेंसी

तक्षशिला/बहावलपुर। पाकिस्तान में हाल ही में हुए हिंसक प्रदर्शनों के बाद अट्टेक में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान की पत्नी बुशरा बीबी, खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गंडापुर और अन्य पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के नेताओं के खिलाफ सात नए मामले दर्ज किए गए हैं। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार बुशरा बीबी, नेशनल असेंबली में विपक्ष के नेता उमर अयूब और पूर्व राष्ट्रपति आरिफ अल्वी के खिलाफ हसनअब्दाल, हजरो और इंजरा पुलिस थानों में प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) दर्ज की गयी थी। एफआईआर में कहा गया है कि प्रदर्शनकारी संदिग्धों ने 119 पुलिस अधिकारियों पर हमला कर उन्हें घायल किया था, जिनमें से तीन की हालत गंभीर है। इस्लामाबाद-पेशावर मोटरवे और हकला-डी आई खान मोटरवे पर पुलिसकर्मियों से आंसू गैस, दंगा-रोधी किट और मोबाइल फोन छीन लिए थे। सूत्रों ने कहा कि गुरुवार को विरोध प्रदर्शन के दौरान इंजरा पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए 30 प्रदर्शनकारियों और हसन अब्दाल पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए पांच प्रदर्शनकारियों को रिमांड पर लेने के लिए अदालतों में पेश किया गया। इस बीच वेहारी जिले के घराहा मोर पुलिस थाने ने बुशरा बीबी के खिलाफ उनके हालिया वीडियो संदेश के लिए मामला दर्ज किया है, जो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ और इमरान खान की सऊदी अरब यात्रा से संबंधित था।

मेक्सिको के कदम से खुश डोनाल्ड ट्रंप ने कहा-अवैध प्रवेश पर लगेगी रोक

एजेंसी

वाशिंगटन/मेक्सिको सिटी। संयुक्त राज्य अमेरिका के निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आज प्रवासियों के अवैध प्रवेश को लेकर मेक्सिको के कदम पर खुशी जताई है। ट्रंप ने सोशल मीडिया मंच ट्रुथ पर लिखा, 'मेक्सिको की नई राष्ट्रपति क्लाउडिया शीनबाम पार्डो के साथ काफी सकारात्मक बातचीत हुई। वह मेक्सिको के जरिये संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवासन रोकने, हमारी दक्षिणी सीमा को प्रभावी ढंग से बंद करने पर सहमत हो गई हैं।' उन्होंने कहा, 'हमने इस बारे में भी बात की कि संयुक्त राज्य अमेरिका में बड़े पैमाने पर नशीली दवाओं के प्रवाह को रोकने के लिए क्या किया जा सकता है। बातचीत बहुत सार्थक रही। मेक्सिको तुरंत प्रभाव से लोगों को हमारी दक्षिणी सीमा पर जाने से

रोकेगा। यह कदम संयुक्त राज्य अमेरिका में अवैध घुसपैठ को रोकने की दिशा में लंबा रास्ता तय करेगा।1 ट्रंप ने इसके लिए मेक्सिको की राष्ट्रपति पार्डो का आभार जताया है। मेक्सिको की राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबाम पार्डो ने भी ट्रंप से हुई बातचीत का ब्यौरा एक्स हैंडल पर साझा किया है। उन्होंने लिखा, 'राष्ट्रपति ट्रंप के साथ बातचीत में मैंने उन्हें उस व्यापक रणनीति के बारे में बताया जो मेक्सिको ने मानवाधिकारों का सम्मान करते हुए प्रवासन घटना से निपटने के लिए अपनाई है। सीमा पर पहुंचने से पहले प्रवासियों और उनके जत्थे की जांच की जाती है। पार्डो ने कहा कि हम मेक्सिको की सीमाओं को बंद नहीं करने जा रहे। हम सरकारों और लोगों के बीच सेतु बनने के लिए प्रतिबद्ध हैं। डोनाल्ड ट्रंप के साथ अच्छी बातचीत हुई। हमने अपनी संप्रभुता के ढांचे के भीतर सुरक्षा मुद्दों पर सहयोग को मजबूत करने और नशीली दवाओं की खपत को रोकने के लिए देश में चलाए जा रहे अभियान के बारे में भी चर्चा की।

पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के तेवर कड़े, गंडापुर ने कहा-हुकूमत के विरोध में धरना जारी रहेगा

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के तेवर अब और गरम हो गए हैं। संघीय राजधानी के डी-चौक पर 'करो या मरो1 विरोध प्रदर्शन के खत्म होने के बाद पार्टी के बड़े नेता और खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गंडापुर के संवाददाता सम्मेलन ने हुकूमत की चिंता बढ़ा दी है। एआरवाई न्यूज चैनल की खबर के मुताबिक, डी-चौक पर विरोध प्रदर्शन के लिए पहुंचे पीटीआई के काफिले का नेतृत्व कर कल शाम लौटे गंडापुर ने अपने प्रांत की खूबसूरत घाटी मानसेहरा में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में शहबाज हुकूमत पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि हुकूमत इस मुगालते में मत रहे कि आंदोलन खत्म हो गया है। इस्लामाबाद में हुकूमत ने निहत्थे पीटीआई कार्यकर्ताओं पर जुल्म की इंतहा की है। उन्हें गोलियों से भूना है। इससे कोई डरने वाला नहीं है। पीटीआई का देशव्यापी धरना बंद

नहीं होगा। वह जारी रहेगा। अली अमीन गंडापुर ने कहा कि पीटीआई ने हमेशा कानून और लोकतंत्र की सर्वोच्चता को कायम रखते हुए शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन किया है। उन्होंने कहा पीटीआई प्रमुख इमरान खान को जेल में डाल दिया गया है। आठ फरवरी के चुनाव में पीटीआई का जनादेश चुरा (छीन) लिया गया। इसके खिलाफ जुबान खोलने की बड़ी कीमत अदा करनी पड़ रही है। अन्याय का शांतिपूर्ण विरोध करने पर गोलियों से भुनवाया जा रहा है। पीटीआई नेता और मुख्यमंत्री गंडापुर ने साफ किया कि जब तक पार्टी की मांगें पूरी नहीं की जातीं तब तक धरना जारी रहेगा। उन्होंने घोषणा की कि पीटीआई के विरोध प्रदर्शन के दौरान मारे गए (शहीद) प्रत्येक कार्यकर्ता के परिवार को 10 मिलियन रुपये प्रदान किए जाएंगे। उन्होंने सरकार को आगाह किया कि वह निहत्थे प्रदर्शनकारियों के खिलाफ हिंसा करने से बाज आए। जियो न्यूज चैनल के अनुसार, डी-चौक पर शांति के बाद प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने राजधानी में संघीय कैबिनेट बैठक को संबोधित किया। उन्होंने पीटीआई का नाम लिए बगैर उसपर निशाना साधा। शहबाज ने मुल्क को आंदोलन की राजनीति से छुटकारा दिलाने और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए कड़े फैसले लेने की आवश्यकता पर जोर दिया है। उन्होंने कहा कि हमें यह तय करना होगा कि हम पाकिस्तान को बचाएंगे या धरने की अनुमति देंगे।

बीआरआई कार्यान्वयन समझौते के ड्राफ्ट पर नेपाल के सत्तारूढ़ दलों में अभी सहमति नहीं

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल के सत्तारूढ़ गठबंधन के घटक दलों के बीच चीन के महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) प्रोजेक्ट के कार्यान्वयन समझौते को लेकर अभी सहमति नहीं बन सकी है, लेकिन दोनों प्रमुख घटक दल नेपाली कांग्रेस और सीपीएन (यूएमएल) चीनी ड्राफ्ट में संशोधन के लिए तैयार हैं। नेपाली कांग्रेस के महामंत्री गगन थापा ने मीडियाकर्मियों से कहा कि कुछ दिन पहले चीन की ओर से भेजे गए 10 पृष्ठ के कार्यान्वयन समझौते के ड्राफ्ट में दोहरे अर्थ वाले वाक्य शामिल हैं। इसमें सुरक्षा और रणनीतिक साझेदारी का मुद्दा भी जोड़ा गया है जिसमें कांग्रेस ने संशोधन करने का प्रस्ताव दिया है। नेपाली कांग्रेस ने संशोधन के बिंदु प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को लिखित रूप में भेज दिए हैं। महामंत्री थापा के मुताबिक प्रधानमंत्री ओली चीन के प्रतिनिधियों से मिलकर कांग्रेस के हितों और चिंताओं पर चर्चा कर रहे हैं। अगर चीन हमारी पार्टी द्वारा उठाई गई चिंताओं को

स्वीकार करता है तो इस पर हस्ताक्षर करने में कोई आपत्ति नहीं होगी। दोनों देशों के बीच वर्ष 2017 में बीआरआई प्रोजेक्ट पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद से कोई प्रगति नहीं हुई है। चीन चाहता है कि कार्यान्वयन योजना पर हस्ताक्षर किए जाएं। प्रधानमंत्री ओली भी कार्यान्वयन योजना पर सहमति के पक्ष में हैं ताकि चीन के साथ संबंध खराब न हों।

नेपाली कांग्रेस के प्रवक्ता प्रकाश शरण महत, जो बीआरआई प्रोजेक्ट पर हस्ताक्षर के समय वित्त मंत्री थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को समझौते में उल्लिखित कनेक्टिविटी, निवेश और तकनीकी मुद्दों पर सहयोग के आधार पर सब्सिडी लेने में कोई आपत्ति नहीं है। समझौते के आधार पर बीआरआई के ढांचे के भीतर यदि इसमें सब्सिडी दी जाती है तो कांग्रेस कार्यान्वयन समझौते पर हस्ताक्षर करने पर आपत्ति नहीं करेगी।

लेबनान में युद्ध विराम शुरू, विस्थापित लौटने को तैयार

एजेंसी

बेरूत। लंबी जद्दोजहद के बाद इजराइल और आतंकवादी समूह हिजबुल्लाह के युद्ध विराम पर सहमत होते ही लेबनान में लड़ाई थम गई। युद्ध विराम आधिकारिक तौर पर बुधवार तड़के चार बजे से प्रभावी हो गया। इसी के साथ लड़ाई के दौरान लेबनान से विस्थापित हजारों लोग स्वदेश लौटने के लिए तैयार हो गए हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्रांस के संयुक्त बयान में युद्ध विराम लागू होने की पुष्टि की गई है। द न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार, इजराइल और लेबनान के आतंकी समूह हिजबुल्लाह के बीच दशकों के इतिहास में अब तक के सबसे घातक युद्ध को समाप्त करने के लिए किया गया संघर्ष विराम आधिकारिक तौर पर बुधवार तड़के चार बजे प्रभावी हो गया। इसकी घोषणा होते ही दक्षिणी बेरूत के दहिया में पुनर्निर्माण का काम शुरू हो गया। हिजबुल्लाह का मुख्यालय दहिया में ही है। कभी घनी आबादी वाले दहिया में इस समय इक्का-दुक्का लोग ही रह रहे हैं। यहां से अक्टूबर में 52 वर्षीय मोहम्मद

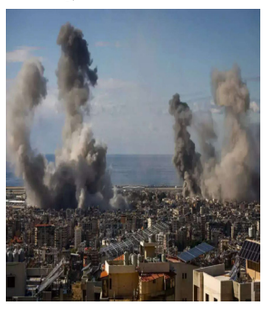

अवादा अपने दो बच्चों के साथ उत्तरी लेबनान के शहर त्रिपोली भाग गए थे। हमले में उनका अपार्टमेंट नष्ट हो गया था। युद्ध विराम की भनक मिलते ही उन्होंने कहा कि वह दहिया लौटेंगे और वहां नए सिरे जीवन शुरू करेंगे। इस बीच लेबनान की सेना ने विस्थापित नागरिकों से दक्षिणी लेबनान के कस्बों और गांवों में लौटने से पहले इजराइली सैनिकों के हटने का इंतजार करने का आह्वान किया है। साथ ही गैर-विस्फोटित आयुध के खतरों के बारे में भी चेताया है। लेबनान के अधिकारियों ने कहा कि संघर्ष विराम लागू होने के कुछ घंटों बाद विस्थापित परिवार दक्षिणी और पूर्वी लेबनान लौटने लगे। लेबनान में इस समय संयुक्त राष्ट्र अंतरिम शांति सेना के 10 हजार जवान मौजूद हैं। इराइली सेना के प्रवक्ता अविचाई अद्राई ने कहा कि संघर्ष विराम की शर्तों के अनुसार देश के सैनिक दक्षिणी लेबनान मौजूद हैं। एड्राई ने लेबनाने के विस्थापितों को चेतावनी दी कि वे तुरंत वापस नहीं जाएं। सुरक्षित आवाजाही के संकेत मिलते ही सूचित किया जाएगा। इस युद्ध विराम से इजराइल में स्थिति अपेक्षाकृत शांत दिखाई दी। आधीरात के बाद से देश में कोई नया हवाई हमला सायरन नहीं बजा है। ताजा युद्ध विराम का उद्देश्य इजराइल और हिजबुल्लाह के बीच एक साल से अधिक समय से चल रही लड़ाई को समाप्त करना है। लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इजराइली सेना की बमबारी और जमीनी कार्रवाई में लगभग 3,800 लोग मारे गए हैं। दस लाख से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं। लेबनान के समाचार पत्र द नेशनल के अनुसार, इजराइल और हिजबुल्लाह के बीच सालभर से अधिक समय तक चली लड़ाई के बाद लेबनान में युद्ध विराम लागू हो गया है। युद्ध विराम की घोषणा अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने वाशिंगटन में की। संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्रांस ने संयुक्त बयान में युद्ध विराम की शर्तों और अपेक्षाओं को रेखांकित किया है। इस युद्ध विराम पर संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्रांस नजर रखेंगे।

जयशंकर ने हिंद-प्रशांत के भागीदारों से कहा- यह सामूहिक प्रयासों का युग

एजेंसी

फिउग्गी (इटली)। भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने इटली के मध्ययुगीन शहर फिउग्गी में हिंद-प्रशांत के भागीदारों के साथ जी-7 विदेश मंत्रियों के सत्र में अहम बात कही। उन्होंने कहा कि यह सामूहिक प्रयासों का युग है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र को व्यावहारिक समाधान के साथ चतुर कूटनीति की जरूरत होगी। इसके अलावा अधिक समायोजन और अधिक खुली वार्ता की आवश्यकता होगी। जी-7 इसमें भागीदार हो सकता है।जयशंकर ने फिउग्गी के इस आयोजन के कुछ चित्र और संबोधन का विवरण एक्स हैंडल पर साझा किया है। उन्होंने खासतौर पर छह बातों का जिक्र किया है। उन्होंने क्वाड के उभार को उल्लेखनीय घटनाक्रम करार देते हुए कहा है कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र नए संबंधों और साझेदारी समेत महत्वपूर्ण परिवर्तनों से गुजर रहा है। जयशंकर ने एक्स

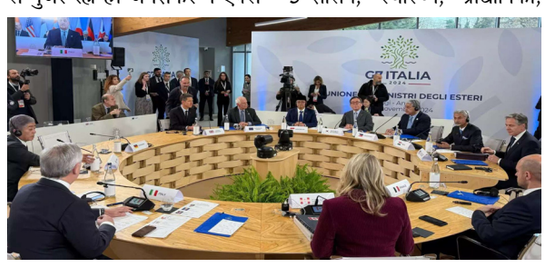

पर कहा कि फिउग्गी में इंडो-पैसिफिक भागीदारों के साथ जी-7 विदेश मंत्रियों के सत्र में हिस्सा लेकर खुशी हुई। जयशंकर ने कहा कि सत्र में उन्होंने छह मुद्दों पर चर्चा की-1-समुद्री, अर्धचालक, आपूर्ति श्रृंखला आदि जैसे क्षेत्रों में अधिक सहयोग।2-अधिक संसाधन, बड़ी गतिविधियों और परियोजनाओं का समर्थन। अस्थिर ऋण से कैसे बचें। 3-शासन, स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी, आपदा लचीलापन और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन।4-दुनिया के आम लोगों की सेवा। वैश्विक भलाई में योगदान। अंतर-संचालन। 5-अंतरराष्ट्रीय कानून के साथ-साथ लाभ की पारस्परिकता का सम्मान।6- इंडो-पैसिफिक नीति निर्माता सही विकल्प कैसे चुने।

गाजा पट्टी पर इजरायली हमलों में 17 फिलिस्तीनियों की मौत

गाजा। गाजा सिटी में विस्थापित लोगों को शरण देने वाले एक स्कूल और एक आवासीय घर पर हुए इजरायली हमलों में कम से कम 17 फिलिस्तीनी मारे गए। नागरिक सुरक्षा के प्रवक्ता महमूद बसल ने सिन्हुआ सो कहा, इजरायली सेना ने गाजा शहर में विस्थापित लोगों को आश्रय देने वाले अल-ताबीन स्कूल पर हमला करके 10 फिलिस्तीनियों को मार डाला।बसल ने कहा, सभी हताहतों को अस्पताल ले जाया गया। स्कूल के एक स्थानीय निवासी मोहम्मद अहमद ने सिन्हुआ से कहा हम हैरान थे

रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स ने की दो बंगलादेशी अखबारों पर हमले की निंदा

एजेंसी

ढाका। विश्व भर में सूचना की स्वतंत्रता के अधिकार के लिए आवाज उठाने वाले अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (आरएसएफ) ने बंगलादेश के दो प्रमुख समाचार पत्रों द डेली स्टार और प्रोथोम अलो के कार्यालयों पर हुए हमलों की कड़ी निंदा की है।डेली स्टार ने बताया कि पेरिस मुख्यालय वाली संस्था ने एक बयान में बंगलादेश के अधिकारियों से धमकी देने की हरकतें बंद करने और देश में सुरक्षित तथा अधिक विविधतापूर्ण मीडिया वातावरण की दिशा में काम करने का आह्वान किया। रिपोर्ट के अनुसार, आरएसएफ ने समाचार पत्रों को निशाना बनाकर कई हिंसक घटनाओं की सूचना दी, जिसमें उनके ढाका मुख्यालय और क्षेत्रीय कार्यालयों पर समन्वित हमले शामिल हैं। राजशाही में लगभग 200 प्रदर्शनकारियों ने प्रोथोम एलो के कार्यालय में तोड़फोड़ करने का प्रयास किया, जिससे संपत्ति को काफी नुकसान पहुंचा। रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स ने कहा कि ये हमले 'कट्टरपंथी भारत विरोधी धार्मिक समूहों' की ओर से किए गए हैं। उन्होंने समाचार पत्रों पर 'भारत के एजेंट होने और इस्लाम के विपरीत मूल्यों को

बढ़ावा देने' का आरोप लगाया है। रिपोर्ट के मुताबिक, आरएसएफ ने पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सुधारों को लागू करने के लिए बंगलादेश की अंतरिम सरकार की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। आरएसएफ के दक्षिण एशिया डेस्क की प्रमुख सेलिया मर्सिएर ने डेली स्टार को दिए एक बयान में कहा दोनों अखबारों ने शेख हसीना के सत्तावादी शासन में भी अपनी स्वतंत्रता बनाए रखी लेकिन फिर भी उन्हें कानूनी उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। वह समाचार पत्रों पर हमले और उन्हें धमकाने के प्रयासों की निंदा करता है। अंतरिम सरकार पर निर्भर है कि वह उन्हें बिना किसी प्रतिबंध या उत्पीड़न के स्वतंत्र रूप से काम करने में मदद करे।बयान में कहा गया हाल ही में हुए हिंसक हमलों के भड़काने वालों और अपराधियों की निष्पक्ष, गहन जांच तथा उसके बाद आवश्यक कानूनी कार्रवाई पत्रकारों के लिए असुरक्षित कार्य वातावरण के विकास को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है। वहीं, कट्टरपंथियों (हमलावरों) ने मांग की कि जब तक वे सार्वजनिक रूप से माफी नहीं मांगते और अपने कथित इस्लाम विरोधी रुख को वापस नहीं लेते, तब तक अखबारों को बंद कर दिया जाना चाहिए।

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

दिल्ली के 43वें भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में मप्र मंडप स्वर्ण पदक से सम्मानित

एजेंसी

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली स्थित भारत मंडपम में 14 से 27 नवम्बर तक आयोजित हुए 43वें भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला (आईआईटीएफ) में मध्य प्रदेश के मंडप को राज्यों की श्रेणी में सब्जेक्टिव प्रेजेंटेशन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया है। बुधवार की शाम आयोजित एक समारोह में यह पुरस्कार इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन के प्रबंध निदेशक प्रदीप सिंह खरोला ने मध्य प्रदेश मंडप के संचालक बीएन तिवारी को प्रदान किया। कार्यक्रम में एमपीआईडीसी के शाखा प्रबंधक सीके प्रिंस और मध्य प्रदेश मंडप के विशेष सहायक जगमोहन भी उपस्थित थे। जनसम्पर्क अधिकारी जकिया रूही ने जानकारी देते हुए बताया कि मंडप में मेले की थीम 'विकसित भारत@2047' के अनुरूप प्राचीन सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर के साथ तेजी से विकसित होते मध्य प्रदेश के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। प्रदेश की विकास गाथा को डिजिटल इन्फोपैनल्स के माध्यम से दर्शाया गया था। अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए कांच के स्तंभों के भीतर होलोग्राम से युवा शक्ति, नारी शक्ति, गरीब कल्याण और किसान कल्याण मिशन प्रदर्शित किए गए थे।

अरविंद केजरीवाल ने सफाई कर्मचारियों से घर पर की मुलाकात

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल के बुलावे पर सैकड़ों की संख्या में उनके आवास पर सफाई कर्मचारी पहुंचे। सभी लोगों ने अरविंद केजरीवाल के साथ बैठकर चाय पी। इस दौरान अरविंद केजरीवाल ने उनको आश्वासन भी दिया कि जो भी समस्या होगी, उसको हल किया जाएगा। सफाई कर्मचारियों में महिला और पुरुष सफाई कर्मचारी शामिल थे। सफाई कर्मचारियों से मुलाकात करने के बाद अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर लिखा 'आज मैंने अपने इलाके के सफाई कर्मचारियों को अपने घर चाय पर बुलाया। उनसे उनके सुख-दुख की बात की। उनके जीवन में आने वाली चुनौतियों को समझा। वे हर दिन मुस्कुराते हुए हमारी सेवा करते हैं, हमारे इलाके को साफ सुथरा रखते हैं। आप भी उन्हें अपने घर बुलाएं, उनके साथ समय बिताएं। जब हम सब एक साथ मिलेंगे, तभी हमारा स्वच्छ और सुंदर दिल्ली का सपना पूरा होगा।' उल्लेखनीय है कि 26 नवंबर को आम आदमी पार्टी के स्थापना दिवस पर अरविंद केजरीवाल ने अपनी पार्टी के विधायकों और पार्षदों को निर्देश दिया था कि वह अपने-अपने क्षेत्र के सफाई कर्मचारियों को अपने घर पर चाय और खाने पर बुलाएं और उन्हें सम्मानित करें। केजरीवाल ने ये भी कहा था कि दिल्ली के सफाई कर्मचारी दिन-रात मेहनत करते हैं, हमारे घर के आस-पास सफाई करते हैं, उनकी मेहनत का आदर करना हम सबका कर्तव्य है।

ठगी के मामले में तीन आरोपित गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने विदेश में नौकरी दिलवाने व वीजा दिलाने का झांसा देकर ठगी करने वाले तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया है। चंदन, आजाद प्रताप राव और रितेश तिवारी के रूप में हुई है। ये तीनों कुशीनगर उप्र के रहने वाले हैं। आरोपित विदेश में नौकरी चाहने वालों और विभिन्न देशों में नियुक्ति पत्र और वीजा देने का आश्वासन देकर ठगी करते थे। जांच में पता चला है कि आरोपित खुद को अधिकारी बताकर सोशल मीडिया के जरिए पीड़ितों को अपना शिकार बनाते थे। पुलिस के मुताबिक क्राइम ब्रांच ठगी के मामलों की जांच कर रही थी। जांच के दौरान पुलिस को इन तीनों आरोपितों के बारे में पता चला। उसके बाद पुलिस ने एक गुप्त सूचना के आधार पर एक-एक कर तीनों आरोपितों को गिरफ्तार किया।

स्विट्जरलैंड की एसोसिएशन उडान ने डॉक्टर विवेक को सम्मानित किया

जयपुर के बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर विवेक शर्मा को स्विट्ज़रलैंड की एसोसिएशन उडान ने वंचित वर्ग के बच्चों की स्वास्य सेवाओं के निर्माण में

उनके असाधारण योगदान के लिए सम्मानित किया। एसोसिएशन की अंतराष्ट्रीय चेयरमैन एमेंडिन रोबिनेज ने अपने जयपुर प्रवास के दौरान डॉक्टर विवेक को उनके कार्यालय में प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। एमेंडिन ने डॉक्टर विवेक की स्वास्य सेवाओं के माध्यम से जरूरतमंद लोगो के प्रति उनके समर्पण की सराहना की। एसोसिएशन उडान स्विट्ज़रलैंड एवम यूक्रेन में बेघर लोगों के लिए कार्यरत है।

'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान की शुरुआत, अन्नापूर्णा देवी ने हर बेटी को सशक्त बनाने का किया आह्वान

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नापूर्णा देवी ने 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान की शुरुआत की। बाल विवाह के खिलाफ राष्ट्रीय अभियान के अवसर पर बाल विवाह मुक्त भारत ऑनलाइन पोर्टल का लोकार्पण किया। विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में अन्नापूर्णा देवी ने कहा कि बाल विवाह मुक्ति के लिए समाज के हर वर्ग को आगे आना होगा और इस सामाजिक कुप्रथा को जड़ से समाप्त करने में अपना योगदान देना होगा। देश की हर बेटी को सशक्त बनाने का आह्वान करते हुए उन्होंने बाल विवाह मुक्त भारत के प्रति अपने योगदान की प्रतिज्ञा ली। अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि आज देश के लिंगानुपात दर में सुधार आया है। साल 2014-15 में देश में प्रति एक हजार पुरुष के मुकाबले महिलाओं का लिंगानुपात 918 था जो 2023-24 में बढ़कर 930 हो गया है। उन्होंने

कहा कि बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006 के तहत 18 वर्ष से कम उम्र की लड़कियों और 21 वर्ष से कम उम्र के लड़कों के विवाह पर सख्त प्रतिबंध है। इसका उल्लंघन करने वालों पर कठोर दंड का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि पिछले साल एक लाख से अधिक बाल विवाह रोकने में सफलता मिली है। बाल विवाह दरों में वैश्विक कमी में भारत के योगदान को संयुक्त राष्ट्र ने मान्यता दी है। उन्होंने आगे कहा कि इस अभियान का उद्देश्य हमारी बेटियों को शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाना है। लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने वाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप हमारी सरकार लड़कियों की शिक्षा और सामाजिक सशक्तिकरण का समर्थन देने की योजना को जारी रखे हुए है। अभियान का शुभारंभ केवल एक कार्यक्रम नहीं है बल्कि यह बाल विवाह को मिटाने और हमारे देश की हर बेटी को सशक्त बनाने का एक मिशन है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर लड़की शिक्षित, सुरक्षित और अपने सपनों को पूरा करने के लिए स्वतंत्र हो। बाल विवाह के खिलाफ इस राष्ट्रव्यापी अभियान का पुरजोर समर्थन करते हुए 'जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन' एलायंस के संस्थापक भुवन ऋभु ने कहा कि बाल विवाह मुक्त भारत के सपने को पूरा करने के लिए काम कर रहे सभी लोगों के लिए आज एक नई शुरुआत है। हम लंबी यात्रा तय कर इस मुकाम पर पहुंचे हैं और महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी की इस पहल से हमारे प्रयासों को व्यापक रूप से मजबूती मिलेगी।

भूकंप से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिए किए गए हैं कई उपायः डॉ. जितेंद्र सिंह

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार के स्तर से भूकंप से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिए कई उपाय किए गए हैं। इनमें भूकंप का समय पर पता लगाने और अलर्ट का प्रसार सुनिश्चित करने के लिए भूकंपीय निगरानी नेटवर्क का विस्तार, विशेष रूप से उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में भूकंप-रोधी डिजाइन और निर्माण के लिए बीआईएस द्वारा बिल्डिंग कोड निर्दिष्ट करना, भूकंप की तैयारी के बारे में जनता को शिक्षित करने के लिए जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना है। इसमें गृह मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (एनआईडीएम) द्वारा अभ्यास और जागरूकता अभियान और राज्य और जिला स्तर पर आपातकालीन प्रतिक्रिया और आपदा प्रबंधन योजनाएं विकसित करना शामिल है। यह जानकारी आज लोकसभा में एक लिखित उत्तर में केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने दी। मंत्री ने बताया कि पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (एनसीएस) 166 स्टेशनों के राष्ट्रीय भूकंपीय नेटवर्क के माध्यम से देश भर में भूकंपीय गतिविधियों की निगरानी और रिपोर्ट करता है। भूकंपों का विवरण एनसीएस की वेबसाइट (seismo.gov.in) पर उपलब्ध है। देश को प्रभावित करने वाले लगातार भूकंपों के विज्ञान को समझने के लिए कई अध्ययन किए गए हैं। इसमें स्थानीय साइट प्रभावों, भूकंप की घटनाओं के रुझान विश्लेषण आदि को समझने के लिए चयनित शहरी क्षेत्रों में किए गए विस्तृत भूकंपीय माइक्रोज़ोनेशन अध्ययन शामिल हैं।

वक्फ संशोधन विधेयक 2024 के लिए गठित जेपीसी का कार्यकाल बढ़ेगा

एजेंसी

नई दिल्ली। वक्फ संशोधन विधेयक-2024 पर गठित संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) का कार्यकाल बढ़ाया जाएगा। समिति की आज हुई बैठक में सर्वसम्मति से इस पर निर्णय लिया गया। समिति को इस सप्ताह के अंत तक रिपोर्ट देनी थी।

समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल का कहना है कि समिति के सभी सदस्य इस बात पर सहमत हैं कि जेपीसी का कार्यकाल बढ़ाया जाना चाहिए। संभावना है कि इस संबंध में कल संसद में प्रस्ताव लाया जाएगा और समिति का कार्यकाल बजट सत्र तक बढ़ाया जाएगा। इससे पहले समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल ने कहा था कि समिति की रिपोर्ट लगभग तैयार है और इसे समय से सदन को भेजा जाएगा। हालांकि विपक्ष को इसपर आपत्ति थी। विपक्ष समिति का कार्यकाल बढ़वाना चाहता था। इस संबंध में विपक्षी नेताओं ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से भी मुलाकात की थी। आज समिति की बैठक में विपक्षी सदस्यों ने समिति

का कार्यकाल बढ़ाए जाने की मांग को लेकर हंगामा किया। विपक्षी सदस्य बैठक को बीच में ही छोड़कर बाहर चले गए। तृणमूल सांसद कल्याण बनर्जी ने कहा कि समिति का ज्यादातर समय सत्ता पक्ष से जुड़े लोगों से ही चर्चा में लगाया गया और जिन राज्यों में सबसे ज्यादा वक्फ संपत्ति है, उन्हें नहीं बुलाया गया। संयुक्त संसदीय समिति की पार्लियामेंट हाउस एनेक्सी में बैठक हुई। बैठक के बाद बाहर आए सांसदों ने इस बात की पुष्टि की कि समिति का कार्यकाल बढ़ाए जाने पर सहमति बन गई है।

मप्र पर्यटन को मिला 'बेस्ट टूरिज्म स्टेट ऑफ द ईयर' का सम्मान

एजेंसी

नई दिल्ली। मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग को नई दिल्ली में आयोजित प्रतिष्ठित ट्रेवल एंड टूरिज्म कॉन्क्लेव एंड अवार्ड्स में 'बेस्ट टूरिज्म स्टेट ऑफ द ईयर' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान पर्यटन क्षेत्र में प्रदेश द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों और उपलब्धियों के लिए दिया गया है। पर्यटन व संस्कृति विभाग विभाग के प्रमुख सचिव एवं मप्र टूरिज्म बोर्ड के प्रबंध संचालक शिव शेखर शुक्ला ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान प्रदेश में पर्यटकों को एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करने के लिये हमारे प्रयासों को और गति प्रदान करेगा। मध्य प्रदेश को पर्यटन की दृष्टि से और अधिक समृद्ध बनाने के लिए हम निरंतर प्रयासरत रहेंगे। उन्होंने बताया कि प्रदेश की अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, और विश्व स्तरीय पर्यटन स्थलों के

प्रचार-प्रसार के लिये पर्यटन विभाग द्वारा नवाचार किये जा रहे हैं। विभाग द्वारा पर्यटन स्थलों पर आधारभूत संचरना, कनेक्टिविटी में सुधार, स्थानीय समुदाय के लिये रोजगार के नए अवसर सृजित किये जा रहे है। इससे मध्य प्रदेश देश-विदेश के पर्यटकों का पसंदीदा गंतव्य स्थान बन गया है।

राष्ट्रीय अल्पसंख्यकआयोग ने संभल हिंसा के संबंध में उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव से रिपोर्ट मांगी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग ने उत्तर प्रदेश के संभल में हिंसा के संबंध में मीडिया रिपोर्टों पर स्वतः संज्ञान लिया है। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग ने संभल हिंसा के संबंध में उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव से रिपोर्ट मांगी है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, संभल में हिंसा तब भड़की जब मुगलकालीन जामा मस्जिद के सर्वेक्षण का विरोध कर रही भीड़ सुरक्षाकर्मियों से भिड़ गई। इस दौरान चौबीस पुलिस और प्रशासनिक कर्मी घायल हो गए और भीड़ में से चार लोगों के मारे जाने की खबर है। आयोग ने उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव को पत्र लिखकर इस मामले पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी है।

संविधान हमारे लोकतंत्र की नींव और राष्ट्र की प्रगति का मार्गदर्शक : डॉ. वीरेन्द्र कुमार

एजेंसी

नई दिल्ली । केंद्रीय मंत्री डॉ वीरेन्द्र कुमार ने कहा कि भारतीय संविधान केवल एक दस्तावेज नहीं है, यह हमारे लोकतंत्र की नींव और राष्ट्र की प्रगति का मार्गदर्शक है। इसके मूल्यों को अपने दैनिक जीवन में अपनाना आवश्यक है ताकि हम एक ऐसा भारत बना सकें, जहां समानता, न्याय, और गरिमा हर नागरिक के लिए सुनिश्चित हो। डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में भारतीय संविधान के 75 वर्ष के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वीरेन्द्र कुमार ने कहा कि भारतीय संविधान, जो 26 नवंबर 1949 को अंगीकृत हुआ, भारत की विविधता में एकता और लोकतंत्र के प्रति अडिग प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह समावेशी विकास, न्याय और समान अवसरों के सिद्धांतों को साकार करता है। इन मूल्यों के अनुरूप, मंत्रालय विभिन्न पहलों के माध्यम से समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों को सशक्त करने और उन्हें उनके अधिकार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। कार्यक्रम में राज्य मंत्री

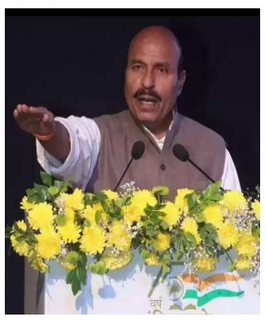

रामदास आठवले ने कहा कि संविधान दिवस युवाओं के मन में ज्ञान का दीप प्रज्वलित करता है, उन्हें भारतीय संविधान को समझने, सम्मान देने और पालन करने के लिए प्रेरित करता है। ऐसे समय में जब लोकतंत्र के महत्व को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है, संविधान दिवस का उत्सव हमें अपने संवैधानिक मूल्यों से जोड़े रखता है और भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. अंबेडकर की कालजयी विचारधाराओं को फैलाने का माध्यम बनता है। मंत्रालय ने अनुसूचित जातियों , अन्य पिछड़ा वर्ग, आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों , विमुक्त जनजातियों, ट्रांसजेंडर व्यक्तियों और वरिष्ठ नागरिकों को सशक्त करने के लिए कई प्रयास किए हैं। यह समावेशिता और गैर-भेदभाव के संवैधानिक आदर्शों को साकार करने की दिशा में कार्यरत है। कार्यक्रम में राज्य मंत्री बी.एल. वर्मा ने कहा कि हमारा संविधान एक जीवंत दस्तावेज है, जो प्रत्येक नागरिक के लिए न्याय, स्वतंत्रता, समानता, और बंधुत्व सुनिश्चित करता है। यह हमें एक ऐसा समाज बनाने के लिए प्रेरित करता है, जहां कोई भी पीछे न छूटे। कार्यक्रम में संविधान पर आधारित एक रोचक और संवादात्मक क्विज का आयोजन किया गया, जिसमें 10 टीमों ने भाग लिया। यह क्विज 25 प्रश्नों पर आधारित था, जो संविधान के विभिन्न पहलुओं, इसके इतिहास और मूल सिद्धांतों को कवर करता था।

प्रधानमंत्री मोदी से मिले तेलंगाना के भाजपा सांसद और विधायक

एजेंसी

नई दिल्ली। तेलंगाना से भाजपा के सभी 18 निर्वाचित जन प्रतिनिधियों ने दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। टीम में आठ लोकसभा सदस्य, एक राज्यसभा सदस्य, आठ विधायक और एक एमएलसी शामिल थे। तेलंगाना भाजपा के अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने राज्य के प्रमुख मुद्दों और राज्य में पार्टी की भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर पोस्ट किया, तेलंगाना भाजपा के विधायकों और सांसदों के साथ बहुत अच्छी बैठक हुई। राज्य में हमारी पार्टी की उपस्थिति तेजी से बढ़ रही है। तेलंगाना के लोग पहले से ही कांग्रेस से तंग आ चुके हैं और उन्हें बीआरएस के कुशासन की बहुत बुरी यादें हैं। वे बड़ी उम्मीद के साथ भाजपा की ओर देख रहे हैं। भाजपा कांग्रेस और बीआरएस की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जोरदार आवाज उठाती रहेगी। हमारे कार्यकर्ता हमारे विकास एजेंडे पर विस्तार से चर्चा करते रहेंगे।

अब 2025 में दिल्ली जीतकर इतिहास रचने जा रही आआपा

नई दिल्ली। पंजाब विधानसभा उपचुनाव के नतीजों पर आम आमदी पार्टी (आआपा) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि 2013, 2015, 2020 के बाद आम आदमी पार्टी अब 2025 में दिल्ली जीतकर इतिहास रचने जा रही है। पंजाब का परिणाम दिल्ली चुनाव का सेमी फाइनल है। साथ ही यह परिणाम 2027 में होने वाले पंजाब चुनाव का भी सेमीफाइनल था। जनता ने बता दिया कि आआपा सरकार अच्छा काम कर रही है। उन्होंने कहा कि आआपा ने पंजाब में 4 में से 3 सीटों पर भारी मतों के अंतर से जीत दर्ज की और इन 3 सीटों पर भाजपा की ज़मानत ज़ब्त हो गई। बड़ी बात यह भी है कि ये तीनों सीटें पहली बार आआपा ने जीती है। 2022 की आंधी में भी इन्हें हम नहीं जीत पाए थे। इसी के साथ अब पंजाब मे हमारी 95 सीटें हो गई है। इस दौरान सांसद राघव चड्ढा, पूर्व कैबिनेट मंत्री सत्येंद्र जैन, पंजाब के प्रदेश अध्यक्ष अमन अरोड़ा और विधायक जरनैल सिंह समेत अन्य वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आज पंजाब में चार सीटों पर हुए उपचुनाव के नतीजे आए हैं। चार में से तीन सीटें आम आदमी पार्टी भारी बहुमत से जीत गई है। खास बात यह है कि जो तीन सीटें हम जीते हैं, यह इसके पहले हमारी सीटें नहीं थीं। यह तीनों पहली बार जीते हैं। 2022 की आंधी में भी यह तीनों सीट हम नहीं जीते थे। 2022 में जनता ने आम आदमी पार्टी को 117 में से 92 सीटें दी थीं। आज पंजाब के अंदर हमारी 95 सीटें हो गई हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इन तीनों सीटों के ऊपर भाजपा की जमानत जब्त हो गई है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आआपा ने जिस तरह से देश की राजनीति में धमक की है, वह एक बहुत बड़ी बात है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा कि आज बड़ी खुशी का दिन है, पंजाब में चार सीटों पर उपचुनाव हुए। संगरूर के बरनाला से हमारे विधायक मीत हेयर एमपी बन गए थे, जिसकी वजह से वह सीट खाली हो गई थी। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष और गिद्दरबाह्य से विधायक राजा वडिंग लुधियाना से एमपी बन गए

NAME CHANGE

I, hitherto known as DAISY SINGH D/o HARVINDER SINGH W/o VINAY PREET SINGH residing at House No. 493, Block-S, Greater Kailash -2, South Delhi, Delhi - 110048 have changed my name and shall hereafter be known as DAISYY KAURR.

Religion Change

I, Shahin Parveen D/O Ashraf Ansari 1/2,Khure ji Khas , Krishna Nagar, East Delhi, Delhi -110051, have changed my Religion Muslim to Hindu from dated 28/11/2024 and Changed my name to Shahin

NAME CHANGE

I, Sefali Paul mother of Prasanta Pal presently residing at Saradapally Madhyamgram North 24 Parganas, West Bengal -700155 have changed my name From Sefili Pal to Sefali Paul vide affidavit dates 25 Nov.2024 executed before Notary Public Delhi (India).

NAME CHANGE

I, Ayushika Madan W/o-jwala Dass Vaid R/o H-19 Lajpat Nagar 3, Lajpat Nagar South East Delhi -110024 have changed my name from Ayushika Madan to Ayushika Vaid for all future purposes.

NAME CHANGE

I, hitherto known as GURUPREET SANGLA S/o HARVINDER SINGH residing at House No. 493, Block-S, Greater Kailash -2, South Delhi, Delhi - 110048 have changed my name and shall hereafter be known as GURUPREETT SINGH SANGLA.

NAME CHANGE

I, SADHNA SHANKAR KARWADE Mother of KARWADE ASHISH SHANKAR presently Residing VPO-ANDHALGAON, TEH-MOHADI, DIST-BHANDARA (MAHARASHTRA)-441914, have changed my name from SADHANA to SADHNA SHANKAR KARWADE. Vide affidavit dated 26/11/2024 executed before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE

I, hitherto known as HARVINDER SINGH S/o Late AMRIK SINGH residing at House No. 493, Block-S, Greater Kailash -2, South Delhi, Delhi - 110048 have changed my name and shall hereafter be known as HARVINDER SINGH SANGLA.

NAME CHANGE

I, hitherto known as MADAN MOHAN SINGH S/o BABU LAL residing at G-6/A, Sector-9, Vijay Nagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh - 201001 have changed my name and shall hereafter be known as MADAN MOHAN PACHAURI.

NAME CHANGE

I, Devendra Singh Father of Anvesha presently residing at 14, Sukhtoli, Koli Dungari, Koladungari, Chamoli, Uttrakhand, Pin-246474 have changed my minor daughter name from Anvesha to Anuvesha Topal for all future purposes vide affidavit dated 27 Nov. 2024 before Notary Public, Delhi

NAME CHANGE

I, Gayabai Rajendra Jagtap Mother of Jagtap Dipak Rajendra presently residing at Hiswal B.K.Nandgaon, Nasik, Maharashtra Pin-423106 have changed my name from Gaya Bai to Gayabai Rajendra Jagtap for all future purposes vide affidavit dated 27 Nov 2024 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE

It is for General information that I, ATUL CHOUDHARY S/o MAHESH KUMAR residing at House No. - 678, Gali No. - 15, Near Barat Ghar, Lakhpat Colony, Part-2, Mithe Pur, South Delhi, Delhi – 110044 declare that the name of my Father and Mother has been wrongly written as MAHESH CHOUDHARY and BABLI CHOUDHARY in my 10th and 12th Class Educational Documents. The actual names of my Father and Mother are MAHESH KUMAR and BABLI respectively, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, hitherto known as SEEMA SANGLA D/o PARVEEN KUMAR JOLLY W/o GURUPREET SANGLA residing at House No. 493, Block-S, Greater Kailash -2, South Delhi, Delhi -110048 have changed my name and shall hereafter be known as SSEEMA SANGLA.

NAME CHANGE

I, GURUPREET SANGLA S/o HARVINDER SINGH residing at House No. 493, Block-S, Greater Kailash -2, South Delhi, Delhi - 110048 have change the name of my minor Son RAUNAKVEER SANGLA aged 15 Years and he shall hereafter be known as RAUNAKVIIR SINGH SANGLA.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Abu Salam Laskar S/O Asarali Laskar R/O Jhuggi No. -453,Sonia Gaandhi Camp, Samalkha, South West Delhi, Delhi - 110037, declare that name of my minor daughter and my wife has been wrongly written as Atika Abdul Salam and Amina Noori in my minor daughter namely Atika Laskar aged 16years in her School record, The actual name of my minor daughter and wife are Atika Laskar and Amina Nuri Laskar

NAME CHANGE

I, SHANKAR RAMDAS KARWADE father of KARWADE ASHISH SHANKAR presently Residing VPO-ANDHALGAON, TEH-MOHADI, DIST-BHANDARA (MAHARASHTRA)-441914, have changed my name from KARWADE SHANKAR to SHANKAR RAMDAS KARWADE. Vide affidavit dated 26/11/2024 executed before Notary Public Delhi.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Pinki W/O Rakesh Kumar Singh R/O GB 32 A/B, Pul Pehlad Pur , Badarpur VTC Jait Pur PO: Jaitpur , District South Delhi, Delhi -110044, declare that name of mine and my husband have been wrongly written as Pinki Singh and Rakesh Singh in my minor daughter namely Simran Singh aged 15 years in her 10th class educational documents The actual name of mine and my husband are Pinki and Rakesh Kumar Singh

NAME CHANGE

I, Jatindra Nath Paul, father of Prasanta Pal presently residing at Saradapally, Madhyamgram, North-24 Parganas, West Bengal-700155 have changed my name from Jitendra Nath Pal to Jatindra Nath Paul, vide affidavit dated 25 Nov 2024, Notary Public Delhi (India)

NAME CHANGE

I, SANJAY BANIWAL S/o TARIF SINGH BANIWAL R/o 10/12, Lucknow Road, Opp. Delhi University Metro Station, Timar Pur, Civil Lines, North Delhi, Delhi-110054, declare that name of my minor son has been wrongly written as DEVNANDAN S BENIWAL in my minor son namely DEV NANDAN S BENIWAL aged 14 years in his School Record. The actual name of my minor son is DEV NANDAN S BENIWAL.

NAME CHANGE

I, BHAGWAN PRASAD S/O GANESH RAM R/O A1/346E, TOP FLOOR, A-1, BLOCK, MADHU VIHAR, UTTAM NAGAR, WEST DELHI, DELHI-110059, have changed the name of my minor son PIYUSH KUMAR SELA KOTI alias PIYUSH SELA KOTI aged 14 years and he shall hereafter be known as PIYUSH SELA KOTI.

NAME CHANGE

It is for general information that I RITU BALA W/O NIPUN KUMAR R/O H.NO-35, G-17, THIRD FLOOR, SECTOR-15 ROHINI, NORTH WEST DELHI-110085, declare that name of mine has been wrongly written as RITU BALA KUMAR in my minor son namely RAGHAV KUMAR aged 14 years in his school record. The actual name of mine is RITU BALA which may be amended accordingly

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, ANISH S/O SHAMIM CHHANGE R/O H.No-1370-B, Gali No- 13, Govindpuri, Kalkaji, Dist- South Delhi, Delhi- 110019, declare that name of mine, my wife and my son have been wrongly written as MOH. ANEES, REHAN KHATOON and MOH DAWOOD in my minor son MOH DAUD aged 16 year in his School Records. The actual name of mine, my wife and my son are ANISH, SAHANA PARVIN and MOH DAUD, respectively, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Manish Chauhan S/O Narendra Singh R/O Gali No -6, Wazirabad, Village Burari PO: Burari , Dist: North Delhi, Delhi-110084, declare that name of my mother has been wrongly written as Parmeshwari in my 10th, 12th and Bachelor of Business Administration educational documents, the actual name of my mother is Savita

NAME CHANGE

It is for general information that I, PRASHANT KUMAR SINGH S/O DAROGA SINGH Permanent Resident PRASHANT RAJ, MUKHYA MARG, INDRAPURI HEHAL, RANCHI, JHARKHAND-834005 Presently Residing at E-13, TOWER-1, TYEP V FLATS, EAST KIDWAI NAGAR, NEW DELHI-110023, declare that name of my son has been wrongly written as BAIBHAV VISHAL in my Service Records. The actual name of my son is VAIBHAV VISHAL, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, BEENA DEVI POKHRIYAL Wife of No. JC-725876W Rank-SUB/RT Name-AJAY SALIL POKHRIYAL R/o VILL-KAPHOLA NAUGOUN, PO-PATISAIN, TEH-SATPULI, DIST-PAURI GARHWAL (UTTARAKHAND)-246167 have changed my name from BEENA DEVI POKHRIYAL to BEENA POKHRIYAL for all future purposes. Vide affidavit dated 27/11/2024 executed before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE

It is for general information that I, KAMLA BHATT W/o DINESH CHANDER BHATT R/o House No. E1/58 A- Pratap Vihar Part-3rd, Near Ran Singh Public School, Kirari Suleman Nagar, North West Delhi, Delhi-110086, declare that name of mine and my husband have been wrongly written as KAMLA DEVI and DINESH CHANDRA BHATT in my minor son namely ISHABH BHATT aged 16 years in his CBSE 10th class Educational Documents, and also name of mine and my husband have been wrongly written as KAMLA DEVI and DINESH CHANDDRA BHATT in his Birth Certificate Registration No. MCDOLR08026204. The actual name of mine and my husband are KAMLA BHATT and DINESH CHANDER BHATT respectively.

बाल सरंक्षण अधिकारी दिलाया हिसार को बाल विवाह मुक्त बनाने का संकल्प

एजेंसी

हिसार। नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान के उद्घाटन के मौके पर जिला प्रशासन ने हिसार में बाल विवाह के खिलाफ काम कर रहे गैर सरकारी संगठन एमडीडी ऑफ़ इंडिया के साथ मिलकर जागरूकता कार्यकर्मों का आयोजन किया। संगठन ने लोगों को बाल विवाह के खिलाफ शपथ दिलाई। एमडीडी ऑफ़ इंडिया बच्चों की सुरक्षा व संरक्षण के लिए देश के 400 से भी ज्यादा जिलों में काम कर रहे 250 से भी ज्यादा गैर सरकारी संगठनों के गठबंधन जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन (जेआरसी) का सहयोगी सदस्य है। इस मौके पर बुधवार को यहां दो स्थानों स्थानीय राजकीय स्नातकोतर महाविधालय एवं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विधालय गंगवा में समारोह आयोजित किए गए। इन समारोहों में जिला बाल सरंक्षण अधिकारी सुनीता यादव, खंड शिक्षा अधिकारी बिजेंदर सिंह एवं गवर्नमेंट कॉलेज के प्रिंसिपल विवेक सैनी ने स्कूली बच्चों, महिलाओं और पंचायत प्रतिनिधियों व स्टाफ सदस्यों को बाल विवाह के खिलाफ शपथ दिलाई। जिले में जगह-जगह हुए कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में ग्रामीणों, पंचायत प्रतिनिधियों, आशा व आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, शिक्षकों, बाल विवाह निषेध अधिकारी (सीएमपीओ) के अलावा बाल विवाह पीड़िताओं ने भी भागीदारी की और बाल विवाह के खिलाफ शपथ ली।इस मौके पर सुनीता यादव ने कहा कि हमारे देश में बाल विवाह बहुत बड़ी सामाजिक बुराई है।

विद्यार्थियों ने कड़ी मेहनत एवं लगन के साथ पढ़ाई करके अपने लक्ष्यों को प्राप्त कियाःबीआर कम्बोज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय सभागार में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बीएससी, एमएससी, एग्रीबिजनेस तथा पीएचडी परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने पुरस्कार वितरित किए।कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा कि हकृवि के विद्यार्थियों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। विद्यार्थियों ने कड़ी मेहनत एवं लगन के साथ पढ़ाई करके अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया है।विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने यूपीएससी, एआरएस, एचसीएस, एचपीएससी सहित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करके उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। यहां के विद्यार्थी देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी प्रदेश एवं देश का नाम रोशन कर रहे हैं। इसका श्रेय विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन तथा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक माहौल को जाता है। हकृवि के विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ समझौते होने के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर का शैक्षणिक माहौल है जिससे विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं व करियर में नित नई ऊंचाईयां छू रहे हैं। विद्यार्थियों ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर परिश्रम किया जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

निजी स्कूल बसों की चेकिंग, एसडीएम ने दिए सुरक्षा पॉलिसी के अनुपालन के निर्देश

सोनीपत। गोहाना की एसडीएम अंजलि श्रेत्रीय ने निजी स्कूल संचालकों को निर्देश दिए कि उन्हें हरियाणा मोटर व्हीकल रूल्स और सुरक्षित स्कूल वाहन पॉलिसी का पूर्ण पालन सुनिश्चित करना होगा।उन्होंने चेतावनी दी कि नियमों की अवहेलना करने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। एसडीएम ने कहा, जिला प्रशासन बच्चों की सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं करेगा, इसलिए उनकी सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए। एसडीएम ने गोहाना क्षेत्र के निजी स्कूलों की बसों की व्यापक चेकिंग की। इस दौरान उन्होंने स्कूल संचालकों को हिदायत दी कि वह अपनी स्कूल बसों को दुरुस्त करें। उन्होंने कहा कि यदि किसी बस में खामियां पाई गईं तो संबंधित स्कूल संचालक के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। एसडीएम ने स्पष्ट किया कि स्कूल बसों को केवल तभी सड़क पर चलने की अनुमति दी जाएगी,जब वह फिटनेस, दस्तावेज, और सभी सुरक्षा उपकरणों से लैस हों। जांच के दौरान एसडीएम ने बसों से संबंधित सभी दस्तावेजों की जांच की, जिनमें शामिल थे। वैध लाइसेंस, प्रदूषण प्रमाण पत्र, फिटनेस सर्टीफिकेट, बीमा दस्तावेज सुरक्षा उपकरणों की भी जांच की गई, जिनमें सीसीटीवी कैमरे,आग बुझाने के यंत्र (फायर सिलेंडर), और फर्स्ट-एड किट शामिल थे।

एनसीबी ने 187 नशीली कफ सिरप व 1872 नशीले ट्रामाडोल कैप्सूल पकड़े

गुरुग्राम। हरियाणा राज्य नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) ने गुरुग्राम से एक नशा तस्कर को काबू किया है। आरोपी के कब्जे से 187 नशीली कफ सिरप (कोडिन) व 1872 नशीले ट्रामाडोल कैप्सूल बरामद किए गए हैं। आरोपी के खिलाफ सेक्टर-65 पुलिस थाना में केस दर्ज किया गया है। हरियाणा स्टेट नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो उप-पुलिस अधीक्षक फरीदाबाद अनिल कुमार वशिष्ठ एवं हरियाणा एनसीबी युनिट प्रभारी निरीक्षक धर्मवीर के मुताबिक खुफिया ड्यूटी पर एनसीबी युनिट कादरपुर गांव बस अड्डा के नजदीक मौजूद थी। मुखबिर ने टीम को सूचना दी कि उत्तर प्रदेश का रहने वाला नाजिम पुत्र यासीन (फिलहाल गजराज कालोनी गांव कादरपुर निवासी) नशीले कफ सिरप व कैप्सूल बेचता है। अपने घर में बहुत ज्यादा मात्रा में नशीले कफ सिरप का जखीरा रखे हुए है। अगर छापेमारी की जाए तो वह नशीले कफ सिरपो सहित काबू आ सकता है।

विकास योजनाओं में खत्म होगा ठेकेदारों का एकाधिकार

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के शहरी स्थानीय निकाय, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन तथा नागरिक उड्डयन मंत्री विपुल गोयल ने कहा कि विकास परियोजनाओं के कार्य में निर्माण सामग्री की गुणवत्ता में किसी भी प्रकार का समझौता नहीं होगा और ठेकेदारों की निविदा लेते समय एकाधिकार नहीं चलने दिया जाएगा। नेगोशिएशन के माध्यम से पारदर्शी व स्पष्ट तरीके से कार्य आवंटित किए जाएंगे। विपुल गोयल चंडीगढ़ में नगर परिषद नरवाना, जींद, मंडी डबवाली, थानेसर व रतिया में आवंटित किए जाने वाले निविदाओं के हरियाणा रेट्स के अनुमोदन के संबंध में बुलाई गई बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में शहरी स्थानीय निकाय विभाग के अधिकारी तथा जींद, सिरसा तथा कुरुक्षेत्र के जिला नगर आयुक्त तथा इन उक्त नगर

परिषदों के चेयरमैन भी उपस्थित थे। जींद नगर परिषद की चेयरपर्सन द्वारा टेंडर आवंटन में तकनीकी विंग द्वारा अनावश्यक विलंब के संबंध में उठाए गई मांग पर मंत्री ने जिला नगर आयुक्त को एक महीने के अंदर जांच के आदेश दिए और कहा कि यह ध्यान में रखा जाए कि जिस एजेंसी को कार्य आवंटित किया जा रहा है उसके पिछले कार्य रिकार्ड को भी देखा जाए कि उसकी कार्य गुणवत्ता मानदंडों के अनुरूप है या नहीं। इसके अलावा टेंडर प्रक्रिया एक महीने के अंदर-अंदर पूरी होनी चाहिए।स्थानीय निकायों में कर्मचारियों की कमी पर मंत्री ने कहा कि सभी नगर परिषदों व नगर पालिकाओं की आवश्यकता पर रिपोर्ट मांगी गई है, जिसे शीघ्र मुख्यालय भेजना होगा ताकि पदों को भरने की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जा सके। बैठक में जिन विकास कार्यों के लिए हरियाणा रेट्स को निर्धारित किया गया, उनमें नगर परिषद जींद में दिल्ली-फिरोजपुर रेलवे लाइन के पास वर्तमान में डंप किए हुए कचरे का उठान, मंडी डबवाली में राम बाग के पीछे की साइड डंप लिगेसी वेस्ट का जैविक उपचार, एकलव्य स्टेडियम, जींद में सिंथेटिक ट्रेक बिछाना, नगर परिषद नरवाना में पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं अध्ययन केन्द्र का निर्माण तथा नगर पालिका रतिया में नियमित की गई नई कॉलोनियों में इंटरलॉकिंग पेविंग ब्लॉकिंग के साथ सड़कों व गलियों के रेट्स निर्धारित किए गए।

मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों ने कार्यभार संभाला

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार द्वारा नियुक्ति के आदेश जारी किए जाने के बाद हरियाणा राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों ने चंडीगढ़ में कार्यभार संभाल लिया। इस मामले में गुरुवार को हाईकोर्ट में स्टेटस रिपोर्ट दाखिल की जाएगी। हरियाणा सरकार ने विशेष अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए नेता प्रतिपक्ष की अनुपस्थिति के बावजूद मंगलवार को पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश ललित बतरा को मानवाधिकार आयोग का अध्यक्ष तथा सेवानिवृत्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश कुलदीप जैन तथा एडवोकेट दीप भाटिया को मानवाधिकार आयोग का सदस्य नियुक्त किया था। आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों ने कार्यालय पहुंचकर कार्यभार भी ग्रहण कर लिया।

जोन-2 में निगमायुक्त ने आरडब्ल्यूए प्रतिनिधियों से की मुलाकात

एजेंसी

गुरुग्राम। नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त अशोक कुमार गर्ग ने अधिकारियों की टीम के साथ जोन-2 के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। उन्होंने मौके पर मौजूद आरडब्ल्यूए प्रतिनिधियों व क्षेत्र के नागरिकों से भी मुलाकात की तथा क्षेत्र की समस्याओं के बारे में जानकारी लेकर अधिकारियों को समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उनके साथ एडिशनल म्युनिसिपल कमिश्नर वाईएस गुप्ता सहित अन्य अधिकारीगण मौजूद रहे।

निगमायुक्त सेक्टर-21 में पहुंचे। वहां खाली भूमि पर चल रहे कचरा सेग्रीगेशन केन्द्र का निरीक्षण किया। वहां हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण गुरुग्राम की प्रशासक वैशाली सिंह तथा एस्टेट ऑफिसर विकास ढांडा भी उपस्थित थे।एचएसवीपी प्रशासक ने कहा कि वे इस खाली भूमि की स्थिति के बारे में पता करके आगे की कार्रवाई करवाएंगी। निगमायुक्त ने निगम अधिकारियों से कहा कि वे यहां पर चल रहे कचरा सेग्रीगेशन केन्द्रों के कारण हो रही गंदगी तथा पब्लिक न्यूसेंस पर कार्रवाई करते हुए संबंधित को नोटिस जारी करें तथा इसकी एक कॉपी एचएसवीपी प्रशासक को भी भिजवाएं। साथ ही क्षेत्र में सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करें। इसके बाद निगमायुक्त ने सेक्टर-21 में जर्जर हो

चुके सामुदायिक केन्द्र का भी निरीक्षण किया। मौके पर मौजूद सेक्टर-21-ई आरडब्ल्यूए प्रधान अशोक यादव, सेक्टर-21 आरडब्ल्यूए के महासचिव केएल शर्मा तथा सेक्टर-22बी के आरडब्ल्यूए प्रधान भीमसिंह यादव ने बताया कि यह सामुदायिक केन्द्र काफी पुराना हो गया है व अब काफी जर्जर हालत में पहुंच गया है, जिसकी मरम्मत करवाई जानी है। निगम अधिकारियों ने बताया कि सामुदायिक केन्द्र की मरम्मत व सुधारीकरण के लिए टेंडर प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। जल्द ही कार्य अलॉट करके काम शुरू करवा दिया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि इस कार्य पर लगभग 96 लाख रुपए का खर्च आएगा, जिसमें भोजनालय शेड का निर्माण कार्य भी शामिल है। निगमायुक्त ने क्षेत्र में बने बूस्टिंग स्टेशन का निरीक्षण करने के दौरान बूस्टिंग स्टेशन परिसर में सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश भी अधिकारियों को दिए। इसके साथ ही समयबद्ध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने की बात संबंधित अधिकारियों से कही। निगमायुक्त ने कहा कि क्षेत्र में सफाई, सीवरेज व पेयजल आपूर्ति से संबंधित सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान करवाएं तथा अतिक्रमण के विरुद्ध लगातार कार्रवाई करें।

खेती को बचाने के लिए बेसहारा गौवंश को गौशालाओं में भेजा जाएः विवेक भारती

एजेंसी

नारनौल। जिला में लगभग तीन हजार बेसहारा गोवंश है। नगर परिषद तथा पंचायत विभाग इन्हें जल्द से जल्द गौशालाओं में भिजवाने का प्रबंध करें। उपायुक्त डॉ विवेक भारती लघु सचिवालय में पशु क्रूरता निवारण समिति तथा बेसहारा गोवंश पुनर्वास योजना को लेकर बुलाई अधिकारियों व गौशाला संचालकों की बैठक में बोल रहे थे। इस मौके पर सभी गौशाला संचालकों ने जिला प्रशासन को अपनी गौशालाओं में 3625 गोवंश को रखने की सहमति दी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार तथा हरियाणा गो सेवा आयोग का फोकस गौवंश के संरक्षण और संवर्धन पर है। ऐसे में अधिकारी तथा गौशाला संचालक मिलकर बेसहारा गोवंश की समस्या का समाधान निकालें। डीसी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अब फसलों की बिजाई हो चुकी है। ऐसे में किसानों को नुकसान से बचाने के लिए जरूरी है कि सभी बेसहारा पशुओं को गौशालाओं में भेजा जाए। उपायुक्त ने बताया कि अगर सभी गौशालाएं इन बेसहारा पशुओं को अपने यहां आश्रय देंगे तो जिला बेसहारा पशु मुक्त हो जाएगा। उन्होंने कहा कि जिला में 22 गौशालाएं पंजीकृत हैं जिनमें 18 हजार 595

पशु हैं। इसके अलावा लगभग आठ गौशालाएं गैर पंजीकृत भी हैं। उपायुक्त ने सभी पंजीकृत गौशाला संचालकों से आह्वान किया कि वे बेसहारा पशुओं को आश्रय देने के लिए प्रति पशु मिलने वाली एकमुश्त सात हजार रुपए की सहायता राशि के लिए पोर्टल पर अप्लाई करें। इस राशि से गौशालाओं में ढांचागत सुविधा तैयार कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि हरियाणा गो सेवा आयोग की तरफ से इस एकमुश्त राशि के अलावा प्रति पशु हर रोज के लिए चारा के लिए भी राशि दी जाती है। एक वर्ष से कम आयु के पशु के लिए 20 रुपए, एक वर्ष से अधिक आयु के पशु के लिए 30 रुपए तथा नंदी के लिए 40 रुपए प्रतिदिन दिए जाते हैं। इस मौके पर उपायुक्त ने गौवंश के लिए चिकित्सा सुविधाओं का प्रबंधन, और अन्य कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिए कि बेजुबान पशुओं पर किसी भी प्रकार की क्रुरता नहीं होनी चाहिए। इस बैठक में डीडीए पशुपालन डॉ चंद्रभान व गौशाला संचालकों के अलावा अन्य विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहे।

बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत पुलिसकर्मियों ने ली शपथ

एजेंसी

जींद। बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत महिला थाना परिसर में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। डीएसपी जितेंद्र राणा, महिला थाना प्रबंधक इंस्पेक्टर नीलम, सहायक बाल विवाह निषेध अधिकारी रवि लोहान ने सभी पुलिसकर्मियों को बाल विवाह मुक्त भारत करने की शपथ दिलाई और आमजन से आह्वान किया कि बाल विवाह को रोकने के लिए मदद करें। कहीं बाल विवाह की जानकारी है तो इसके बार में 112 या 8814011559 नंबर पर कॉल कर जानकारी दे सकते हैं। इस जानकारी को गुप्त रखा जाएगा। डीएसपी जितेंद्र राणा ने बताया कि देश को बाल विवाह मुक्त बनाने के लिए केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने इस कार्यक्रम की

शुरूआत की है। बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत देश को बाल विवाह से मुक्त कराने के लिए शिक्षा, कौशल विकास, उद्यमिता को लड़कियों के बीच बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा। महिला थाना प्रबंधक इंस्पेक्टर नीलम ने बताया कि बाल विवाह अभी भी एक बड़ी समस्या है। देश को बाल विवाह मुक्त बनाने के लिए आगामी दस दिसंबर तक पखवाड़ा मनाया जा रहा है। जिसके तहत बाल विवाह की रोक को लेकर बनाए गए कानून की जानकारी दी जाएगी। लड़कियों को सशक्त बना कर ही विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। अगर लड़कियों को बाल विवाह कानून की जानकारी होगी तो वह आवाज बुलंद कर सकेंगी। सहायक बाल विवाह निषेध अधिकारी रवि लोहान ने कहा कि आज भी रह-रह कर बाल विवाह के मामले सामने आ रहे हैं। समय से पहले विवाह के कारण लड़कियों के जीवन पर प्रतिकूल असर पड़त है। बाल विवाह के कारण लड़कियों को गरीबी का भी सामना करना पड़ता है। देश को वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने के लिए सरकार देश को बाल विवाह मुक्त बनाना चाहती है।

उचित शिक्षा के साथ नैतिक मूल्यों और संस्कारों का जीवन में करे समावेशः श्रीनिवास गुप्ता

एजेंसी

झज्जर। वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ में नव सत्र प्रारंभ वेद मित्रों के साथ यज्ञ करके किया गया। इस मौके पर छात्राओं अभिभावकों और अध्यापकों शिक्षकों को संबोधित करते हुए बहादुरगढ़ शिक्षा सभा के प्रधान श्रीनिवास गुप्ता ने कहा कि किताबी की शिक्षा के साथ-साथ पढ़ाई में नैतिक मूल्य और संस्कारों का भी समावेश बेहद जरूरी होता है। हवन में पूर्णाहुति प्रबंधन समिति के सदस्यों, प्रवक्तागणों व छात्राओं के कर कमलों द्वारा संपन्न हुई। इसके पश्चात प्रबंधन समिति के सभी सदस्यों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में प्रबंधन समिति के सभी सदस्यों ने महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा के साथ मिलकर विद्या की देवी मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर उनका आशीर्वाद लिया। बीएड प्रथम वर्ष की छात्रा दीपिका वत्स ने अपनी मनमोहक नृत्य प्रस्तुति के द्वारा गणेश वंदना की। साथ ही प्रथम वर्ष की छात्रा ज्योति ने हरियाणवी नृत्य प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा ने कहा कि बहादुरगढ़ शिक्षा सभा एक ऐसी संस्था है जो लंबे समय से लड़कियों को शिक्षित कर रही है। शिक्षण महाविद्यालय केवल लड़कियों को शिक्षा ही नहीं देता, अपितु उन्हें भारतीय संस्कृति के अनुसार ढाल कर एक अच्छा नागरिक बनाने के साथ-साथ राष्ट्र को कुशल शिक्षक प्रदान करता है। उन्होंने बताया कि हमारे महाविद्यालय का परिणाम हमेशा उत्कृष्ट रहता है।

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना ही सरकार की प्राथमिकता : शिक्षा मंत्री

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा ने कहा कि पंचकूला सेक्टर-12 ए स्थित सार्थक राजकीय समेकित आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय प्रदेश के सरकारी स्कूलों के लिए रोल मॉडल से कम नहीं है। सभी स्कूलों के मुखियाओं को इसका अनुसरण करना चाहिए और अपने स्कूल में इसी प्रकार के माडल तैयार करने की रूपरेखा पर कार्य करना चाहिए, तभी नई शिक्षा नीति 2020 के सार्थक परिणाम आ सकते हैं और विद्यार्थियों की आज के युग की शिक्षा की मांग के अनुरूप मजबूत नींव रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूलों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना ही राज्य सरकार की प्राथमिकता है।शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा बुधवार को पंचकूला के सेक्टर-12 ए स्थित सार्थक राजकीय समेकित आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की कार्यप्रणाली का निरीक्षण करने स्कूल प्रांगण पहुंचे थे। मंत्री ने सुबह की पाली वाले अध्यापकों का हाजिरी रजिस्टर भी चेक किया और सभी 50 टीजीटी व पीजीटी शिक्षक उपस्थित मिले। सुबह की पाली में कक्षा 6 से 12 तक की कक्षाएं लगती हैं और दोपहर की पाली में कक्षा 1 से 5 तक की कक्षाएं लगती हैं।

शिक्षा मंत्री ने निरीक्षण के दौरान क्लास रूम में विद्यार्थियों के बैठने की व्यवस्था देखकर प्रबंधन की प्रशंसा की और विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे लगन से पढ़ाई करके माता-पिता व प्रदेश का नाम रोशन करें। उन्होंने साइंस लैब का भी अवलोकन किया और यहां प्रोजेक्ट पर काम कर रही छात्राओं को आशीर्वाद दिया। इसके साथ ही उन्होंने आर्ट गैलरी के अलावा खेल मैदान का भी जायजा लिया। वहां खेल रहे विद्यार्थियों का हौसला भी बढ़ाया। स्कूल के प्रिंसिपल डॉ.पवन कुमार गुप्ता ने मंत्री को अवगत कराया है कि पंचकूला व उसके आस-पास क्षेत्र की हर अभिभावक की इच्छा रहती है कि उनके बेटा-बेटी पंचकूला के सेक्टर 12 ए स्थित सार्थक स्कूल में पढ़ें। वर्तमान में स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या 2500 से अधिक है। उन्होंने मंत्री से मांग कि स्कूल में चार नए कमरों के निर्माण की मंजूरी हो चुकी है। इसकी प्रशासनिक स्वीकृति शीघ्र दिलवाई जाए, ताकि निर्माण कार्य पूरा हो सके और नए शैक्षिक सत्र ने इनमें कक्षाएं लगाई जा सकें।

पुलिस कर्मचारियों की समस्याओं का जल्द होगा समाधान : एडीजीपी

एजेंसी

हिसार। हिसार रेंज के एडीजीपी डॉ. एम. रवि किरण ने हिसार पुलिस लाइन स्थित सीपीसी कैंटीन में उपलब्ध आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की समीक्षा करते हुए इन्हें और बेहतर बनाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस कर्मचारियों की जरूरतों व समस्याओं का विशेष ध्यान रखकर उनका हल किया जाएगा। एडीजीपी डॉ. एम. रवि किरण एडीजीपी कार्यालय में मंडल-सी स्तरीय कल्याण बैठक ले रहे थे। बैठक में एडीजीपी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से मंडल स्तरीय सभी कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा की। उन्होंने सिरसा जिले में फार्मासिस्ट तथा एग्जीक्यूटिव क्लेरिकल स्टाफ की नियुक्ति बारे समीक्षा करते हुए कहा कि सभी जिलों में स्टाफ की कमी को पूरा कर दिया गया है तथा नए भर्ती युवाओं के पोस्टिंग ऑर्डर जारी कर दिए गए है। उन्होंने जींद पुलिस लाइन में महिलाओं के आवास व महिला थाना परिसर के संदर्भ में जानकारी देते हुए कहा कि पुलिस लाइन जींद में महिला पुलिस कर्मचारियों के लिए चार क्वार्टर आरक्षित किए गए है तथा महिला थाना में आवश्यकता अनुसार कमरे उपलब्ध है।एडीजीपी ने डबवाली जिले के लिए डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल, एनजीओ मैस, बैरक व महिला थाना में आवश्यक सुविधाओं बारे प्रपोजल बनाने के भी निर्देश दिए हैं। पुलिस जिला डबवाली जिला से संबंधित विभिन्न कल्याणकारी बिंदुओं पर समीक्षा करते हुए डॉ एम. रवि किरण ने कहा कि पुलिस जिला में बच्चों के पढ़ने के लिए डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल, एनजीओ मैस, मुलाजिमों के रहने के लिए बैरक, महिला थाना में शौचालयों की समुचित व्यवस्था व जनता के बैठने की सुविधा के लिए आवश्यक इन्फ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध करवाया जाए। इस संदर्भ में प्रपोजल बनवाकर उनके कार्यालय में शीघ्र अति शीघ्र भेजा जाए ताकि आगामी कार्यवाही की जा सके।बैठक में हिसार के पुलिस अधीक्षक शशांक कुमार सावन, फतेहाबाद पुलिस अधीक्षक आस्था मोदी, सिरसा पुलिस अधीक्षक विक्रांत भूषण, जींद पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार, हांसी पुलिस अधीक्षक हेमेन्द्र कुमार मीणा, डबवाली पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन, हरियाणा पुलिस हाउसिंग कारपोरेशन के कार्यकारी अभियंता हरीश बंसल, एचडीएफसी बैंक के रीजनल मैनेजर नवीन नागपाल, जीएएच राजेश, एसओ अंकित सहित मंडल कार्यालय के पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

लंबित पड़े इंतकालों को जल्द पूरे करें राजस्व अधिकारी : अनीश यादव

एजेंसी

हिसार। उपायुक्त अनीश यादव ने राजस्व अधिकारियों को लंबित पड़े इंतकाल के कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि इस कार्य में किसी भी प्रकार की कोताही नहीं रहनी चाहिए। उपायुक्त अनीश यादव राजस्व विभाग के अधिकारियों की बैठक ले रहे थे। उन्होंने जिले की सभी तहसील व उप तहसीलों में लंबित पड़े इंतकाल के मामलों में तहसीलदारों को सख्त निर्देश दिए कि इन्हें जल्द से जल्द निपटाया जाए। उन्होंने कहा कि जल्द ही पुनर्बैठक लेकर इंतकाल संबंधी कार्य की समीक्षा की जाएगी। उपायुक्त अनीश यादव ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे सरकार के बकाया वसूली को प्राथमिकता के आधार पर रिकवर कर सरकारी खजाने में जमा करवाएं। उपायुक्त ने राजस्व विभाग के अधिकारियों से कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्र में सरकारी बकाया वसूली जैसे स्टांप ड्यूटी, बैंक ड्यूज, कोर्ट जुर्माना की बकाया वसूली करें। अधिकारी प्राथमिकता के आधार पर इस कार्य को लेते हुए परिणाम दें। उन्होंने कहा कि सरकारी बकाया वसूली में किसी भी प्रकार की ढील ना हो। उपायुक्त ने राजस्व विभाग के बकाया वसूली

और उनके द्वारा दी जा रही सेवाओं की समीक्षा की और कहा कि सभी तहसीलदार व नायब तहसीलदार अपनी जमाबंदियां पूरी कर लें। जमाबंदी लंबित है तो उसे जल्दी निपटाएं। इसके साथ ही सरकार की गाइडलाइन अनुसार इंतकाल करने की हिदायत जारी की हुई उसे तय समय में किया जाए। उपायुक्त ने कहा कि जो पुराने इंतकाल लंबित हैं, उन्हें भी आगामी दिनों में पूरा कर लिया जाए। उन्होंने कहा कि इसके लिए अलग से ड्यूटियां निर्धारित कर ली जाए। उपायुक्त ने सभी एसडीएम, तहसीलदार व नायब तहसीलदार से कहा कि वे अपनी-अपनी कोर्ट में नियमित सुनवाई करें। बैठक में हिसार एसडीएम हरबीर सिंह, हांसी एसडीएम राजेश खोथ, नारनौंद एसडीएम मोहित महराणा, बरवाला एसडीएम डॉ. वेद प्रकाश बेनीवाल वीसी से, डीआईओ ज्योति सहित संबंधित तहसीलदार व नायब तहसीलदार उपस्थित रहे।

तीसरी आंख की निगरानी में रहेगा हिसार, आएगी 150 करोड़ की लागत

एजेंसी

हिसार। हिसार शहर शीघ्र ही ?तीसरी आंख की निगरानी में होगा। इसकी प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इंटिग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (आई ट्रिपल सी) बनाने बारे नगर निगम के मुख्य सभागार में निगमायुक्त नीरज ने अधिकारियों व कंसल्टेंसी एजेंसी के साथ बैठक की। बैठक में कसंल्टेंसी एजेंसी ने हिसार में बनने वाले इंटिग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (आई ट्रीपल सी) के बारे में विस्तार से बताया गया। बैठक में मौजूद अलग-अलग विभागों के अधिकारियों ने अपने-अपने विभाग से जुड़े कार्यों से एंजेसी को अवगत करवाया। इस दौरान एजेंसी की ओर से बताया गया कि आई ट्रीपल सी से पूरा शहर सीसीटीवी कैमरे से जुड़ेगा जिससे शहर की हर गतिविधियों पर नजर रहेगी। आपको बता दें कि आई ट्रीपल सी सेंटर से ट्रेफिक चालान किए जाएंगे। इसके अलावा नगर निगम, पब्लिक हेल्थ, एचएसवीपी व अन्य विभागों को इससे जोड़ा जाएगा। आई ट्रीपल सी सेंटर एक कॉमन सेंटर बनेगा जिससे शहर की मूलभूत सुविधाओं से लेकर अपराध तक की पूर्ण जानकारी रखने में सक्षम होगा।निगमायुक्त ने बताया कि आई ट्रीपल सी सेंटर पर लगभग 150 करोड़ के लगभग रूपये का खर्च आएगा। इसमें विभिन्न तरीके की आधुनिक तकनीक का प्रयोग करके सर्विस पूरे शहर को देंगे। उन्होंने बताया कि पूरे शहर में कैमरे लगाए जाएंगे। इसके साथ ही स्ट्रीट लाइट को जोड़ा जाएगा। ट्रेफिक सिस्टम को इससे जोड़ा जाएगा ताकि ट्रेफिक लाइट और चालान करने की प्रक्रिया सुचारू रहे। इसके अलावा प्रशासन व अन्य विभागों की सर्विस होती हैं, जैसे सीवरेज सिस्टम, पीने का पानी जैसी सर्विस को भी इस सिस्टम से जोड़ा जाएंगा। इससे हम वॉटर क्वालिटी, एयर क्वालिटी को आई ट्रीपल सी सेंटर से चैक कर सकते। जो शहर में फ्लो मीटर लगेंगे वो वॉटर लीकेज व सीवरेज ओवरफ्लो इससे हमें ऑटोमेटिक पता लग जाएगा। इससे हमें रिपेयर व देखभाल करने में आसानी होगी। इसके अलावा हमारा सॉलिड मैनेजमेंट सिस्टम हैं उसमें आधुनिक तकनीके उसका प्रयोग करेंगे कि डोर-टू-डोर, कचरे के प्वाइंटों पर निगरानी होगी और चालान भी किया जा सकेगा। सॉलिड वेस्ट का निस्तारण सही हो रहा है या नहीं, इसकी निगरानी भी की जाएगी। निगमायुक्त ने कहा कि आई ट्रिपल सी सेंटर का जो डेस्क बोर्ड का सिटीजन के लिए एक ऐप बनाया जाएगा जिसमें सिटीजन अपनी प्रतिक्रिया दे सकतें।

अपतटीय क्षेत्रों में खनिजों की नीलामी का पहला दौर गुरुवार को शुरू करेगी सरकार

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार अपतटीय क्षेत्रों में खनिज ब्लॉक की नीलामी का पहला दौर गुरुवार को शुरू करेगी। केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी और कोयला एवं खान राज्यमंत्री सतीश चंद्र दुबे इस महत्वपूर्ण पहल की शुरुआत करेंगे।खान मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि 28 नवंबर को देश के अपतटीय क्षेत्रों में खनिज ब्लॉकों की नीलामी की पहली किश्त शुरू की जाएगी। इसके तहत अरब सागर और अंडमान सागर में 13 खदानों की नीलामी की जाएगी। इन खनिज ब्लॉक में निर्माण में इस्तेमाल होने वाली रेत, चूना मिट्टी तथा 'पॉलीमेटेलिक नोड्यूल' का मिश्रण होता है। मंत्रालय के मुताबिक इन खनिज ब्लॉक के निर्माण में इस्तेमाल होने वाली रेत, चूना मिट्टी तथा 'पॉलीमेटेलिक नोड्यूल' का मिश्रण होता है। ये खनिज बुनियादी ढांचे के विकास, उच्च प्रौद्योगिकी विनिर्माण और हरित ऊर्जा बदलाव के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह ऐतिहासिक पहल भारत के अपने अपतटीय क्षेत्र में समुद्र के नीचे खनिज संसाधनों की खोज और विकास में प्रवेश का प्रतीक है। खान मंत्रालय ने कहा कि यह कदम इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे अपतटीय क्षेत्र में समुद्र के नीचे खनिज संसाधनों की खोज तथा विकास को बढ़ावा मिलेगा।

वाणिज्यिक कोयला खदान नीलामी के 10वें दौर में नौ खदानों की सफलतापूर्वक हुई नीलामी

नई दिल्ली। वाणिज्यिक कोयला खदानों की नीलामी के 10वें दौर में नौ खदानों की सफलतापूर्वक नीलामी हुई है। इनमें तीन पूरी तरह से खोजी गई कोयला खदानें हैं, जबकि छह आंशिक रूप से खोजी गई कोयला खदानें हैं। कोयला मंत्रालय ने जारी एक बयान में कहा कि 21 जून, 2024 को वाणिज्यिक खनन के लिए कोयला खदानों की नीलामी का 10वां दौर शुरू किया गया। अग्रिम नीलामी में कुल नौ कोयला खदानों की सफलतापूर्वक नीलामी की गई है, जिनमें तीन पूरी तरह से खोजी गई खदानें और छह आंशिक रूप से खोजी गई कोयला खदानें हैं। इन नौ खदानों में करीब 3,998.73 मिलियन टन का संयुक्त भूगर्भीय भंडार है। कोयला खदानों की नीलामी के 10वें दौर में कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मिली, जिसमें 17.44 फीसदी का औसत राजस्व हिस्सा हासिल हुआ। मंत्रालय के मुताबिक आंशिक रूप से खोजी गई कोयला खदानों को छोड़कर इन कोयला खदानों की संचयी अधिकतम निर्धारित क्षमता (पीआरसी) 14.10 एमटीपीए है। यह कोयला क्षेत्र में उद्योगों की निरंतर रुचि और मंत्रालय द्वारा एक स्थिर और पारदर्शी नीति ढांचा प्रदान करने के प्रयासों को दर्शाता है।

सुरक्षा डायग्नोस्टिक का आईपीओ 29 नवंबर को खुलेगा

अहमदाबाद। सुरक्षा डायग्नोस्टिक लिमिटेड का प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) 29 नवंबर को खुलेगा। कंपनी की ओर से यहां जारी बयान के अनुसार आईपीओ) खुलेगा। एंकर निवेशक बोली लगाने की तिथि गुरुवार, 28 नवंबर है। बोली/प्रस्ताव बंद होने की तिथि मंगलवार, तीन दिसंबर है। प्रस्ताव का प्राइस बैंड 420 से 441 रुपये प्रति इक्विटी शेयर तय किया गया है। न्यूनतम 34 इक्विटी शेयरों और उसके बाद 34 इक्विटी शेयरों के गुणकों के लिए बोलियाँ लगाई जा सकती हैं। आरंभिक सार्वजनिक पेशकश 19,189,330 इक्विटी शेयरों की बिक्री के लिए एक प्रस्ताव है, जिसमें डॉ. सोमनाथ चटर्जी द्वारा 2,132,148 इक्विटी शेयर, रितु मित्तल द्वारा 2,132,148 इक्विटी शेयर, सतीश कुमार वर्मा द्वारा 2,132,148 इक्विटी शेयर, ऑर्बिमेड एशिया ढ्ढ्ढ मॉरीशस लिमिटेड द्वारा 10,660,737 इक्विटी शेयर, मुन्ना लाल केजरीवाल द्वारा 799,556 इक्विटी शेयर और संतोष कुमार केजरीवाल द्वारा 1,332,593 इक्विटी शेयर शामिल हैं।

अल्लाना ग्रुप ने पोल्ट्री कारोबार में 12 करोड़ डॉलर के नए निवेश की घोषणा की

हैदराबाद। पोल्ट्री उद्योग में वैश्विक स्तर पर कारोबार करने वाली कंपनी अल्लाना समूह ने यहां पोल्ट्री इंडिया 2024 सम्मेलन में भारत के मुर्गी पालन एवं प्रसंस्करण क्षेत्र के लिए 12 करोड़ डॉलर के शुरुआती निवेश के साथ भारतीय पोल्ट्री एलायंस शुरू करने की घोषणा की। अल्लाना ग्रुप की एक विज्ञप्ति के अनुसार कंपनी भारतीय पोल्ट्री एलायंस में ब्रीडर फार्म, हैचरी, फीड प्लांट, ब्रॉयलर कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग, मूल्यवर्धित उत्पाद और रेंडरिंग प्लांट सहित पूरी मूल्य श्रृंखला से जुड़ी इकाइयों को जोड़ेगी। कंपनी का कहना है कि कश्मीर, पंजाब, अलीगढ़, उन्नाव, किशनगंज, औरंगाबाद, बेलगाम, जहीराबाद और कोयंबटूर जैसे क्षेत्रों में रणनीतिक रूप से स्थित यह गठबंधन क्यूएसआर श्रृंखलाओं, खाद्य सेवाओं, सरकारी एजेंसियों और ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों की विविध जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार है। इस गठबंधन में अलायंस प्रीमियम चिक फीड, क्वालिटी एनिमल फीड्स प्राइवेट लिमिटेड, कस्तूरी पोल्ट्री और छठा फूड्स जैसी प्रमुख इकाइयों की सहभागिता है। अल्लाना समूह की जहीराबाद में पालतू पशु पक्षियों के लिए खाद्य प्रसंस्कृत चारा उत्पादों की एशिया की सबसे बड़ी फैक्ट्री है।

पिछले 3 महीनों में तुअर और उड़द दाल की खुदरा कीमतों में आई गिरावट: केंद्र

एजेंसी

नई दिल्ली तुअर और उड़द दाल की खुदरा कीमतों में पिछले तीन महीनों में गिरावट आई है जबकि मंडी में कीमत स्थिर बनी हुई हैं। यह जानकारी उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने दी है। मंत्रालय ने जारी एक बयान में कहा कि उपभोक्ता मामलों का विभाग दालों की मंडी और खुदरा कीमतों के रुझानों पर विचार-विमर्श करने के लिए भारतीय खुदरा विक्रेताओं के संघ (आरएआई) और संगठित खुदरा श्रृंखलाओं के साथ नियमित बैठकें करता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि खुदरा विक्रेता खुदरा मार्जिन को उचित स्तर पर बनाए रखें।मंत्रालय ने कहा कि खुदरा बाजार में सीधे हस्तक्षेप करने के लिए सरकार ने बफर स्टॉक से दालों के एक हिस्से को भारत दाल

ब्रांड के तहत उपभोक्ताओं को सस्ती कीमतों पर खुदरा बिक्री के लिए उपलब?ध कराया है। भारत ब्रांड के तहत खुदरा उपभोक्ताओं को रियायती कीमतों पर आटा और चावल वितरित किया जाता है। इसी तरह प्रमुख उपभोग केंद्रों में स्थिर खुदरा दुकानों और मोबाइल वैन के जरिए खुदरा उपभोक्ताओं के बीच प्याज 35 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से वितरित किया जाता है। इन उपायों से दालें, चावल, आटा और प्याज जैसी आवश्यक खाद्य वस्तुओं को उपभोक्ताओं को सस्ती कीमतों पर उपलब्ध कराने और कीमतों को स्थिर करने में मदद मिली है उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने कहा कि घरेलू उपलब्धता बढ़ाने के लिए दालों का सुचारु और निर्बाध आयात सुनिश्चित करने के लिए, तुअर और उड़द दाल के आयात को 31 मार्च, 2025 तक 'मुक्त श्रेणी' में रखा गया है जबकि मसूर के आयात पर भी 31 मार्च, 2025 तक कोई शुल्क नहीं लगाया गया है। इसके अलावा सरकार ने घरेलू बाजार में दालों की आपूर्ति को बढ़ाने के लिए 31 मार्च, 2025 तक देसी चना के शुल्क मुक्त आयात की भी अनुमति दी है। इससे दालों की उपलब्धता बनी हुई है और कीमतों में असामान्य वृद्धि पर अंकुश लगा है।

पावर ग्रिड कॉरपोरेशन से बीएचईएल को मिला बड़ा ऑर्डर

एजेंसी

हरिद्वार। भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (बीएचईएल) को हिताची एनर्जी इंडिया लिमिटेड के साथ साझेदारी में पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के प्रोजेक्ट एसपीवी कंपनी से खावड़ा (गुजरात) और नागपुर (महाराष्ट्र) के बीच 800द्मङ्क व 6000 स्ङ्ख एचवीडीसी लिंक बनाने का महत्वपूर्ण आर्डर मिला है। यह जानकारी देते हुए बीएचईएल की हरिद्वार इकाई के संचार एवं जनसंपर्क प्रमुख अजीत अग्रवाल ने बताया कि इस 1200 किमी से अधिक लम्बे एचवीडीसी लिंक के 2029 तक पूरा हो जाने की उम्मीद है। यह वर्ष 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा से 500 गीगावॉट बिजली प्राप्त करने के राष्ट्रीय मिशन में महत्वपूर्ण योगदान देगा। साथ ही यह परियोजना भारत सरकार की मेक इन इंडिया पहल के प्रति बीएचईएल की प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है। इस परियोजना के लिए उपकरणों और प्रणालियों की आपूर्ति बीएचईएल की भोपाल और बेंगलुरु इकाइयों से की जाएगी। उन्होंने बताया कि आज बीएचईएल भारत में ट्रांसमिशन सेगमेंट में एक अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इससे पहले बीएचईएल कई राष्ट्रीय एचवीडीसी लिंक जैसे रिहंद-दादरी, चंद्रपुर-पद्धे, बलिया-भिवाड़ी, उत्तर पूर्व-आगरा और रायगढ़-पुगलुर एचवीडीसी लिंक के सफल निष्पादन करने में शामिल रहा है।

भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले के 43वें संस्करण का समापन, दस लाख से अधिक लोग पहुंचे

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रगति मैदान में चल रहे भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले के 43वें संस्करण का समापन किया गया। इस मौके पर आईटीपीओ के कार्यकारी निदेशक प्रेमजीत लाल ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि इस वर्ष मेले में प्रतिभागियों की अच्छी संख्या रही। अच्छा व्यापार हुआ। उन्होंने कहा कि मेले में दस लाख से अधिक आगंतुक आए। इस मौके पर विभिन्न श्रेणियों में सभी पुरस्कार विजेताओं को सम्मानित किया। राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की श्रेणी में पुडुचेरी को स्वर्ण पदक, मेघालय को रजत पदक और कर्नाटक को कांस्य पदक प्रदान किया गया। इसके अलावा पंजाब, पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा को विशेष प्रशंसा प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए। राज्यों की श्रेणी में विषयगत प्रस्तुति में मध्य प्रदेश ने स्वर्ण पदक जीता, ओडिशा को रजत पदक और असम को कांस्य पदक प्रदान किया गया। महाराष्ट्र, पंजाब और तमिलनाडु को विशेष प्रशंसा प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए। आईआईटीएफ में आईटीपीओ ने स्वच्छ भारत अभियान का भी पालन किया और प्रदर्शकों तथा आगंतुकों के बीच सफाई और स्वच्छता के बारे में जागरुकता बढ़ाई तथा स्वच्छ

मंडप को भी पुरस्कार दिया गया जिसमें गोवा को स्वर्ण, केरल को रजत, हरियाणा को कांस्य तथा उत्तराखंड और गुजरात को भी प्रशंसा पुरस्कार प्रदान किया गया।

विदेशी मंडपों में, ट्यूनीशिया गणराज्य के दूतावास को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया और मिस्र (मिलानो बाजार) ने रजत पदक जीता, जबकि कांस्य पदक तुर्की, टिल्लो हेडियेलिक एस्या सनायितिसरेट लिमिटेड सेरकैटी और थाईलैंड (थाई एसएमई निर्यातक संध) को प्रदान किया गया। मंत्रालयों और विभागों, पीएसयू, पीएसबी और कमोडिटी बोर्ड श्रेणी में, भारतीय रिजर्व बैंक ने स्वर्ण पदक जीता, पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने रजत पदक प्राप्त किया, जबकि भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने कांस्य पदक जीता। कोल इंडिया लिमिटेड और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को विशेष प्रशंसा प्रमाण-पत्र प्राप्त हुए। भारत को सशक्त बनाने के लिए (मंत्रालय एवं सरकारी विभाग/ सरस/ केवीआईसी/ सामाजिक न्याय मंत्रालय) ग्रामीण विकास मंत्रालय (सरस) को स्वर्ण पदक, खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) को रजत पदक, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई) तथा पंचायती राज मंत्रालय को कांस्य पदक प्रदान किया गया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय शारीरिक दिव्यांग्जन संस्थान तथा उद्योग एवं आतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) और एनएचडीसी-राष्ट्रीय हथकरघा विकास निगम (एनएचडीसी) को विशेष प्रशंसा पुरस्कार प्रदान किया गया।

सर्राफा बाजार में चमका सोना, चांदी में कोई बदलाव नहीं

एजेंसी

नई दिल्ली। लगातार दो दिनों की बड़ी गिरावट के बाद घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोने की कीमत में तेजी का रुख है। देश के अलग-अलग सर्राफा बाजारों में सोने की कीमत में 250 रुपये से लेकर 270 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की मजबूती दर्ज की गई है। इस तेजी के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 77,660 रुपये से लेकर 77,510 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 71,200 रुपये से लेकर 71,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बना हुआ है। चांदी के भाव में आज कोई बदलाव नहीं हुआ है, जिसके कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में इसकी कीमत 89,500 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बनी हुई है।

देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 77,660 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 71,200 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 77,510 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 70,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 77,560 रुपये प्रति 10

ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 71,100 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 77,510 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 70,050 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 77,510 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 70,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 77,660 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 71,200 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं, पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 77,560 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है, जबकि 22 कैरेट सोना 71,100 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 77,660 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 71,200 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी तेजी आने के कारण आज सोना महंगा हुआ है।

एयर इंडिया पांच प्रमुख मार्गों पर विस्तारा के ए320 विमान का इस्तेमाल करेगी

एजेंसी

नई दिल्ली। टाटा की अगुवाई वाली एयरलाइन कंपनी एयर इंडिया ने कहा कि वह विस्तारा के ए320 विमानों को पांच प्रमुख महानगरों के मार्गों पर तैनात करेगी। इन मार्गों में दिल्ली-मुंबई और मुंबई-हैदराबाद हवाई मार्ग भी शामिल हैं।एयर इंडिया ने एक बयान में कहा कि वह अपने नेटवर्क अनुकूलन प्रयासों के तहत दिल्ली-मुंबई और मुंबई-हैदराबाद सहित पांच प्रमुख मेट्रो-टू-मेट्रो मार्गों पर विस्तारा के ए320 विमानों को तैनात करेगी। इन ए320 विमानों में बेहतरीन नैरो-बॉडी केबिन उत्पाद हैं, जिनका उपयोग इन मार्गों पर यात्रियों के यात्रा अनुभव को बेहतर बनाने के लिए किया जाएगा।टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयरलाइन ने कहा कि कंपनी अपने चल रहे परिवर्तन के हिस्से के रूप में दिल्ली और मुंबई, दिल्ली और बेंगलुरु, दिल्ली और हैदराबाद के बीच एक-एक बड़े आकार के विमान के साथ एक उड़ान संचालित करना जारी रखेगी। इसके साथ ही इन मार्गों पर बोइंग 777 या

एयरबस ए350 विमान तैनात किए जाएंगे।उल लेखनीय है कि इस महीने की शुरुआत में एयर इंडिया ने विस्तारा के साथ अपना विलय पूरा कर लिया है। ये एक पूर्ण-सेवा वाहक है जो सेवा के उच्चमानकों के लिए जाना जाता है। विस्तारा के द्वारा संचालित उड़ानों को अब बुकिंग के समय यात्रियों की सुविधा के लिए 'AI2' उपसर्ग के साथ पहचाना जाता है।

भारत-फ्रांस मिलकर कृषि और खाद्य प्रसंस्करण का कर सकते हैं विस्तार : गोयल

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत और फ्रांस मिलकर नवोन्मेषी टिकाऊ प्रथाओं का उपयोग करके विश्व की खाद्य सुरक्षा के लिए कृषि और खाद्य प्रसंस्करण का विस्तार कर सकते हैं। गोयल ने नई दिल?ली में आयोजित फ्रांसीसी विदेश व्यापार सलाहकारों द्वारा आयोजित एशिया प्रशांत आयोग (एपीएसी) 2024 फोरम को संबोधित करते हुए यह बात कही।केंद्रीय वाणिज्य मंत्री ने कहा कि टिकाऊ प्रथाओं का उपयोग करने से जलवायु परिवर्तन और दुनिया भर में इसके उभरते प्रतिकूल प्रभावों पर एक शमन कारक हो सकता है। गोयल ने कहा कि भारत और फ्रांस के पास अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में साझेदारी की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि अंतरराष?ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) को अपार सफलता मिली है। गोयल ने कहा कि भारत और फ्रांस के द्वारा सह-प्रायोजित और नेतृत्व वाले

इस गठबंधन की सदस्यता 100 से ज्यादा देशों ने ली है। सौर गठबंधन के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने दुनिया के उभरते देशों और कम विकसित देशों तक स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा पहुंचाने के लिए दोनों देशों के प्रयासों को रेखांकित किया।वाणिज्य मंत्री ने एयरोस्पेस क्षेत्र के बारे में कहा कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा विमानन बाजार है, जहां 1500 विमानों का ऑर्डर दिया गया है और इस ऑर्डर को 2000 तक ले जाने की क्षमता है। उन्होंने अपने संबोधन में इस बात पर भी जोर दिया कि भारत तेजी से हवाई अड्डों का निर्माण कर रहा है, जो 2014 में 74 से आज बढ़कर 125 तक पहुंच गया है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि सरकार वर्ष 2029 तक 75 और हवाई अड्डे जोड़ने की योजना बना रही है। गोयल ने कहा कि भारत अपने रक्षा क्षेत्र का भी तेजी से विस्तार कर रहा है। केंद्र सरकार दुनिया भर की कंपनियों को भारत में विनिर्माण के लिए प्रोत्साहित कर रही है, जिससे उन्हें अपनी कंपनियों का 100 फीसदी स्वामित्व मिल सके। डिजिटल प्रौद्योगिकी में सहयोग पर गोयल ने बताया कि दोनों देश साइबर सुरक्षा, एआई, ई-कॉमर्स और क्वांटम प्रौद्योगिकियों में स्टार्टअप को बढ़ावा दे सकते हैं। उन?होंने कहा कि ऐसे में भारत-फ्रांस नवाचार वर्ष 2026 प्रौद्योगिकी-संचालित विकास को बढ़ावा देने में एक मील का पत्थर होगा। वाणिज्य मंत्री ने कहा कि ये पहल आईटी, स्वास्थ्य सेवा, नवीकरणीय ऊर्जा और स्मार्ट शहरों में संयुक्त परियोजनाओं को बढ़ावा देगी।

उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद मजबूती के साथ बंद हुआ शेयर बाजार, निवेशकों को 4.82 लाख करोड़ का मुनाफा

एजेंसी

नई दिल्ली। पूरे दिन उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार आज बढ़त के साथ बंद हुए। आज के कारोबार की शुरुआत मामूली तेजी के साथ हुई थी। दिन के पहले सत्र में बाजार पर बिकवाली का दबाव बना रहा, लेकिन दोपहर 12 बजे के बाद खरीदारी के सपोर्ट से शेयर बाजार ने रफ्तार पकड़ ली। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.29 प्रतिशत और निफ्टी 0.33 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए।आज के कारोबार के दौरान रियल्टी, फार्मास्यूटिकल और आईटी सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। दूसरी ओर एनर्जी, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज और मेटल सेक्टर के शेयरों में लगातार खरीदारी होती रही। इसके अलावा ऑयल एंड गैस, ऑटोमोबाइल, एफएमसीजी, बैंकिंग, कैपिटल गुड्स, कंज्यूमर ड्युरेबल्स और टेक इंडेक्स भी बढ़त के साथ बंद हुए। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.34 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 1.18 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया।आज शेयर बाजार में आई तेजी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में पौने पांच लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 444.57 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी मंगलवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 439.75 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 4.82 लाख करोड़ रुपये का मुनाफा हो गया। आज दिनभर के कारोबार में बीएसई में 4,040 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 2,586 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,343 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 111 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,472 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,729 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 743 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 17 शेयर बढ़त के साथ और 13 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 26 शेयर हरे निशान में और 24 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 116.97 अंक उछल कर 80,121.03 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होने के कुछ देर बाद ही बाजार में बिकवाली का दबाव बन गया। दिन के पहले सत्र में बिकवाल लगातार बाजार पर हावी बने रहे, जिसके कारण ये सूचकांक 159.57 अंक की कमजोरी के साथ 79,844.49 अंक तक गिर गया। दोपहर 12 बजे के बाद खरीदारों ने मोर्चा संभाला और चौतरफा खरीदारी शुरू कर दी। इस लिवाली के कारण दोपहर 2 बजे के करीब ये सूचकांक 507.09 अंक की मजबूती के साथ 80,511.15 अंक तक पहुंचने में सफल रहा। हालांकि इसके बाद एक बार फिर मुनाफा वसूली का दबाव बना, जिसकी वजह से सेंसेक्स ऊपरी स्तर से 270 अंक से अधिक टूट कर 230.02 अंक की मजबूती के साथ 80,234.28 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

देश के सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में ई-दाखिल शुरू हुआ, जल्द ही ई-जागृति भी शुरू की जाएगी

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने उपभोक्ता शिकायत दर्ज करने के लिए लागत प्रभावी और त्वरित प्लेटफॉर्म 'ई-दाखिल पोर्टल' को सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में सफलतापूर्वक लागू किया है। जल्द ही ई-जागृति भी शुरू की जाएगी। ई-दाखिल पोर्टल उपभोक्ता अधिकारों को बढ़ावा देने और समय पर न्याय सुनिश्चित करने में एक गेम-चेंजर है। उपभोक्ता, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मामलों के मंत्रालय ने एक बयान में बताया कि हाल ही में लद्दाख में ई-दाखिल पोर्टल लॉन्च किया है। इसे देश के सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में सफलतापूर्वक लागू किया गया है। वहीं, ई-जागृति के शुभारंभ की योजना पर काम चल रहा है। इसका उद्देश्य केस फाइलिंग, ट्रैकिंग एवं प्रबंधन को और बेहतर बनाना है, जिससे उपभोक्ताओं और हितधारकों को एक सहज अनुभव प्रदान किया जा सके। उपभोक्ता संरक्षण

अधिनियम 2019 को 20 जुलाई, 2020 को अधिसूचित और लागू किया गया था। ई-दाखिल पोर्टल को सबसे पहले 7 सितंबर, 2020 को राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने लॉन्च किया था। 2023 के अंत तक इसे लद्दाख को छोड़कर 35 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में लॉन्च किया गया। अब लद्दाख के उप राज्यपाल ब्रिगेडियर डॉ. बीडी मिश्रा (सेवानिवृत्त) ने 22 नवंबर, 2024 को लद्दाख उपभोक्ता आयोग में ई-दाखिल पोर्टल लॉन्च किया, यह प्लेटफॉर्म महानगरों से लेकर दूरदराज के इलाकों तक भारत के सभी क्षेत्रों के उपभोक्ताओं के लिए सुलभ है। यह व्यापक कवरेज उपभोक्ताओं को सशक्त बनाने और उपभोक्ता शिकायत निवारण प्रणाली की दक्षता बढ़ाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। मंत्रालय के मुताबिक 7 सितंबर, 2020 को शुरू किया गया ई-दाखिल प्लेटफॉर्म उपभोक्ता शिकायत निवारण के लिए एक सरलीकृत ऑनलाइन प्रक्रिया की सुविधा देता है। ये उपभोक्ताओं को शारीरिक रूप से उपस्थित हुए बिना शिकायत दर्ज करने में सक्षम बनाता है। इसके तहत अबतक 281,024 उपयोगकर्ताओं ने पंजीकरण कराया है, जिसमें 198,725 मामले दर्ज किए गए हैं। इनमें से 38,453 का समाधान किया जा चुका है। मंत्रालय ने कहा कि सरकार उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए इस प्लेटफॉर्म को बेहतर बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है।

पैन 2.0 करदाता सेवाओं में एक डिजिटल छलांग : वित्त मंत्रालय

एजेंसी

नई दिल्ली।आयकर विभाग की स्थायी खाता संख्या (पैन) 2.0 प्रोजेक्ट को आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीईए) ने हाल में मंजूरी दी है। इस परियोजना का उद्देश्य पैन और टैन जारी करने और प्रबंधित करने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित और आधुनिक बनाना है, जिससे इसे अधिक उपयोगकर्ता-अनुकूल और कुशल बनाया जा सके।वित्त मंत्रालय ने जारी बयान में कहा कि पैन लंबे समय से भारत की वित्तीय और प्रशासनिक प्रणालियों की आधारशिला रही है, जो वित्तीय पारदर्शिता और अनुपालन को बढ़ावा देते हुए लोगों और व्यवसायों को महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियों से भी जोड़ती है। डिजिटल अर्थव्यवस्था के एक प्रमुख प्रवर्तक के रूप में पैन आवश्यक सर्विस के लिए एक प्रवेश द्वार के तौर पर कार्य कर रहा है, जिससे यह दैनिक जीवन में जरूरी हो गया है। मंत्रालय ने कहा कि यूजर फ्रेंडली बढ़ाने और तकनीकी प्रगति के साथ तालमेल बिठाने के लिए केंद्रीय कैबिनेट ने हाल ही में पैन 2.0 को मंजूरी दी है, जो भारत के विकसित हो रहे डिजिटल और वित्तीय परिदृश्य में पैन की सेवा करने के तरीके को फिर से परिभाषित करने की दिशा आगे बढ़ाया गया एक कदम है। मंत्रालय ने बताया कि पैन 2.0 परियोजना उन्नत ई-गवर्नेंस के माध्यम से करदाता पंजीकरण को आधुनिक बनाने की एक बदलावकारी पहल है। यह 1,435 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय के साथ निर्बाध डिजिटल अनुभव प्रदान करने के लिए पैन और टैन सेवाओं को फिर से तैयार करेगा। मंत्रालय के मुताबिक इस परियोजना का उद्देश्य पैन और टैन जारी करने और प्रबंधित करने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित और आधुनिक बनाना है, जिससे इसे और अधिक यूजर फ्रेंडली तथा कुशल बनाया जा सके। यह परियोजना करदाताओं की जरूरतों को पूरा करती है, जिसमें विभिन्न प?लेटफॉर्म या पोर्टल को एकीकृत करने और पैन और टैन धारकों को कुशल सेवाएं देने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

पैन 2.0 परियोजना के महत्वपूर्ण लाभ निम्नलिखित हैं:

-उपयोगकर्ताओं के लिए पहुंच को सरल बनाने हेतु सभी पैन/टैन-संबंधी सेवाओं के लिए एक एकल पोर्टल।

-कागजी कार्रवाई को सीमीत करने लिए पर्यावरण अनुकूल कागज रहित प्रक्रियाएं।

-पैन कार्ड निःशुल्क जारी किया जाएगा तथा इसकी प्रक्रिया भी शीघ्र होगी।

-व्यक्तिगत और जनसांख्यिकीय डेटा को पैन डेटा वॉल्ट सहित उन्नत सुरक्षा उपायों के माध्यम से संरक्षित किया जाएगा।

-उपयोगकर्ताओं के प्रश्नों और समस्याओं के समाधान के लिए एक समर्पित कॉल सेंटर और हेल्पडेस्क।

मौजूदा पैन कार्डधारकों के लिए बदलाव

पुराने पैन कार्ड धारकों को चिंता करने की जरूरत नहीं है। मौजूदा पैन कार्डधारकों को अपग्रेडेड सिस्टम के तहत नए पैन के लिए आवेदन करने की जरूरत नहीं है। मौजूदा वैध पैन कार्ड, पैन 2.0 के तहत तब तक पूरी तरह से पहले की तरह काम करेंगे, जब तक कि धारक अपडेट या सुधार का अनुरोध न करें। जब तक अपडेट या सुधार के लिए कोई विशिष्ट अनुरोध न किया जाए, तब तक कोई नया पैन कार्ड जारी नहीं किया जाएगा।

-प्रत्येक व्यक्ति यदि उसकी कुल आय या किसी अन्य व्यक्ति की कुल आय, जिसके संबंध में वह वर्ष के दौरान कर योग्य है, उस अधिकतम राशि से अधिक है जो कर योग्य नहीं है।

-एक धर्मार्थ ट्रस्ट जिसे धारा 139(4ए) के तहत रिटर्न प्रस्तुत करना आवश्यक है।

-प्रत्येक व्यक्ति जो कोई ऐसा व्यवसाय या पेशा चला रहा है जिसकी कुल बिक्री, टर्नओवर या सकल प्राप्तियां किसी भी वर्ष में पांच लाख रुपये से अधिक है या उससे अधिक होने की संभावना है।

पूड़ी या पराठा दोनों में से कौन है सेहत के लिए बेहतर जानिए किसे खाने से क्या होगा फायदे-नुकसान

आमतौर पर आप हर दिन रोटी खाते होंगे, लेकिन कई बार पराठे या पूड़ियां खाने का भी मन कर जाता है. इन दोनों को बनाने का तरीका काफी अलग है. पराठे को तेल में सेकते हैं तो पूड़ी को तेल में तलते हैं. ऐसे में दोनों में से किसका सेवन संपूर्ण सेहत के लिए है बेस्ट

हर दिन आप दिन और रात के खाने में रोटी जरूर खाते हैं. घर-घर में डेली गेहूं के आटे की रोटी बनती है, लेकिन कई बार मूड कुछ डिफरेंट खाने का करता है तो लोग कभी पराठा या फिर पूड़ियां भी बना लेते हैं. वैसे तो पूड़ियां ज्यादातर लोग पार्टी, फंक्शन, त्योहारों पर ही बनाते हैं, क्योंकि इसे बनाने में तेल और समय दोनों ही अधिक लगता है. वहीं, पराठा वीकेंड या डिनर में लोग बनाकर खा लेते हैं. पराठा हो या पूड़ी, बेशक रोटी से कहीं बेहतर स्वाद देता है. इनके साथ सब्जी, रायता, चटनी कुछ भी खाएं, बेहद स्वादिष्ट लगता है. हालांकि, इन्हें बनाने के लिए तेल-घी की जरूरत होती है. ऐसे में यदि पराठा या पूड़ी खाने की बात की जाए, तो कौन है दोनों में से अधिक हेल्दी, ये जानना भी जरूरी है.

पराठा बनाने का तरीका

पराठा खाना अधिकतर लोगों को पसंद होता है. रोटी जहां बिना दाल, सब्जी के खाई नहीं जाती है, घी-तेल में सेका हुआ पराठा आप चटनी, सॉस, चाय या फिर थोड़ी सी सब्जी से भी खा लेते हैं. गेहू के आटे से बनाते हैं पराठा. पराठे को आप सिंपल या नमकीन, स्टफिंग करके बनाते हैं. त्रिभुज आकार में बेलकर इसे तवे पर सेका जाता है और फिर तेल या घी लगा कर गोल्डन ब्राउन होने तक सेक लेते हैं.

पूड़ी बनाने का तरीका

पूड़ी भी गेहूं के आटे का ही हेल्दी होता है. हालांकि, कुछ लोग मैदे के आटे से भी पूड़ियां बनाते हैं, लेकिन मैदा खाना सेहत के लिए ठीक नहीं. यह कब्ज भी करता है. वहीं, गेहू के आटे से बनी पूड़ियां जल्दी पचती भी हैं. पूड़ी बनाने के लिए आटे में अजवायन, कलौंजी, नमक आदि डालकर आटा गूंथते हैं. नमकीन पूड़ी बनाने के लिए प्याज, हरी मिर्च, अदरक, अजवायन, कलौंजी भी डाली जाती है. ये सभी पाचन के लिए हेल्दी हैं. बस, पूड़ी को डीप फ्राई किया जाता है. ऐसे में इसमें तेल का इस्तेमाल अधिक होता है, जो कहीं ना कहीं सेहत के लिए ठीक नहीं है. रोटी-पराठे के मुकाबले पूड़ियां हर दिन खाना हेल्दी ऑप्शन नहीं है. इसे पार्टी-फंक्शन, व्रत-त्योहार या फिर महीने में तीन-चार बार खाना ही ठीक है.

पूड़ी या पराठा दोनों में कौन है हेल्दी

जब आप पराठा बनाते हैं तो इसमें तेल कम यूज होता है, लेकिन पूड़ियों को आप कड़ाही भरकर तेल में छानते हैं. कई बार कुछ लोग बचे हुए तेल में ही दोबारा से पूड़ियां तलने लगते हैं. बार-बार हाई फ्लेम पर पके तेल में खाना बनाना सेहत को नुकसान पहुंचा सकता है. पूड़ी को लोग अक्सर तेज आंच पर तलते हैं, इससे तेल से धुंआ निकलता है, जिससे कार्सिनोजेन्स बनते हैं. यह तेल में मौजूद पौषक तत्वों को नष्ट कर देते हैं. वहीं, जब आप कम आंच पर पराठा सेक कर बनाते हैं तो आटे में मौजूद पोषक तत्व समाप्त भी नहीं होते हैं और पूड़ी की तुलना में अधिक पौष्टिक और हेल्दी होते हैं

पूड़ी बनाने के लिए आप बचे हुए तेल या घी को ही कई बार यूज करते हैं, लेकिन पराठा सेकते समय आप फ्रेश घी, तेल लगाते हैं. एक ही यूज किए गए तेल को दोबारा यूज करने से शरीर में फैट बढ़ सकता है. हाई कोलेस्ट्रॉल हो सकता है, जो हार्ट के लिए नुकसानदायक है.

दिल्लीवासी चुनाव से पहले स्वच्छ हवा के लिए सख्त कदम उठाने की मांग करें

अब जबकि यह खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है, केंद्र और राज्य सरकारों को पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के संबंध में संतुलित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जो वास्तविक दोषी हैं। हर सर्दियों में खेतों में लगी आग से निकलने वाला धुआं दिल्ली को अपनी चपेट में ले लेता है और दिल्ली के आसमान को ढक लेता है। किसान आग जलाना पसंद करते हैं क्योंकि यह उनके खेतों को साफ करने का सबसे सस्ता तरीका है। राज्य सरकारें मांग करती हैं कि केंद्र किसानों को धुआं उत्सर्जन कम करने में सहायता के लिए धन मुहैया कराये, लेकिन यह समस्या हर साल बनी रहती है।दिल्ली के निवासियों को हर साल प्रदूषण का सामना क्यों करना पड़ता है, जबकि शासक वर्ग इसके लिए पड़ोसी राज्यों हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश में पराली जलाने को दोषी ठहराता है? क्या वे इस बात पर बहस करने के बजाय कि पराली जलाने वाली मशीनों और अन्य संबंधित खर्चों का भुगतान कौन करेगा, इसका स्थायी समाधान नहीं खोज सकते? दिल्ली में वायु प्रदूषण का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित सीमा से आठ गुना अधिक है। यह उस स्तर पर पहुंच गया है जहां न्यायपालिका, कार्यपालिका और संसद एक-दूसरे पर दोषारोपण कर रहे हैं और प्रदूषण का गंभीर स्तर जारी है।

अमेरिका में एक महीने की छुट्टी से लौटते हुए, मैं इस सप्ताह आधी रात के बाद दिल्ली पहुंचते ही प्रदूषण संकट की गंभीरता से तुरंत प्रभावित हो गयी। अंधेरे आसमान, धूल की चादर, गर्मी और सांस लेने में कठिनाई ने एक कठोर चेतावनी और कार्रवाई के लिए एक ज़रूरी आह्वान के रूप में मेरा स्वागत किया।

इस सप्ताह दिल्ली में प्रदूषण का स्तर अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। इस ख़तरनाक स्तर के कारण राज्य के अधिकारियों ने आवाजाही सीमित कर दी है और विषाक्त पदार्थों को साफ़ करने के लिए कृत्रिम बारिश को प्रोत्साहित करने की योजना पर चर्चा को फिर से शुरू कर दिया है। इसने शहर को घने भूरे रंग के धुएं में ढकने के कारण स्कूलों और दफ़्तरों को बंद करने के लिए मजबूर किया और तत्काल कार्रवाई की मांग की। बच्चों और वृद्धों में श्वसन संबंधी बीमारियों की संख्या बढ़ रही है, साथ ही अन्य स्वास्थ्य समस्याएं भी। उत्तर में ठंडी सर्दियों में, हर साल धुआं पूरे क्षेत्र को ढक लेता है और आग, निर्माण और कारखानों से निकलने वाले हानिकारक प्रदूषकों को फंसा लेता है। यह समस्या तब और भी बदतर हो जाती है जब किसान नयी फ़सल की तैयारी के लिए चावल की कटाई के बाद अपने खेतों में पुआलको जला देते हैं।हर साल यही या इससे भी बदतर स्थिति सामने आती है, जो समय के साथ ख़तरनाक स्तर तक पहुंच जाती है। नागरिक असहाय महसूस करते हैं जबकि राजनेता दोषारोपण के खेल में लगे रहते हैं। नतीजतन, जनता खराब वायु गुणवत्ता को झेलती है, जो उनके स्वास्थ्य के लिए गंभीर रूप से ख़तरा है। अमीर लोग अक्सर सर्दियों के दौरान गर्म जगहों पर चले जाते हैं, लेकिन बच्चों और वृद्धों को सबसे ज्यादा परेशानी होती है। कई स्कूल बंद हो गये हैं और निवासियों को घर के अंदर रहने की सलाह दी गयी है। निर्माण कार्य रोक दिया गया है और सरकार प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए ऑड-ईवन वाहन उपयोग नीति लागू करने पर विचार कर रही है। हालांकि यह सही दिशा में उठाया गया कदम है, लेकिन संकट की गंभीरता को देखते हुए बिना किसी देरी के प्रभावी समाधान की आवश्यकता है।केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, विश्व स्वास्थ्य संगठन और अन्य निगरानी एजंसियों के अनुसार, दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 1,200 से 1,500 के बीच है। भारत का एक्यूआई 200 से अधिक होने पर खराब, 300 से अधिक होने पर बहुत खराब और 400 से अधिक होने पर गंभीर या खतरनाक श्रेणी में आता है। अनुशंसित एक्यूआईसीमा 0 से 100 के बीच है। यह भयावह स्थिति अंतरराष्ट्रीय यात्रियों और प्रवासी भारतीयों को अपनी वार्षिक यात्राओं की योजना बनाने से हतोत्साहित करती है।सरकारें और राजनेता समस्या के मूल कारण से अच्छी तरह वाकिफ हैं, लेकिन दोषारोपण का खेल खेलते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को प्रदूषण से निपटने का आदेश दिया है। अतीत में, इसने दिल्ली में वायु गुणवत्ता में सुधार के प्रयासों का नेतृत्व भी किया है। इसने शहर में कौन से वाहन चल सकते हैं, इस बारे में नियम तय किये हैं, हवा को प्रदूषित करने वाली कई फैक्ट्रियों को दूसरी जगह ले जाने का आदेश दिया है और उत्सर्जन को कम करने के लिए व्यवसायों को बंद करने का आदेश दिया है। न्यायालय ने सरकार पर कार्रवाई करने का दबाव भी बनाया। गलती क्रियान्वयन में है।पिछले महीने, सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि स्वच्छ हवा एक मौलिक मानव अधिकार है। इसने केंद्र सरकार और राज्य अधिकारियों दोनों को तत्काल कार्रवाई करने का आदेश दिया। हालांकि, वाहनों पर प्रतिबंध, औद्योगिक नियमन और जन जागरूकता अभियान जैसे अधिकांश उपाय, खराब होती वायु गुणवत्ता को रोकने में अधिक प्रभावी होने चाहिए।आलोचक सवाल उठाते हैं कि न्यायालय के फैसले कितने प्रभावी हैं और न्यायपालिका पर कार्यकारी मामलों में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाते हैं। दिल्ली में आम आदमी पार्टी (आप) सरकार को अपने 2024 के घोषणापत्र में पिछले वादों के विपरीत, प्रदूषण को कम करने के वादे शामिल करने चाहिए थे। इसके बजाय, घोषणापत्र में राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) और प्रदूषण को कम करने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया गया। आप ने नागरिकों की भागीदारी की आवश्यकता और प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए इलेक्ट्रिक बसों का उपयोग करने की योजना पर प्रकाश डाला।अब जबकि यह खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है, केंद्र और राज्य सरकारों को पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के संबंध में संतुलित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जो वास्तविक दोषी हैं। हर सर्दियों में खेतों में लगी आग से निकलने वाला धुआं दिल्ली को अपनी चपेट में ले लेता है और दिल्ली के आसमान को ढक लेता है। किसान आग जलाना पसंद करते हैं क्योंकि यह उनके खेतों को साफ करने का सबसे सस्ता तरीका है। राज्य सरकारें मांग करती हैं कि केंद्र किसानों को धुआं उत्सर्जन कम करने में सहायता के लिए धन मुहैया कराये, लेकिन यह समस्या हर साल बनी रहती है। विशेषज्ञों का कहना है कि अब समय आ गया है कि आधे-अधूरे उपायों को छोड़ दिया जाये और व्यापक समाधान लागू किये जाएं। उदाहरण के लिए, ग्रेप-3 को ग्रेप-4 में अपग्रेड किया जाना चाहिए, जिससे ऑड-ईवन नियम को लागू करना आसान हो सके। दिल्ली विधानसभा का चुनाव नजदीक है।

लोगों को इसे चुनावी मुद्दा बनाना चाहिए। इस बीच, दिल्ली के निवासियों को इस मुद्दे पर विचार करना चाहिए।प्रदूषण से निपटने के लिए त्वरित समाधान पर विचार करें, जैसे मास्क पहनना, घर के अंदर हवा को शुद्ध करने वाले पौधे लगाना, तथा अमीर लोगों द्वारा एयरप्यूरीफायर का उपयोग करना, भाप स्नान करना, स्वस्थ भोजन खाना, तथा अपने घरों में उचित वेंटिलेशन सुनिश्चित करना। नागरिकों को प्रदूषण को नियंत्रित करने में मदद करने के लिए अधिकारियों की सहायता भी करनी चाहिए।

संपादकीय

ईवीएम पर फिर उठे सवाल

महाराष्ट्र और झारखंड दोनों ही राज्यों में चुनावी नतीजे शनिवार को सामने आ गए और अब नयी सरकारों के गठन की तैयारी प्रारंभ हो चुकी है। झारखंड में हेमंत सोरेन फिर से मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने जा रहे हैं, जबकि महाराष्ट्र में इन पंक्तियों के लिखे जाने तक यह तय नहीं हो पाया है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी पर एकनाथ शिंदे ही फिर से बैठेंगे या भाजपा इस बार देवेन्द्र फड़नवीस को प्रतीक्षा करने का इनाम देगी। महाराष्ट्र में महायुति के आपसी समीकरण किस तरह तय होंगे, यह देखना भाजपा, शिवसेना शिंदे गुट और एनसीपी अजित पवार गुट का काम है। यह तय है कि महाविकास अगाड़ी को एक बार फिर विपक्ष में ही बैठना पड़ेगा, क्योंकि नतीजे उसकी उम्मीदों के अनुरूप नहीं आए। महायुति को इतनी बड़ी जीत मिलेगी, इस बात पर लगातार हैरानी जताई जा रही है क्योंकि जमीन पर माहौल एमवीए के लिए बना हुआ दिखाई दे रहा था। अब इस पर ईवीएम और चुनाव आयोग द्वारा पेश किए गए मतदान प्रतिशत और गिने गए वोटों में दिख रहे अंतर को लेकर सवाल उठ रहे हैं।

शिवसेना सांसद संजय राउत के हिसाब से यह जनता का सुनाया फैसला नहीं है, वे मांग कर रहे हैं कि एक बार चुनाव मतपत्रों यानी बैलेट पेपर से करवाएं जाएं, तो हकीकत सामने आ जाएगी। कुछ ऐसे ही आरोप कांग्रेस, शरद पवार की एनसीपी और सपा आदि दलों के नेताओं ने भी लगाए हैं। हरियाणा चुनावों में भी कांग्रेस ने इसी तरह ईवीएम में गड़बड़ी के आरोप लगाए थे कि जिन सीटों पर गणना के वक्त ईवीएम की बैटरी 90 प्रतिशत तक चार्ज थी, वहां भाजपा को जीत मिल गई। तब सवाल उठे थे कि किसी भी मशीन की बैटरी प्रयोग में होने के इतनी देर बाद भी 90 प्रतिशत तक चार्ज कैसे रह सकती है। कांग्रेस ने तब कम से कम 20 सीटों में गड़बड़ी के खिलाफ तथ्यों के साथ एक शिकायत चुनाव आयोग में दायर की थी, जिसे फौरन खारिज कर दिया गया। बल्कि इसका जवाब देने में आयोग की तरफ से जो भाषा इस्तेमाल की गई, वह भी उचित नहीं थी। हालांकि अब फिर से हरियाणा कांग्रेस ने 27 सीटों में ईवीएम और आचार संहिता के उल्लंघन जैसी शिकायतों पर आधारित एक याचिका पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय में दाखिल की है। जिस पर सुनवाई होनी है। इधर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका फिर से खारिज की गई, जिसमें मांग की गई थी कि चुनाव बैलेट पेपर से होना चाहिए। साथ ही इसमें यह सुझाव भी दिया गया था कि मतदाताओं को खरीदने की कोशिश करता हुआ अगर कोई उम्मीदवार दोषी पाया जाता है तो उसे पांच साल तक चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य करार करना चाहिए। के एल पॉल की इस याचिका को जस्टिस पी बी वराले और जस्टिस विक्रमनाथ की बेंच ने खारिज तो कर ही दिया, साथ ही कहा कि जब आप चुनाव जीतते हैं तो ईवीएम से छेड़छाड़ नहीं होती और जब हारते हैं तो ईवीएम से छेड़छाड़ होती है।शीर्ष अदालत की तरफ से जो तर्क अपने फैसले में सुनाया गया, वह नया नहीं है। इन चुनावों में भाजपा भी इसी तरह की बात कह रही है। महाराष्ट्र में विपक्ष ईवीएम या अन्य गड़बड़ियों का मुद्दा उठा रहा है तो उसे झारखंड की जीत याद दिलाई जा रही है। हालांकि असल सवाल इसमें गुम हो रहा है कि क्या झारखंड में भाजपा ने हाथ पीछे खींच लिए ताकि महाराष्ट्र की सत्ता बरकरार रखी जाए। झारखंड में इंडिया गठबंधन की जीत से ईवीएम पर सवाल उठने बंद हो जाएंगे, शायद यह सोच भाजपा की थी। लेकिन अब कुछ और उलझे हुए तार सामने आए हैं, जिनसे निष्पक्ष चुनाव के ऊपर लग गए सवालिया निशान बड़े होते जा रहे हैं।महाराष्ट्र में चुनाव आयोग ने मतदान प्रतिशत का अंतिम आंकड़ा 66.05 फीसदी बताया, जो कुल 64,088,195 वोट होते हैं, लेकिन मतगणना में गिने गए कुल वोटों का जोड़ 64,592,508 आया, जो कुल पड़े वोटों से 504,313 अधिक है। पांच लाख वोटों का यह अंतर क्यों और कैसे आया, इसका संतोषजनक दवाब निर्वाचन आयोग को देना चाहिए। कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में बड़े दिलचस्प आंकड़े सामने आए हैं, अष्टी निर्वाचन क्षेत्र में मतदान से 4,538 अधिक वोट गिने गए। यानी जितने वोट पड़े नहीं, उससे ज्यादा गिने गए। वहीं उस्मानाबाद निर्वाचन क्षेत्र में जितने वोट डाले गए और जितने गिने गए, उनमें 4,155 वोटों का अंतर रहा।

धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद से आखिर किसे है दिक्कत

जब संविधान का धर्मनिरपेक्षता का स्वरूप ही एक वर्ग और विचारधारा को पसंद नहीं आया था, तो प्रस्तावना में उसे जोड़ा जाना तो उन्हें नागवार गुजरना ही था। कौन सा है वह वर्ग और कौन हैं ये लोग? निश्चित ही वे लोग जो देश पर बहुसंख्यकवाद को थोपने में यकीन रखते हैं। उनके अनुसार भारत में बहुसंख्यक सम्प्रदाय ही श्रेष्ठ है और दूसरे दोयम दर्जे के हैं। उनके अनुसार नैसर्गिक रूप से बहुसंख्यकों को सारे संसाधनों और अवसरों का लाभ मिलना चाहिये जबकि अन्य का इन पर कोई हक नहीं हो सकता।सुप्रीम कोर्ट द्वारा सोमवार को उन याचिकाओं को खारिज कर दिया गया जिनमें मांग की गयी थी कि संविधान की प्रस्तावना से %धर्मनिरपेक्षता% और %समाजवाद% शब्दों को हटा दिया जाये। 22 नवम्बर को इस सन्दर्भ में दाखिल कई याचिकाओं पर दिये गये निर्णय को सुरक्षित रखा गया था। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना एवं जस्टिस संजय कुमार की बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा कि ये दोनों शब्द संविधान की बुनियाद हैं। उल्लेखनीय है कि 1949 में जब यह संविधान स्वीकृत किया गया था, तब ये शब्द उसकी प्रस्तावना में नहीं थे। उन्हें इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री रहते 1976 में 42वें संशोधन के जरिये जोड़ा गया था। हालांकि धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के तत्व हमारे संविधान की आत्मा में किसी न किसी प्रकार से निहीत थे ही। जस्टिस खन्ना का यह अवलोकन बहुत प्रासंगिक व सटीक है कि भारतीय सन्दर्भों में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के रूप में समाजवाद को देखा जाना चाहिये। संविधान लागू होकर 7 दशक से ज्यादा का वक्त निकल गया है, फिर भी धर्मनिरपेक्षता व समाजवाद के गुणों को संविधान के विभिन्न प्रावधानों एवं व्यवस्थाओं के माध्यम से देश की प्रशासकीय प्रणाली और सार्वजनिक जीवन में समाहित किया गया है। इतने सालों के बाद अगर कोई तत्व इसमें फेरबदल करना चाहते हैं तो उनकी शिनाख्त ज़रूरी है, तथा यह भी समझ लेना आवश्यक है कि आखिर उनका मकसद क्या हो सकता है।अगर पहले धर्मनिरपेक्षता की बात करें तो ऐसा कहना कतई गलत नहीं होगा कि संविधान निर्माताओं को यह बात बहुत अच्छे से पता था कि विविध धर्मों और मान्यताओं वाले इस देश को अगर एक सूत्र में पिरोकर रखना है और सभी नागरिकों के बुनियादी अधिकारों को बरकरार रखना है तो राज्य को चाहिये कि वह सभी धर्मों से एक सी दूरी बनाकर रखे। राज्य का खुद का कोई धर्म नहीं होगा लेकिन वह सभी लोगों की धार्मिक आजादी को सुनिश्चित करेगा। यही एक व्यवस्था है जो इन दोनों ज़रूरतों को एक साथ पूरा कर सकती है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से होकर गुजरने वाले राष्ट्र निर्माताओं ने देखा भी था कि धार्मिकता ने देश का कितना नुकसान किया था। इसलिये महात्मा गांधी समेत तमाम वे बड़े नेता, जिन्होंने आजादी के बाद देश की कमान सम्हाली थी, संविधान का चरित्र धर्मनिरपेक्ष ही रखना चाहते थे। ये शब्द चाहे संविधान लागू होने के तकरीबन 25 वर्ष बाद जुड़े हों लेकिन उसमें प्रदत्त मूलभूत अधिकारों और राज्य के नीति निर्देशक तत्वों से साफ है कि वे उसका स्वरूप प्रारम्भ से ऐसा ही चाहते थे। 42वें संशोधन को तो स्पष्टोक्ति मात्र ही कहा जाना चाहिये।जब संविधान का धर्मनिरपेक्षता का स्वरूप ही एक वर्ग और विचारधारा को पसंद नहीं आया था, तो प्रस्तावना में उसे जोड़ा जाना तो उन्हें नागवार गुजरना ही था। कौन सा है वह वर्ग और कौन हैं ये लोग? निश्चित ही वे लोग जो देश पर बहुसंख्यकवाद को थोपने में यकीन रखते हैं। उनके अनुसार भारत में बहुसंख्यक सम्प्रदाय ही श्रेष्ठ है और दूसरे दोयम दर्जे के हैं। उनके अनुसार नैसर्गिक रूप से बहुसंख्यकों को सारे संसाधनों और अवसरों का लाभ मिलना चाहिये जबकि अन्य का इन पर कोई हक नहीं हो सकता। स्वतंत्र भारत की पिछली सारी सरकारों ने इस सिद्धांत को ही स्वीकार किया कि देश सभी का है और सभी को यहां के संसाधनों-अवसरों का लाभ उठाने का एक जैसा अधिकार है।ये नामंजूर हुई याचिकाएं हों या इस सम्बन्ध में दिये जाने वाले चुनावी नारे एक बड़ी खाई बना चुके हैं। धर्मनिरपेक्षता के खिलाफ बोलना दोहरे उद्देश्यों को पूरा करता है। एक ओर तो ध्रुवीकरण होता है तो वहीं वह समाजवाद की धारणा को भी चुनौती देता है क्योंकि समाजवाद का आधार समानता का सिद्धांत है। हालांकि उसके बहुत से और भी आयाम हैं जो समाज के साथ-साथ देश के राजनीतिक एवं आर्थिक क्षितिजों का भी स्पर्श करते हैं।ऐसे ही, समाजवाद को लेकर बड़ी भ्रांतियां है। भ्रांति से भी ज्यादा नासमझी है। भारतीय प्रणाली में समाजवादी सिद्धांत का समावेश मूलतः प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू की देन कही जा सकती है। यूरोप में उच्च शिक्षा ग्रहण करने तथा उसके बाद सार्वजनिक जीवन में काम करने के दौरान उन्हें यूरोपीय समाजवाद के अध्ययन का मौका मिला था। गांधी के असर और आजादी के संघर्ष के दौरान देश को करीब से उन्हें जानने का जो मौका मिला, सम्प्रभु भारत में उन्होंने मध्यम मार्ग अपनाते हुए मिश्रित अर्थव्यवस्था को लागू किया। वरना उन्हें साम्यवाद अधिक आकृष्ट करता था लेकिन उन्हें कालांतर में समाजवाद की यह खूबी नज़र आई होगी कि समानता में राज्य की भूमिका अहम है। इसलिये उन्होंने शासकीय व्यवस्था को उसी के अनुरूप ढाला था। लम्बी गुलामी से विपन्न हो चुके भारत के कायाकल्प में समाजवाद ने बड़ी भूमिका निभाई- चाहे वह आधी-अधूरी ही अपनाई गयी हो। देश में पूंजीवाद के खिलाफ तनकर जो विचारधाराएं खड़ी रही उनमें साम्यवाद के अलावा समाजवाद ही था। भारतीयों को कम्युनिस्ट विचारधारा कुछ ज्यादा ही लाल लगती रही है। इसलिये समाजवाद उन लोगों की पहली पसंद थी जो कांग्रेस और नेहरूवियन दर्शन को नापसंद करते थे। हालांकि संसद के शुरुआती दौर में साम्यवादी सांसद ही उनके प्रमुख विरोधी हुआ करते थे। जो लोग धर्मनिरपेक्षता के खिलाफ होते हैं, वे अपने आप समाजवाद के भी विरोध में दिखाई देंगे क्योंकि समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के साफ अंतर्संबंध हैं।यही कारण है कि सुप्रीम कोर्ट में जो याचिकाएं लगाई गई थीं (जिन्हें न्यायालय ने अस्वीकृत किया है) उनमें इन्ही दो शब्दों (धर्मनिरपेक्षता व समाजवाद) का विरोध है। धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद दोनों ही समानता में विश्वास करते हैं जिससे एक वर्ग का दोनों से एक साथ विरोध हो जाता है। 2014 में जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई और उसने दो और चुनाव जीतकर सरकारें बनाई हैं, तो ऐसे तत्वों के हौसले बुलन्द हैं। हालांकि इन याचिकाकर्ताओं में सुब्रमण्यम जैसे लोग भी हैं जो कहने को तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विरोधी हैं लेकिन कट्टरता में उनके एकदम समांतर हैं। ऐसे लोगों का भरोसा भारत को एक मजहब विशेष की पहचान वाला देश बनाने में है।

उसकी शुरुआत धर्मनिरपेक्षता का विरोध करने से होती है। बताया यह जाता है कि अब तक, खासकर कांग्रेस के राज में मुस्लिम तुष्टीकरण होता रहा है। सभी धर्मों के साथ एक जैसा व्यवहार और सबसे एक जैसी दूरी के सिद्धांत को गलत ढंग से पेश किया जाता है। दरअसल यह एक धर्म विशेष तथा उनके अनुयायियों के प्रति घृणा फैलाने का उपकरण बन गया है। इसकी पराकाष्ठा एक ओर नेहरू के पुरखों को मुस्लिम बताया जाना है, तो दूसरी ओर 11 वर्षों तक शासन करने के बाद मोदी लोगों को यह कहकर डराते हैं कि कांग्रेस की सरकार आई तो महिलाओं के मंगलसूत्र और मवेशी मुसलिमों को दे दिये जायेंगे।वैसे शीर्ष न्यायालय के इस फैसले के बाद यह बहस बन्द हो जानी चाहिये और सरकार को भी आश्वस्त करना चाहिये कि ये शब्द नहीं हटेंगे, लेकिन सम्भवतः ऐसा नहीं होगा क्योंकि धर्मनिरपेक्षत और समाजवाद दोनों ही नये निज़ाम की आँखों में न केवल चुभते हैं बल्कि अब ये दोनों शब्द ध्रुवीकरण करने, पूर्ववर्ती शासकों को बदनाम करने और चुनाव जीतने के उपकरण बनकर रह गये हैं। इसलिये इन शब्दों के खिलाफ़ याचिकाएं दायर कराई जाती हैं अथवा लोगों को भड़काया जाता है- जिस प्रकार आरक्षण खत्म करने या संविधान बदलने की बातें होती हैं।

घर के लिए खुद तैयार करें स्पैशल कर्टेन

घर छोटा हो या बड़ा इससे कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन यह स्टाइलिश और अच्छे तरीके से सजा-संवरा होना चाहिए ताकि घर का कोना-कोना आपको आकर्षित करें। बढ़िया पेंट, दरवाजे-खिड़कियां और मॉडर्न जमाने का फर्नीचर घर की शोभा बढ़ाते हैं। एक और चीज जो घर की सजावट में अहम रोल निभाती है, वह है कर्टेन यानी की पर्दे। इसके बिना घर खाली खाली सा लगता है। यह डैकोरेशन के साथ-साथ कमरों के पार्टिशन और प्राइवेसी को भी बनाए रखने में मदद करते हैं।

वैसे तो आपको मार्किट में बहुत सारे डिजाइन्स और स्टफ में हर क्लर का पर्दा आसानी से मिल जाएगा आप ऑनलाइन साइट्स से भी अपने मनपसंद पर्दे चूज कर सकती है और मंगवा सकती है लेकिन अगर आपको लगता है कि यह आपके बजट में फिट नहीं बैठ रहे और काफी महंगे पड़ रहे हैं तो घबराने की जरूरत नहीं है क्योंकि आप घर पर ही पर्दे बना सकती हैं जो काफी सस्ते भी पड़ेंगे। वैसे यह काम आसान नहीं है इसके लिए आपको मेहनत तो करनी ही पड़ेगी। चलिए आज हम आपको ईजी वे बताते हैं, जिसकी मदद से आप आसानी से कर्टेन तैयार कर सकते हैं। चलिए, जानते हैं पर्दे बनाने के तरीके- सबसे पहले आपको कर्टेन का सहीं नाप और सिलाई करनी आनी चाहिए। आजकल तो फ्रिल वाले और डबल कर्टेन काफी ट्रैंड में चल रहे हैं। इसी के साथ कर्टन का चुनाव पेंट के हिसाब से करें। अगर कर्टेन किसी और रंग का और पेंट किसी और रंग का होगा तो पूरा कमरा अटपटा सा लगेगा लेकिन हां आप कंट्रास्ट मैचिंग कर सकते हैं जैसे- ग्रे लाइट दीवारों के साथ ग्रे डार्क कर्टेन। -अगर आपके घर में पुरानी साड़ियां पड़ी हैं तो आप उनका इस्तेमाल कर्टेन के तौर पर कर सकते हैं। सिल्क की साड़ियों से बने पर्दे बहुत ही ग्रैसफुल लगते हैं। सिंगल टोंड शिफॉन की साड़ी पर्दों के लिए सबसे बेस्ट मानी जाती हैं क्योंकि यह घर के फर्नीचर से मिक्स एंड मैच हो जाएंगी। -वैसे आजकल तो सर्दी के मौसम में शनील (Shannile Applique) के कर्टेन भी खूब ट्रैंड में हैं। यह देखने में तो आकर्षक लगते ही हैं साथ ही हवा से बचाव करते हैं, जिससे कमरा गर्म रहता है। अगर आप शनील के कर्टेन नहीं लगाना चाहते तो इसकी जगह पर आप किसी मोटे स्टफ का इस्तेमाल कर सकते हैं। आजकल लोग इस तरह के कर्टेन को ज्यादा प्रेफर करने लग गए हैं क्योंकि यह सिंपल सॉबर और डिसेंट सी लुक देते हैं।

- आपके पास ऐसे बहुत सारे दुपट्टे होंगे, जिसके सूट आप पहनकर खराब कर चुके हैं। इन्हें बेकार मत जाने दें। 3-4 दुपट्टों को आपस में मिलाकर पर्दों के रूप में इस्तेमाल करें। - स्टॉल्स या पुरानी चादरों से भी आप घर के लिए सस्ते पर्दे बना सकते हैं। आप 2 से 3 चादरों या स्टॉल्स को आपस में मिक्स करके भी पर्दे तैयार कर सकते हैं। इन्हें आप चैक या स्ट्रैप्स स्टाइल में भी तैयार करें जो देखने में भी बहुत ही क्लरफुल लगेंगे। दूसरा इन पुरानी चीजों का किसी अच्छी जगह पर इस्तेमाल होता है। - अगर आप चाहते हैं कि कमरों में पर्दे भी लगें हो और रोशनी भी पूरी रहे तो पतले कपड़े में कर्टेन लगाएं और लाइट क्लर को प्रैफर करें। -पहले लोग मेजपोश और सोफों को कवर करने के लिए क्रोशिए से बने छाड़ से सजाते थे लेकिन अब तो क्रोशियों के पर्दे भी खूब पसंद किए जा रहे हैं। ये आपके घर को आर्टिस्टिक लुक देते हैं।

इस तरह के केमिकल को घर में कभी न रखें, नही तों...

घर की साफ-सफाई के लिए हम सभी बाजार से बहुत से ऐसे प्रोडक्ट्स लाते हैं जिनसे सफाई आसानी से हो सके। पर हम सब यह नहीं जानते कि इन प्रोडक्ट्स को घर पर रखना हमारी सेहत के लिए अच्छा नही होता क्योंकि इन उत्पादों में बहुत से ऐसे रसायन विषाक्त छुपे होते है जिनके कारण घर प्रदूषित होता है। आज हम आपको कुछ ऐसे प्रोडक्ट्स के बारे में बताएगे जिनहे आप घर पर कभी न रखें।

खतरनाक केमिकल प्रोडक्ट

1. बाथरूम में टाइल क्लीनर हम सभी जानते है कि घर में सबसे ज्यादा साफ-सफाई की जरुरत बाथरूम में होती है। बाथरूम को साफ करने के लिए हम सभी बहुत से हाईड्रोक?लोरिक, एसिड और केमिकल आदि का उपयोग करते है। पर आपके बता दें कि इन सब के उपयोग से आपको अस्थमा की दिकत हो सकती है और आपको लीवर भी डैमेज कर सकते हैं। इस लिए आप इसे साफ करने के लिए सिरका, वॉशिंग सोडा या बोरॉक्स का प्रयोग कर सकते है।

2. क्लीनर और सोप

क्लीनर में ऐसे बहुत से रसायन पाए जाते है जो कि प्रतिरक्षा प्रणाली, प्रजनन शक्ति को कमजोर करता है। उसकी जगह पर आप साधारण साबुन या एंटीबैक्टीरियल सोप से ही हाथ धो सकते है।

3. एयर फ्रेशनर

हम सभी घर को महकाने के लिए जिस रूम फ्रेशनर का इस्तमाल करते हैं वह हमारे लिए अच्छे नही होते है। इसका उपयोग करने से हमें एलर्जी, त्वचा रोग, म्यूकस मेंबरेन में जलन, जोड़ो और सीने मे दर्द पैदा हो सकता है। ऐसे मे आप घर में फ्रेश हवा को अंदर लाने के लिए दरवाजों व खिड़कियां खोल कर रखें। अगर आप घर को महकाना चाहती है तो आप फूलों का इस्तमाल भी कर सकती है।

4. डिशवॉशर

घर में बर्तनों को साफ करने के लिए जिस डिशवॉशर का हम उपयोग करते है अगर वह सूखा है तो उसका प्रयोग न करें क्योंकि इसे हमारी आंखों में तकलीफ, त्वचा में जलन और खुजली होनी शुरु हो जाती है। इसलिए हमेशा बाजार से अच्छी क्वालिटी के डिटर्जन्ट डिशवॉशर लाकर ही प्रयोग करें।

5. कार्पेट को साफ करने के लिए क्लीनर कार्पेट या गलीचे को साफ करने के लिए जिस क्लीनर का हम उपयोग करते है उनमें ड्राय क्लीनिंग के लिए प्रयोग होने वाला केमिकल इस्तमाल होता है जो कि इंसान के लीवर, किडनी और नर्वस सिस्टम पर काफी बुरा असर डालता है। ऐसे में आप कार्पेट या गलीचे को साफ करने के लिए नमक, फरूट जूस या वाइन का इस्तेमाल कर सकते है।

एक बार पहने हुए कपड़ों की इस तरह से करें संभाल...

अकसर हम सभी कपड़ों को पहनने के बाद उतार कर ऐसे ही अलमारी में रख देते हैं, पर हमें ऐसे नही करना चाहिए क्योंकि उतारे हुए कपड़ों में बहुत से संक्रमण होते हैं। अगर आपके कपड़ों में पसीने की गंध नही आ रही तो इसका मतलब यह नहीं है कि अपके कपड़ें दुबारा पहनने के लायक है। अगर आप इन कपड़ों को ऐसे ही पहन लेंगे तो आप बीमार भी हो सकते है। तो आइए जानते है इन कपड़ो की संभाल करने के बारे में।

1. अगर आप पहने हुए कपड़े को उतारने के बाद में अल्मारी में रखते है तो ऐसा न करें क्योंकि उन कपड़ों को पहनने से ऐसे संक्रमण आ जाते हैं जो दुसरे कपड़ो में भी फैल सकते है। इसलिए पहने हुए कपड़ो को उतार कर अलमारी में रखने की जगह धूप में टांग कर सूखाएं।

2. अगर मौसम ठीक न हो और सूरज की रौशनी न मिल रही हो तो उतारे हुए कपड़ो को हैंगर में टांग कर पखे की हवा से सूखा सकते है। ऐसे में आपके कपड़ों में बदबू नहीं रहेंगी।

3. कपड़ो को सुखाने के लिए धूप में सिर्फ एक घंटे तक ही रखें क्योंकि ज्यादा समय तक धूप में रखने से कपड़ों का रंग खराब हो सकता है। कपड़े के सूख जाने पर अलग अलमारी में ही रखें।

4. अगर कपड़ो को ऐसे ही उतार कर छोड देगे तो आपके कपड़े दुबारा पहनने के लायक नहीं रहते।

5. अपने घर में कोई ऐसी जगह जैसे कि कोई खूंटी या फिर दरवाजे के पीछे लगी खूंटी हो तो उस पर उतारे हुए कपड़ो को लटका सकती है। ऐसा करने से गंदे कपड़े साफ कपड़ों के साथ नहीं मिल पाएंगे।

लकड़ी के बर्तनों का चिपचिपापन हटाने के लिए अपनाएं ये आसान से टिप्स

अकसर देखा गया है कि किचेन में जब लकड़ी के बर्तनों पर दाग लग जाते है तो वह आसानी से नहीं निकलते हैं। ऐसे में बर्तनों का नया पन खो जाता है। कभी-कभी ऐसे बर्तनों में से सब्जियों की गंध बहुत ज्यादा आती है जिससे बनाई जाने वाली दुसरी सब्ज़ी में से भी उसकी महक आती है। आज हम आपको कुछ स्पेशल टिप्स देंगे जिससे अपनाकर आप घर पर आसानी से लकड़ी के बर्तनों की गंध को दूर करके उनहें चमका सकते है।

1. लकड़ी के बर्तनों को नींबू से साफ करें

अगर लकड़ी के बर्तनों में से बहुत ज्यादा गंद आती है तो आप नींबू लेकर उसके रस को निकाल लें। अब इसें गर्म पानी को मिला कर इसकें घोल में बर्तन को डुबों कर 15 मिनट कर रख दें। धोने के बाद में इसे सूखाने के लिए सूती कपड़ा लेकर इसे पोंछ दें।

2. सिरका और शहद

कभी-कभी बर्तन इतने ज्यादा गंदे हो जाते है कि साफ करने में बहुत दिकत आती है। ऐसे में आप थोड़ा सा सिरका लेकर उसमें शहद मिला कर दोनों का मिश्रण बना लें। अब इस मिश्रण में सूती कपड़े को भिगो कर बर्तनों को अच्छे से रगड़ें।ऐसे करने से आपके बर्तनों में चमक भी आ जाएगी। धोने के बाद में आप इन बर्तनों को धूप में भी सुखा सकते है।

3. पानी में नमक डालकर

आप पानी उबले हुए पानी में नमक डालकर इन बर्तनों को 5 मिनट के लिए भिगो कर रख दें। बाद मे उनहे निकाल कर आप किसी कपड़े से पोंछ कर सूखने के लिए धूप में रख दें।

4. साइट्रस फरूट

साइट्रस फरूट में साइट्रस की मात्रा ज्यादा होती है, जिसके कारण वह खट्टे होते हैं। इसके खट्टे से भी आप लकड़ी के बर्तनों को साफ कर सकती है।

5. बेकिंग सोडा में नींबू का रस

इन लकड़ी के बर्तनों में से गंध और चिपचिपापन हटाने के लिए आप एक कटोरी में बेकिंग सोडा और नींबू का रस लोकर बर्तनों को इस मिश्रण से साफ करें। साफ करने के बाद इसकी शाइन नए जैसे बनाए रखने के लिए इन बर्तनों को धूप में सूखाएं।

6. पानी

आप जब भी लकड़ी के बर्तनों को साफ करे तो ध्यान दे कि पानी गुनगुना होना चाहिए। ऐसा करने से गंध और चिकनाई वाले बर्तन आसानी से साफ हो जाते है और समय भी कम लगता है।

जानकारी

सर्वाइकल के दर्द से छुटकारे के लिए योग बेहतर उपाय

ढ़ की हड्डी के कमजोर होने के कारण गर्दन और कंधों में दर्द होता है, जिसे सर्वाइकल स्पॉन्डिलाइटिस की समस्या कहा जाता है। आम भाषा में लोग इसे सर्वाइकल का दर्द कहते हैं। सर्वाइकल की समस्या महिलाओं में अधिक पाई जाती है, क्योंकि ज्यादातर महिलाओं में कैल्शियम की कमी पाई जाती है, जिसके कारण हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। आमतौर पर ये समस्या उम्र बढ़ने पर हड्डियों में आने वाली कमजोरी सेा होती है।

इन दिनों लोगों में सर्वाइकल की समस्या काफी बढ़ गई है, क्योंकि बैठने वाली जॉब के कारण लोगों की रीढ़ की हड्डी और गर्दन पर दबाव काफी बढ़ गया है। सर्वाइकल के दर्द के कारण व्यक्ति को बैठने, लेटने, सोने और रोजमर्रा के कामों में बहुत परेशानी होती है। भारत की बात करें तो एक मैगजीन में छपी एक खबर के मुताबिक 53 में से 1 भारतीय महिलाएं सर्वाइकल से पीड़ित हैं और लगभग 17 महिलाओं की इससे मौत हो जाती है। सर्वाइकल के दर्द से राहत पाने के लिए योगासन बहुत मददगार हो सकते हैं।

शरीर को फुर्तीला बनाने के लिए योग एक अच्छा विकल्प है। ऐसे ही कई बार जब हमें झुकना पड़ता है, तब हमारी पीठ और गर्दन में दर्द होने लगता है। इस दर्द का सिर्फ एक कारण है, वो है हमारी रीढ़ की हड्डी कमजोर और इसमें लचीलापन न होना। अगर हमारी रीढ़ की हड्डी में लचीलापन होगा तो हमारा शरीर अधिक सक्रिय होने लगेगा। इसलिए रीढ़ की हड्डी में लचीलापन होना आवश्यक है। अगर आप रीढ़ की हड्डी में लचीलापन लाना चाहते हैं तो आपको मर्जरासन करना चाहिए। रीढ़ की हड्डी में लचीलापन लाने के लिए मर्जरासन बेहद फायदेमंद है।

मर्जरासन करने का तरीका: मर्जरासन करने के लिए अपने घुटने जमीन पर टिका लें। इसके बाद अपने हाथों की मदद से नितंब को ऊपर की ओर उठा लें। इस अवस्था में गहरी सांस लें और अपनी क्षमतानुसार इस अवस्था में बने रहें। इस आसन के नियमित अभ्यास से आपकी रीढ़ की हड्डी लचीली हो जाएगी।

मर्जरासन के लाभ: मर्जरासन करने से पाचन क्रिया दुरुस्त होती है। इस आसन को करने से रीढ़ की हड्डी में लचीलापन आने लगता है। मर्जरासन कब्ज की समस्या का रामबाण इलाज है।

रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी से होता है एनीमिया, जानें इससे होने वाले नुकसान, लक्षण और बचाव। चूंकि देश में 55 प्रतिशत महिलाएं एनीमिया यानी रक्ताल्पता की समस्या से ग्रस्त हैं, जो उनकी सेहत के लिए बहुत नुकसानदेह है। क्यों होती है ऐसी समस्या और कैसे करें इससे बचाव, आइए जानते हैं।

रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी से होता है एनीमिया

जानें इससे होने वाले नुकसान, लक्षण और बचाव

यह समस्या किसी स्त्री के जीवन को किस तरह प्रभावित करती है?

अगर किसी महिला के रक्त में हीमोग्लोबिन का लेवल 12 और पुरुष में 13 ग्राम से कम हो, तो उसे एनीमिया से ग्रस्त माना जाता है। वैसे तो पुरुषों में भी एनीमिया के लक्षण पाए जाते हैं पर स्त्रियों को यह समस्या ज्यादा परेशान करती है। दरअसल मासिक चक्र के दौरान अधिक रक्तस्राव इसकी प्रमुख वजह है। इसके अलावा पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण अधिकतर स्त्रियां अपनी सेहत और खानपान पर ध्यान नहीं देतीं, जिसकी वजह से उनके शरीर में खून की कमी हो जाती है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जागरूकता के अभाव में आज भी कुछ लोग बेटियों के पोषण पर ध्यान नहीं देते, जिससे स्कूली छात्राओं के शरीर में खून की कमी हो जाती है। एनीमिया को अकसर लोग निर्धनता से जोड़कर देखते हैं, जबकि कई बार शहरों में रहने वाली शिक्षित स्त्रियां भी रक्ताल्पता से ग्रस्त होती हैं। एक सर्वे के मुताबिक, अगर बात करें तो भारत में 58.6 प्रतिशत बच्चे, 53.2 प्रतिशत गैर-गर्भवती महिलाएं और 50.4 प्रतिशत गर्भवती महिलाएं एनीमिक पाई गईं। भारत 50 वर्षों से एनीमिया नियंत्रण कार्यक्रम होने के बावजूद बीमारी का सबसे अधिक बोझ वहन करता है।

गर्भावस्था के दौरान शरीर में हीमोग्लोबिन का स्तर कितना होना चाहिए?

प्रेग्नेंसी के दौरान स्त्री के यूट्रस और उसके आसपास हिस्सों का तेजी से वॉल्यूम एक्सपेंशन हो रहा होता है। इसके साथ ही गर्भस्थ शिशु को भी मां के शरीर से ही आहार मिलता है। इसीलिए प्रेग्नेंसी के तीसरे चरण में स्त्री के हीमोग्लोबिन के स्तर में 1-2 ग्राम की गिरावट आ जाती है। इसीलिए कमीव करने से पहले स्त्री के शरीर में हीमोग्लोबिन का स्तर 12 ग्राम से अधिक होना चाहिए और सभी स्त्रियों को शादी के बाद हर तीन महीने के अंतराल पर सीबीसी यानी टोटल ब्लड काउंट टेस्ट जरूर करवाना चाहिए।

एनीमिया की वजह से गर्भावस्था में क्या दिक्कतें हो सकती हैं?

इससे मिसकैरेज की आशंका बढ़ जाती है। गर्भस्थ शिशु का ब्रेन सहित पूरे शरीर का विकास सही ढंग से नहीं हो पाता, प्रीमैच्योर डिलीवरी या जन्म के समय शिशु के मौत आशंका बढ़ जाती है।

शरीर को सही ढंग से आयरन का प्रदान करने के लिए क्या खाएं?

शरीर में आयरन का अवशोषण सही हो इसके लिए आयरन युक्त खाद्य पदार्थों के साथ संतरा, नींबू, चकोतरा और मौसमी जैसे फलों का सेवन करना चाहिए। आयरन के साथ कैल्शियम का इस्तेमाल न करें। इससे ये दोनों ही तत्व शरीर को पर्याप्त पोषण नहीं दे पाते। आयरनयुक्त फलों या सब्जियों के साथ किसी भी मिल्क प्रोडक्ट का सेवन नही करना चाहिए। फल या हरी पत्तेदार सब्जियां खाने के दो घंटे पहले या बाद में दूध-दही जैसे पदार्थों का सेवन किया जाए।

एनीमिया के लक्षणों की पहचान कैसे करें?

अकसर थकान, कमज़ोरी, आंखों के आगे अंधेरा छाना, चक्कर आना, निस्तेज त्वचा, हमेशा नींद आना, आंखों का भीतरी हिस्सा ज्यादा सफेद नजर आना आदि। सामान्य स्वस्थ व्यक्ति की हथेलियों, तलवों और नाखूनों में हल?का गुलाबीपन होता है लेकिन एनीमिया होने पर इन हिस्सों की रंगत बिलकुल सफेद पड़ जाती है।

एनीमिया से बचाव के लिए क्या करना चाहिए?

अपनी डाइट में केला, सेब, अनार, खजूर, गुड़, मूंगफली, बादाम, चना, गाजर, चुकंदर के अलावा हरी पत्तेदार सब्ज़ियों को प्रमुखता से शामिल करें। हमेशा लोहे की कड़ाही में सब्ज़ियां पकाएं, इससे भोजन में आयरन की मात्रा बढ़ जाती है। हरी सब्ज़ियों को काटने के बाद न धोएं, इससे उससे पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं।

डायबिटीज में आयरन कैसे प्राप्त करें?

ऐसी स्थिति में सीमित मात्रा में खट्टे फल अपनी डाइट में शामिल करें। खजूर व गुड़ न खाएं, लेकिन चना, राजमा, बादाम, मूंगफली, रागी के अलावा सभी हरी पत्तेदार सब्जियां आयरन और प्रोटीन से भरपूर होती हैं। इनका सेवन दोनों समस्याओं को नियंत्रित करता है।

इसका उपचार कैसे होता है?

ऐसी स्थिति में आमतौर पर डॉक्टर आयरन सप्लीमेंट लेने की सलाह देते हैं। गंभीर स्थिति में आईवी (इंट्रावेनस) मेडिसिन के जरिए भी आयरन का डोज दिया जाता है, जिससे हीमोग्लोबिन का स्तर सामान्य हो जाता है, लेकिन एक्सपर्ट की सलाह के बगैर आयरन सप्लीमेंट का सेवन न करें।

सेहत

स्ट्रांग दिखाने के चक्कर में डिप्रेशन में आ रहे लड़के

एक आम जुमला है कि मर्द को दर्द नहीं होता। 1985 में अमिताभ बच्चन की फिल्म 'मर्द' से यह डायलॉग ज्यादा लोकप्रिय हुआ। समाज में पुरुषों की ऐसी छवि गढ़ी गई है कि मर्द रोता नहीं, क्योंकि रोना तो लड़कियों का काम है। अपने आपको 'मर्द' साबित करने के चक्कर में पूरी दुनिया में पुरुष खुद को इस छवि से बाहर नहीं निकाल पा रहे हैं और भयानक अवसाद के शिकार हैं। शारीरिक रूप से मजबूत दिखने के लिए स्टेरायड लेने की प्रवृत्ति भी युवा लड़कों में बढ़ी है। ऐसे पुरुषों को विश्व स्वास्थ्य संगठन की दो टूक सलाह है - रो लेंगे तो अच्छे से जी लेंगे।

देश में 26 फीसदी पुरुष खुदकुशी करते हैं, जबकि महिलाएं 16.4 प्रतिशत

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मानसिक स्वास्थ्य पर एक रिपोर्ट जारी की। इसके हिसाब से भारत में हर दस हजार लोगों में से 25.8 प्रतिशत यानी 2580 पुरुष आत्महत्या करते हैं। इनका आयु वर्ग 15 से 29 साल है। प्रति 10 हजार में महिलाओं के खुदकुशी करने का प्रतिशत 16.4 है। इस रिपोर्ट में भारत को ऐसे देशों की श्रेणी में 22वां स्थान दिया गया है, जहां पुरुष अन्य के मुकाबले ज्यादा आत्महत्या करते हैं।

दुनिया में भी जान देने वालों में पुरुष अधिक : विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, हर 40 सेकंड में एक आत्महत्या होती है। पूरी दुनिया में हर साल 8 लाख लोग आत्महत्या करते हैं, जिसमें पुरुषों की संख्या महिलाओं से अधिक है।

भावनाएं ज़ाहिर नहीं करने से कई तरह के मर्ज : भावनाएं साझा न करने से पुरुषों में मानसिक अवसाद, सीजोफ्रेनिया, डिमेंशिया, अति सक्रियता जैसी बीमारियां हो जाती हैं। नई दिल्ली के इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन बिहेवियर एंड एल्लाइड साइंसेज (इहबास) ने अध्ययन में पाया कि सीजोफ्रेनिया के 25 प्रतिशत मरीजों के खुदखुशी कर लेने का खतरा होता है।

बेरोजगारी बढ़ने पर ज्यादा खुदकुशी : ब्रिटेन में पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य पर काम कर रही संस्था सीएएलएम का कहना है कि पुरुषों में बेरोजगारी बढ़ने पर आत्महत्या दर बढ़ती है। इस संस्था ने 2015 में किए अध्ययन में पाया कि हर एक प्रतिशत बेरोजगारी दर बढ़ने पर आत्महत्या करने की दर में 0.79 प्रतिशत वृद्धि होती है। अमेरिकी जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ कहता है कि खुदकुशी के लिए पुरुष बंदूक और फांसी जैसे तरीके अपनाते हैं,वहीं महिलाएं जहर खाने, नस काटने या नदी में डूबने जैसे तरीके अपनाती हैं।

भारत, आस्ट्रेलिया और ब्रिटेन ने उठाए विशेष कदम

- **भारत में 2017 में पहला कानून बना:** मानसिक अवसाद की स्थिति की गंभीरता को देखते हुए 2017 में भारत सरकार ने मानसिक स्वास्थ्य कानून लागू किया। अभी इस ओर और अधिक जागरूकता लाए जाने की जरूरत है।
- **ऑस्ट्रेलिया में विशेष सहायता केंद्र:** यहां हर दस हजार में 12.6 फीसदी पुरुष आत्महत्या कर रहे थे। इसके समाधान के लिए यहां आर यू ओके प्रोग्राम चलाया गया। इसके लिए अवसाद ग्रस्त पुरुषों की काउंसलिंग के लिए 24 घंटे क्राइसिस सेंटर खुले।
- **ब्रिटेन ने आत्महत्या रोधी मंत्रालय खोला :** 2018 में ब्रिटेन ने आत्महत्या के मामलों की गंभीरता को देखते हुए देश में आत्महत्या रोधी मंत्री नियुक्त किया।

क्या कहता है अध्ययन

एक अध्ययन में माना गया है कि दुनियाभर का पितृसत्तात्मक समाज लड़कों या पुरुषों को 'मजबूत' बनाने के लिए अनुकूलित करता है। बचपन से ही लड़कों को यह बताया जाता है कि उन्हें लड़कियों की तरह रोना नहीं है, इतना ही नहीं उन्हें अपने संघर्ष और दुख जाहिर नहीं करने हैं। जेंडर अध्ययन कहता है कि महिला और पुरुष को खास तरीके में ढालने की सामाजिक संरचना के कारण ही पुरुष आज मानसिक अवसाद में है।

महिलाएं 64 तो पुरुष मात्र 17 बार रोये

हॉलैंड के टिलबर्ग विश्वविद्यालय ने 37 देशों के पांच हजार लोगों के भावनात्मक रवैए पर अध्ययन किया। पाया गया कि सालभर में महिला 30 से 64 बार रोई, जबकि पुरुषों के रोने के अवसर 6 से 17 ही थे। इसके साथ ही पुरुषों के रोने की अवधि और आंसुओं की मात्रा भी महिलाओं से कम थी। शोध में निष्कर्ष निकला कि पुरुषों के रोने की आदत देशों के सामाजिक-आर्थिक पालन पोषण के तरीकों पर निर्भर थीं। यह भी पाया गया कि अमीर देशों में पुरुष खुलकर रोते हैं।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष चू चे चो ला ली लू ले लो आ

जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। योग्यताएं सम्मान दिलायेगी। शुभांक-3-5-7

वृष इ उ ए ओ वा वी वू वे वो

श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। विद्यार्थियों को लाभ। शुभांक-3-5-6

मिथुन का की कू घ ङ छ के को हा

समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। महत्त्वपूर्ण कार्यों को आज ही निबटा लें उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। शुभांक-2-4-6

कर्क ही हू हे हो डा डी डू डे डो

परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। संतान की उन्नति के योग हैं। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। शुभांक-3-6-7

सिंह मा मी मू मे मो टा टी टू टे

जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। महत्त्वपूर्ण निर्णय के लिए दूरदर्शिता से काम लें। स्वास्थ्य नरम होगा। शुभांक-3-6-8

कन्या टो पा पी पू ष ण ठ पे पो

व्यापार में वृद्धि होगी। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रहें। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। पुराने मित्र से मिलन होगा। शुभांक-6-7-8

तुला रा री रु रे रो ता ती तू ते

पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। माता पक्ष से विशेष लाभ होगा। रुपए पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। शुभांक-1-4-6

वृश्चिक तो ना नी नू ने नो य यी यू

महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सफलता मिलेगी। पुराने मित्र के कारण कार्य बाधा हटेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। कर्ज देने से बचें। शुभांक-4-7-9

धनु ये यो भा भी भू धा फा ढा भे

स्वास्थ्य का पाया कमजोर बना रहेगा। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। एकाकी वृत्ति त्यागें। शुभांक-5-7-9

मकर भे जा जी खी खू खे खो णा गी

अपने काम को प्राथमिकता से करें। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। आध्यात्मिक रुचि बनेगी। धार्मिक यात्रा का योग। शुभांक-4-7-9

कुंभ गू गे गो सा सी सू से सो दा

कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। यार दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। किसी कार्य विशेष के लिए यात्रा आवश्यक होगी। शुभांक-4-6-9

मीन दी दू थ झ ञ दे दो चा ची

शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते हैं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। आलस्य का त्याग करें। काम पर पैनी नजर रखिए। सब्र का फल मीठा होता है अत:धैर्य रखें व अच्छे समय इन्तजार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। आध्यात्मिक रुचि बनेगी। शुभांक-2-5-7

काकुरो पहेली - 2661

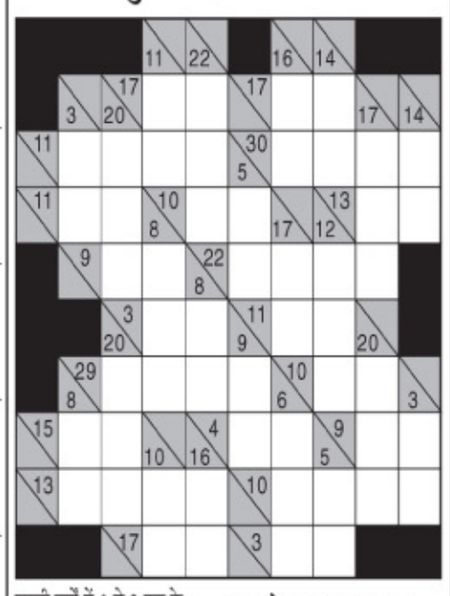

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

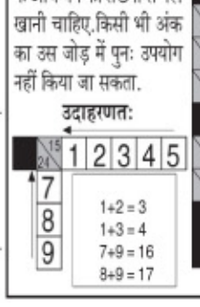

काकुरो - 2660 का हल

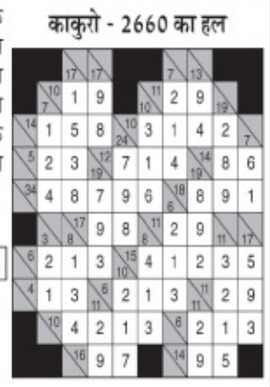

हंसी के फव्वारें

'यार, एक बात समझ में नहीं आई,तुमने अपनी फर्म के लिए विकलाँग खजांची का चुनाव क्यों किया?' पहले मित्र ने जानना चाहा.

'ताकि फरार होने पर वह जल्द से जल्द पकड़ा जा सके.'दूसरे मित्र ने कारण बताया.

□ □ □

द्वार पर बहुत देर तक दस्तक पड़ने के कारण पति महोदय की नींद खुली,तो पत्नी को जगाते हुए बोली,'सुनती हो, बहुत देर से कोई हमारे द्वार पर दस्तक दे रहा है.'

'ओह ! तो तुम घर पर ही हो.' पत्नी उनींदे स्वर में बोली,'मैं तो यह सोचकर निश्चित थी कि द्वार पर तुम खड़े चिल्ला रहे हो.'

□ □ □

'मेरी घरवाली मेरे सिवा किसी और मर्द की ओर देखना तक पसंद नहीं करती.' पहले दोस्त ने बताया.

'पर यह बात आपको कैसे मालूम हुई ?'दूसरे दोस्त ने जानना चाहा.

'ऐसे कि कल जब मेरी घरवाली का एक परिचित घर आया, तो वह उसे देखती ही बोली, दफा हो जाओ मेरी नजरों से हमेशा के लिए. अब मैं तुम्हारा चेहरा तक देखना पसंद नहीं करती.' पहला मित्र बोला.

फिल्म वर्ग पहेली- 2661

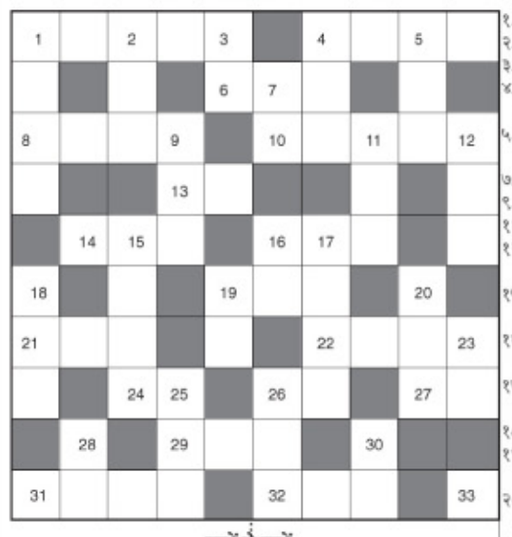

बायें से दायें:-

१. संजीव कुमार, वहीदा रहमान की 'ऐ मेरी आँखों के पहले सपने' गीत वाली फिल्म-२,३
४. 'चलो एक बार फिर से अजनबी बन जायें' गीत वाली फिल्म-४
६. ऋषि, श्रीदेवी की 'भूली बिसरे प्रेम कहानी' गीत वाली फिल्म-३
८. 'टपका रे टपका' गीत वाली फिल्म-४
१०. जीतेंद्र, आदित्य, संगीता की १९९३ की एक फिल्म-५
१३. ऋषिकपूर, टीना मुनीम की फिल्म-२
१४. 'किसी को किसी' गीत वाली राजेश खन्ना, स्मिता की फिल्म-३
१६. शाहरूख, पूजा भट्ट, रम्या की फिल्म-३
१९. विवाह से पूर्व टीना अंबानी का सरनेम क्या था-३
२१. अमोल, जरीना की 'दो दीवाने शहर में' गीत वाली फिल्म-३
२२. 'सरकाय लेओ' गीत वाली गोविंदा, करिश्मा की फिल्म-२,२
२४. अनिल कपूर, अक्षय खन्ना, ऐश्वर्या की फिल्म-२
२६. 'चो कागज की कश्ती' गीत वाली कुमार गौरव, अनामिका की फिल्म-२
२७. संजय दत्त, कुमार गौरव, पूनम की 'तेरे दिल की तू' गीतवाली फिल्म-२
२९. 'मैं लव तुम से' गीत वाली तुषार कपूर, अंतरा माली की फिल्म-३
३१. सुनील दत्त, नूतन की 'बड़ी देर भई नंदलाला तेरी राह तके बृजबाला' गीत वाली फिल्म-४
३२. 'दिल हम हम करे' गीत वाली राज बब्बर, राखी, डिम्पल कपाड़िया की फिल्म-३
३३. धर्मेंद्र, हेमा मालिनी की 'ओ ऐसी कोई बात' गीत वाली फिल्म-१

ऊपर से नीचे:-

१. दिलीप कुमार, वैजयंती की फिल्म-४
२. 'मेरो गाम काथा पारे' गीत वाली फिल्म-३
३. 'सरकी चुनरिया रे' गीत वाली फिल्म-२
४. डिनो मारिया, बिपाशा बसु की 'रूठ कर हम उन्हें भूल जाने लगे' गीत वाली फिल्म-३
५. फिल्म 'आज का अर्जुन' में 'लक्ष्मी' की भूमिका किस अभिनेत्री ने की थी-३
७. राजेंद्र कुमार, माला सिन्हा की फिल्म-२
९. 'मेरे चेहरे पे' गीत वाली फिल्म-३
११. अक्षय, सैफ, रवीना, सोनाली की फिल्म-३
१२. अमोल, राखी की 'जो राह चुनी तूने राही' गीत वाली फिल्म-३
१५. 'कभी खुशियों की सरगम' गीत वाली अमिताभ, अरबाज, डिम्पल की फिल्म-४
१६. वी. शांताराम की प्रेमकुमार, मास्टर सुशांत, रंजना, गौरी कामथ अभिनीत फिल्म-२
१७. 'प्यार कर इकरार कर' गीत वाली बॉबी देओल, अक्षय, अमीषा की फिल्म-४
१८. अक्षय कमार, प्रीति जिंटा की फिल्म-३
१९. 'लल्ला लल्ला लोरी दूध की' गीत वाली फिल्म-२
२०. फिल्म 'गॉड मदर' में शीर्षक भूमिका किसने निभाई है-३
२३. 'नचना तेरे नाल' गीत वाली फिल्म-२
२५. आमिर खान, ग्रेसी सिंह की फिल्म-३
२६. 'जिन्हें हम भूलना चाहें वो अक्सर याद आते हैं' गीत वाली फिल्म-३
२८. मनोज वाजपेई, उर्मिला मातोंडकर अभिनीत रामगोपाल वर्मा की एक सस्पेंस फिल्म-३
३०. 'माई हार्ट इज बीटिंग गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 2660

सूडोकु -2661

2	9		3	1			8	
3	6		2		7		9	
		7			6		2	1
	7		1					
1	3			4			7	2
					5		4	
6	2		4			9		
	5		6		9		1	8
	1			5	3		6	4

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -2660 का हल

3	9	7	5	1	4	6	8	2
1	2	8	6	9	3	4	5	7
6	4	5	2	8	7	1	3	9
5	7	3	4	6	9	2	1	8
2	1	9	7	5	8	3	4	6
4	8	6	3	2	1	7	9	5
9	3	2	8	4	6	5	7	1
7	6	1	9	3	5	8	2	4
8	5	4	1	7	2	9	6	3

शब्द पहेली - 2661

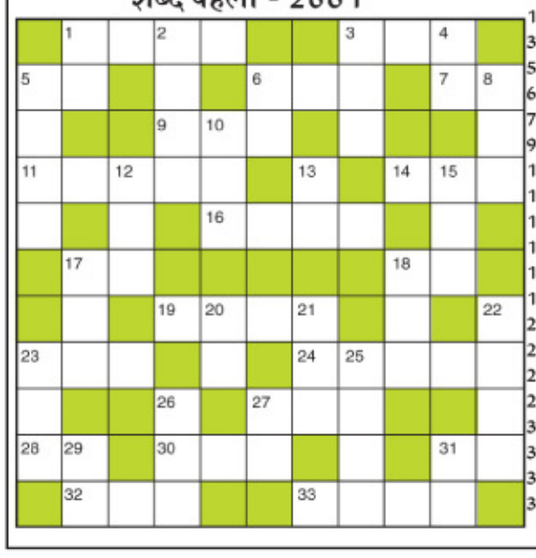

बाएँ से दाएँ
1.असभ्यता,मूर्खता-4
3.निर्भय,बहादुर-3
5.प्याला-2
6.सहारा,शरण-3
7.मां का भाई-2
9.साठ वर्ष की अवधि-3
11.परतंत्रता,गुलामी-5
14.दानव,दैत्य-3
16.लूटपाट-4
17.वाद्य यंत्र-2
18.परछाई,छाया-2
19.आदत,स्वभाव(उर्दू-4)
23.जंगल,वन-3
24.सेंधमार-5
27.गजल लिखने वाला-3
28.मोटा आटा,सूजी-2
30.गुलिस्तां,बाग-3
31.एक ग्रह,शनिश्चर-2
32.दबाना,कुचलना-3
33.रोब वाला, ठसके वाला-4

ऊपर से नीचे
1.मंत्रों का पाठ-2
2.उद्देश्यहीन-4
3.अनूठा,अनोखा-3
4.लक्ष्मी,कमला-2
5.खीजना,रोना-4
6.एक पौधा,अकुवा, आकड़ा-2
8.दक्ष,होशियार-3
10.जमीकंद,एक सब्जी-3
12.धैर्य,संयम-3
13.अस्थमा-2
15.एक गायिका-3
17.वर्षा ऋतु-3
18.महोदय-3
20.पैंदा,तला-2
21.पुत्र,बेटा-3
22.अवमानना-4
23.नास्तिक (उर्दू-3)
25.करामात-4
26.प्रतिज्ञा-3
27.ठाठ-बाट-2
29.अदालत में प्रस्तुत दावा-2
31.तीर,बाण-2

शब्द पहेली -2660 का हल

झारखंड की राजधानी रांची में 28 को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे हेमंत सोरेन, जुटेंगे बड़े नेता

एजेंसी

रांची। झारखंड विधानसभा चुनाव में जीत के बाद हेमंत सोरेन गुरुवार को चौथी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। शपथ ग्रहण समारोह को भव्य बनाने के लिए सारी तैयारियां पूरी कर ली गयी हैं। रांची के मोरहाबादी मैदान में 28 नवंबर की शाम चार बजे शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया है। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार शपथ ग्रहण करायेंगे।

इस समारोह में कई बड़े राष्ट्रीय नेता शामिल होंगे। इनमें कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, तेजस्वी यादव, एनसीपी पार्टी के अध्यक्ष शरद पवार, मेघालय के मुख्यमंत्री कोंराड कोंगकल संगमा, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान, हिमाचल के मुख्यमंत्री सुखविन्द्र सिंह सुखू, पूर्व मुख्यमंत्री महाराष्ट्र उद्धव ठाकरे, यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, कर्नाटक के पूर्व उप मुख्यमंत्री डीके शिवाकुमार, तमिलानडू के पूर्व उप मुख्यमंत्री उदय स्टालिन, जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती, मासस के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य, नवीन पटनायक, कपिल सिब्बल के अलावा और भी कई नाम शामिल हैं। शपथ ग्रहण समारोह को लेकर जगह-जगह होर्डिंग लगाये जा रहे हैं। झामुमो और कांग्रेस नेताओं में जबरदस्त उत्साह है। शपथ समारोह को भव्य बनाने के लिए और आने वाले वीआईपी गेस्ट के लिए विशेष तैयारियां की गई हैं।

हड़प्पा कालीन लोथल में मिट्टी धंसने से एएसआई की दो महिला अधिकारी दबी, एक की मौत

अहमदाबाद। गुजरात में हड़प्पा संस्कृति केन्द्र लोथल में मिट्टी धंसने से आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) की दो महिला अधिकारी दब गई। इनमें एक महिला अधिकारी की मौत हो गई। जबकि दूसरी अधिकारी गंभीर रूप से घायल है। घायल महिला अधिकारी को बगोदरा के सरकारी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। मृतक अधिकारी का नाम जियोलॉजिस्ट सुरभि वर्मा (23) और घायल अधिकारी का नाम जियोलॉजिस्ट यामा दीक्षित (45) बताया गया है। अहमदाबाद जिले की धोलका तहसील के लोथल में हॉल मेरिटाइम म्यूजियम बनाने का काम चल रहा है। इसके समीप ही पुरानी साइट पर सड़क बनाने का काम हो रहा है। जानकारी के अनुसार, दिल्ली से जियोलॉजिस्ट और कुछ स्टूडेंट मिट्टी के सैम्पल लेने आए थे। इन्होंने जेसीबी की मदद से एक 15 फीट गहरा गड्ढा खुदवाया था। इसके बाद वे मिट्टी का सैम्पल लेने नीचे उतरी थीं। इसी दौरान मिट्टी धंस गई और दोनों महिला अधिकारी मिट्टी के नीचे दब गई। तत्काल फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई। बगोदरा पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। घटनास्थल पर पहुंचे 15 फायर कर्मियों ने रेस्क्यू ऑपरेशन किया। दोनों को बाहर निकाला गया। इसमें सुरभि वर्मा की मौत हो गई, जबकि दूसरी अधिकारी यामा दीक्षित को हॉस्पिटल ले जाया गया। बताया गया कि मृतक अधिकारी सुरभि दीक्षित आईआईटी से पीएचडी कर रहीं थीं। बगोदरा पुलिस मामले की जांच कर रही है।

एनआईए की दविंदर बंबीहा सिंडिकेट के खिलाफ पंजाब, हरियाणा और उप्र में छापेमारी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश राज्यों में नौ स्थानों पर दविंदर बंबीहा सिंडिकेट के सहयोगियों से जुड़े परिसरों की व्यापक तलाशी ली। एनआईए की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार यह तलाशी हथियार, गोला-बारूद, नशीले पदार्थों, विस्फोटकों आदि जैसे आतंकवादी हार्डवेयर की तस्करी के लिए आपराधिक साजिशों में लगे आतंकी संगठनों पर एनआईए की निरंतर कार्रवाई का हिस्सा है। एनआईए की टीमों ने हरियाणा के पलवल, फरीदाबाद और गुरुग्राम जिलों, पंजाब के जालंधर जिले और उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में आतंकी-गैंगस्टर सिंडिकेट मामले में संदिग्धों के परिसरों की तलाशी ली। तलाशी के दौरान मोबाइल, डिजिटल उपकरण, बैंकिंग लेनदेन और संपत्ति से संबंधित दस्तावेजों सहित कई आपत्तिजनक सामग्री जब्त की गई।

ईको टूरिज्म में यूपी के बढ़ते कदम से सीखेंगे नेपाल के अफसर

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशन में उत्तर प्रदेश में ईको टूरिज्म में काफी संभावनाएं बढ़ी हैं। साढ़े सात वर्ष में यहां देश-विदेश व प्रदेश के अन्य कोने से आने वाले पर्यटकों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है। स्थानीय लोगों को पर्यटन से जोड़कर रोजगार प्रदान किया जा रहा है। सीएम योगी के नेतृत्व में ईको टूरिज्म में यूपी के बढ़ते कदम से अब नेपाल के अफसर भी सीखेंगे। चूका ईको टूरिज्म स्पॉट पर इंडो-नेपाल ट्रांस बॉर्डर को-ऑर्डिनेशन इवेंट फॉर बॉयोडॉइवर्सिटी कंजरवेशन इवेंट का आयोजन किया गया। इसमें दोनों देशों के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। उत्तर प्रदेश वन विभाग सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) संग बॉर्डर के ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता अभियान चलाएगा। इसका उद्देश्य मानव वन्य जीव संघर्ष कम करने के साथ ही वन्य जीवों की भी सुरक्षा करना है। पीलीभीत टाइगर रिजर्व के प्रभागीय वनाधिकारी मनीष सिंह ने बताया कि मानव-वन्य जीव संघर्ष न्यूतनम करने के साथ ही वन्य जीव की सुरक्षा पर भी प्रदेश सरकार का जोर है। दोनों देश मिलकर वाइल्ड लाइफ मॉनीटरिंग करेंगे। जो वन्यजीव (खास तौर पर टाइगर, तेंदुआ, हाथी, गैंडा) इस देश से उस देश जा रहे हैं, उन्हें ट्रैक करने पर भी जोर देंगे।

पंडित धीरेंद्र शास्त्री की पदयात्रा निवाड़ी पहुंची, भाजपा नेता मनोज तिवारी भी यात्रा में हुए शामिल

एजेंसी

निवाड़ी/भोपाल। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की हिंदू जागरूकता पदयात्रा सातवें दिन देश शाम निवाड़ी पहुंची। यहां रात्रि विश्राव होगा और इसके बाद यात्रा सुबह फिर ओरछा के लिए रवाना होगी। सातवें दिन पदयात्रा में पंडित धीरेंद्र शास्त्री 17 किलोमीटर चले। सुबह उन्होंने सड़क पर बैठकर नाश्ता किया। यात्रा उत्तर प्रदेश के सकरार में लंच किया। दोपहर में यात्रा में भोजपुर एक्टर और भाजपा नेता मनोज तिवारी भी शामिल हुए। पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने यात्रा के दौरान नारा दिया कि जात-पात की करो विदाई, हिंदू-हिंदू भाई-भाई। उन्होंने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हुए अत्याचार को लेकर हिंदुओं को संगठित रहने की सलाह दी। साथ ही सामाजिक कुरीतियों को त्यागने का

संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हिंदू कम हो रहा है। हिंदू जातियों में बंट गया है। बांग्लादेश के हिंदुओं पर अत्याचार हुआ, सबने देखा। अब हम चुप नहीं बैठेंगे। सब हिंदू एक होकर बताएंगे। पंडित धीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि यात्रा का उद्देश्य राजनीतिक नहीं है। उन्होंने कहा कि गांव में जो छूआछूत और जात पात का रोग है, उसे ही दूर करने के लिए सनातन हिंदू एकता पदयात्रा निकाली जा रही है। उन्होंने कहा कि क्या तुम भी भारत को बांग्लादेश बनाना चाहते हो, क्या तुम चाहते हो तुम्हारी बहन बेटी लव जिहाद में पड़े, तुम्हारी जमीन पर दूसरा कब्जा करे? इनसे बचने के लिए सड़कों पर उतरना होगा। सभी को संगठित होना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मंदिरों में लिखा हो कि जूते-चप्पल उतारकर आएं, लेकिन अब यह भी लिखा जाए कि जात-पात छोड़कर आएं। उन्होंने यह भी जोड़ा, हर व्यक्ति के मन से यह सोच मिटनी चाहिए कि कोई बड़ा है या छोटा। हम सब राम के हैं और राम हम सबके हैं। 9 दिन की यात्रा का विराम दो दिन बाद हो जाएगा, लेकिन जीवन का विराम भी एक दिन जरूर आएगा। पंडित धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि सरकार और राजनीति ने समाज को दलित बना दिया है। जब किसी दलित की बारात को घोड़ी से उतारा जाता है, तो यह हिंदू समाज के लिए शर्म की बात है।

केंद्रीय मंत्री शेखावत ने किया निर्माणाधीन साइंस सिटी का निरीक्षण

एजेंसी

गुवाहाटी। केंद्रीय सांस्कृतिक एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सोनापुर में निर्माणाधीन साइंस सिटी का निरीक्षण किया। इस दौरान केंद्रीय मंत्री ने लंबे समय से निर्माणाधीन केंद्र सरकार की इस महत्वाकांक्षी परियोजना पर काम की प्रगति का जायजा लिया। केंद्रीय मंत्री के साथ असम के कैबिनेट मंत्री केशव महंत भी मौजूद थे। मंत्री ने निर्माण कार्य की धीमी गति को देखकर परियोजना में शामिल अधिकारियों को लताड़ लगाई। केंद्रीय मंत्री ने 1 नवंबर, 2025 से पहले काम पूरा करने और परियोजना को जनता के लिए खोलने का निर्देश दिया है। वे इस बात से नाराज हुए कि करीब चार साल पहले शिलान्यास हो चुकी परियोजना का निर्माण कार्य अभी तक पूरा नहीं हो पाया है।

मनुष्य को सन्मार्ग पर चलना सिखाती है सनातन संस्कृति : मुख्यमंत्री डॉ यादव

एजेंसी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति की विभिन्न शाखाएं संपूर्ण विश्व में फैली हुई है। इन शाखाओं के माध्यम से हिन्दू संस्कृति सर्वत्र व्याप्त है। इसी संस्कृति को हम मंदिर संस्कृति भी कहते हैं। इस्कॉन टेम्पल, स्वामी नारायण भगवान जैसे अन्य संप्रदाय विभिन्न प्रकार से सनातन संस्कृति का प्रसार कर रहे हैं। हमारे धर्म में 33 कोटि देवी-देवताओं को विभिन्न स्वरूपों में पूजा जाता है और यही सनातन संस्कृति और सनातन धर्म की सुंदरता है। हमारी सनातन संस्कृति मनुष्य को सन्मार्ग पर चलना सिखाती है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह विचार यूके प्रवास के दौरान लंदन में स्वामी नारायण संप्रदाय के मंदिर प्रांगण में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मार्ग भले ही पृथक-पृथक हो, परंतु सदैव मंशा सद्भाव की होती है। उनके दिखाए हुए मार्ग पर चलना पूरे सनातन धर्म ने स्वीकार किया है। अहिंसा परमो धर्म का भाव जियो और जीने दो, प्राणी मात्र से प्रेम करो जैसे सरल मार्ग पर चलकर ही आता है। ऐसे में समूची मानवता को मंदिर संस्कृति अपने आप में समेटे हुए है। उन्होंने कहा कि प्रस्तर शिल्प में सनातन संस्कृति जीवंत स्वरूप में दिखाई देती है। हमारी प्राचीन कला, संस्कृति और सभ्यता को विभिन्न स्वरूपों में पत्थरों पर उकेरा गया

है, न सिर्फ प्रस्तर शिल्प बल्कि काष्ठ शिल्प भी सनातन संस्कृति विभिन्न रूपों में अपनी कहानी कह रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मनुष्य में सनातन संस्कृति को लेकर मन के भावों को इन उत्कृष्ट कलाओं के माध्यम से जीवंत करने का प्रयास किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि कदम-कदम पर चुनौतियों और कठिनाइयों के समय में मन की एकाग्रता के लिए मानवता के साथ अगर कोई सन्मार्ग पर चलना सिखाता है, तो वह सनातन संस्कृति ही सिखाती है, हमारा धर्म सिखाता है। उन्होंने कहा कि मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मध्य प्रदेश की धरती से लंदन में आकर श्री स्वामीनारायण मंदिर में भगवान को नमन करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। मैं अपनी इस यात्रा में संतों से मिला और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। मैं परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूं कि सनातन संस्कृति का इसी प्रकार संपूर्ण विश्व में विस्तार होता रहे।

अजमेर सिविल कोर्ट ने अजमेर दरगाह से जुड़ी याचिका स्वीकार कर सभी पक्षों को नोटिस जारी किया

एजेंसी

अजमेर। अजमेर की एक सिविल अदालत ने अजमेर में सूफी संत ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह में संकट मोचक महादेव मंदिर होने से जुड़ी याचिका को स्वीकार करते हुए सभी पक्षों को नोटिस जारी किया है। सिविल न्यायालय ने इस मामले में सुनवाई के लिए अगली तारीख 20 दिसम्बर जारी की है। अदालत में हिंदू सेवा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सरिता विहार निवासी विष्णु गुप्ता ने वकील शशि रंजन कुमार सिंह के माध्यम से 26 सितम्बर को याचिका दायर की गई थी। अदालत ने बुधवार 27 नवम्बर को इस मामले में सभी गुण दोष का अध्ययन करने तथा वादी से सवाल जवाब करने व अन्य पक्षों की राय जानने के बाद सभी पक्षों को नोटिस जारी कर अपना जवाब पेश करने के लिए कहा है। इस मामले में अगली सुनवाई 20 दिसम्बर को किया जाना निश्चित किया है। मामले में जिन तीन पक्षों को नोटिस दिया है उनमें दरगाह कमेटी अजमेर, अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय नई दिल्ली और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग शामिल है। याचिका कर्ता विष्णु गुप्ता ने अपनी याचिका स्वीकार होने को जीत बताया है। उन्होंने कहा कि दो माह से याचिका

इधर से उधर कोर्ट में घूम रही थी। जज अवकाश पर होने या छुट्टी होने के कारण सुनवाई नहीं हो रही थी। दो माह बाद इस पर अदालत ने सुनवाई कर सभी पक्षों को नोटिस जारी किया है। उल्लेखनीय है कि याचिका में उन्होंने कहा है कि वे भगवान संकट मोचन महादेव मंदिर के संरक्षक हैं। यह मंदिर दरगाह परिसर में है। प्राचीन काल में इस मंदिर के स्थान पर दरगाह बना दी गई। याचिका में मंदिर में पूजा-अर्चना के अधिकार की मांग की गई थी और अतिक्रमण हटाने की मांग की गई थी। साथ ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) से क्षेत्र का सर्वेक्षण कराने का अनुरोध किया गया था।अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह परिसर को भगवान संकट मोचन महादेव का मंदिर घोषित करने और वहां पूजा-अर्चना की अनुमति देने अदालत से आग्रह किया गया है। याचिका में दरगाह समिति द्वारा अनधिकृत कब्जे का दावा किया गया है।

टरा रोपवे परियोजना : मजदूरों और दुकानदारों के दो प्रतिनिधियों को हिरासत में लेने के एक घंटे बाद किया गया रिहा

एजेंसी

कटरा। वैष्णों देवी मंदिर के लिए ट्रैक मार्ग पर प्रस्तावित रोपवे परियोजना के खिलाफ कटरा बेस कैंप में ताजा विरोध प्रदर्शन के बाद जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में मजदूरों और दुकानदारों के दो प्रतिनिधियों को हिरासत में लिया गया है। भूपिंदर सिंह और सोहन चंद को पुलिस ने एक घंटे की हिरासत के बाद रिहा कर दिया। प्रदर्शनकारी दुकानदारों के समर्थन में संभागीय आयुक्त से मिलने वाले जम्मू-कश्मीर कांग्रेस के सदस्यों ने कटरा में उनसे मिलकर अपना समर्थन दिया। पुलिस के अनुसार कटरा में हिंसक विरोध प्रदर्शन के एक दिन बाद मंगलवार (26 नवंबर, 2024) को आठ लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई जिसमें एक पुलिसकर्मी घायल हो गया। भूपिंदर सिंह और सोहन चंद के नेतृत्व में प्रदर्शनकारियों ने प्रस्तावित रोपवे परियोजना के खिलाफ एक रैली

निकाली। हालांकि अधिकारियों ने कहा कि पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को आगे बढ़ने से रोक दिया, जिसके परिणामस्वरूप उनके बीच झड़प हुई। उन्होंने बताया कि भूपिंदर सिंह और सोहन चंद को हिरासत में लिया गया और पुलिस वाहन में बैठाकर मौके से ले जाया गया। प्रदर्शनकारियों को भी मौके से खदेड़ दिया गया। उधमपुर के डीआईजी (रियासी रेंज) रईस भट ने कहा कि हिरासत में लिए गए लोगों को गिरफ्तार नहीं किया गया है। दोनों लोगों को एक घंटे बाद कटरा थाने से रिहा कर दिया गया। रिहाई के बाद भूपिंदर सिंह ने कहा कि हमने प्रशासन के हस्तक्षेप के बाद आंदोलन वापस ले लिया जिसने शिकायतों को हल करने के लिए बातचीत करने के लिए समय मांगा था। हमने उन्हें समय दिया लेकिन पिछले दो दिनों में पुलिस ने गिरफ्तारियां की हैं। कई युवाओं को हिरासत में लिया गया। उन्होंने कहा कि प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने हमसे पूछा कि जब 15 दिसंबर तक का समय दिया गया है तो हम रैली क्यों निकाल रहे हैं। हमने उन्हें स्पष्ट किया कि हम यह समझने के लिए पुलिस से संपर्क कर रहे थे कि लोगों को क्यों गिरफ्तार किया जा रहा है और वे उनकी पहचान क्यों कर रहे हैं। पुलिस हिंसा में शामिल लोगों के खिलाफ कोई भी कार्रवाई कर सकती है। हम ऐसी कार्रवाई का समर्थन नहीं करेंगे।

यूरेशियन समूह के प्रतिनिधि माण्डू पहुंचे, जहाज़ महल देख अभिभूत हुए विदेशी मेहमान

एजेंसी

इंदौर। मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी और देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर में इन दिनों यूरेशियन समूह (ईएजी) की पांच दिवसीय 41वीं प्लेनरी बैठक चल रही है। बैठक में भाग लेने के लिए इंदौर आए विदेशी मेहमान दोपहर बाद धार जिले के विश्व प्रसिद्ध पर्यटक स्थल माण्डू पहुंचे। यहां विदेशी मेहमानों का भारतीय परंपरा के अनुसार तिलक लगाकर स्वागत किया गया। विदेशी मेहमान माण्डू के जहाज़ महल सहित अन्य ऐतिहासिक धरोहरों को देख कर अभिभूत हो गए।दरअसल, यूरेशियन समूह की बैठक के बाद विदेशी मेहमानों को मांडू का भ्रमण कराया गया। इस दौरान मेहमानों ने यहाँ लाइट एंड साउंड शो को भी रुचिपूर्वक देखा और सराहना की। डेलिगेट्स ने माण्डू की स्मृतियों को कैमरे में भी कैद किया। भ्रमण के दौरान भारत सरकार के अतिरिक्त सचिव विवेक अग्रवाल, इंदौर कलेक्टर आशीष सिंह, धार कलेक्टर प्रियंक मिश्रा भी मौजूद रहे।

बांग्लादेश के इस्कान प्रवक्ता चिन्मय कृष्ण की रिहाई तक भारत बांग्लादेशियों को वीजा देना बंद करे : शुभेंदु अधिकारी

एजेंसी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल भाजपा के वरिष्ठ नेता और विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि जब तक बांग्लादेश में कार्यवाहक सरकार हिंदू धार्मिक संत और इस्कॉन के प्रवक्ता चिन्मय कृष्ण दास ब्रह्मचारी को रिहा नहीं करती, तब तक भारत को बांग्लादेशी नागरिकों के लिए वीज़ा जारी करना पूरी तरह बंद कर देना चाहिए।

भाजपा नेता अधिकारी ने यह बयान आज बांग्लादेश के कोलकाता स्थित उप-उच्चायोग को ज्ञापन सौंपने के बाद दिया। उन्होंने बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों को रोकने और चिन्मय दास की रिहाई की मांग करते हुए भारत और बांग्लादेश के बीच आयात-निर्यात पर भी अस्थायी रोक

लगाने की बात कही। उन्होंने बुधवार को कोलकाता के रवींद्र सदन से बांग्लादेश उप-उच्चायोग तक सात भाजपा विधायकों और कार्यकर्ताओं के साथ एक रैली का नेतृत्व किया। उन्होंने कहा कि जब तक हिंदुओं पर अत्याचार बंद नहीं होता, तब तक हम प्रदर्शन करते रहेंगे। इसके बाद, उत्तर 24 परगना जिले के पेट्रापोल में भारत-बांग्लादेश सीमा पर अवरोध शुरू करेंगे। उन्होंने यह भी घोषणा की कि भाजपा 16 दिसंबर को कोलकाता में एक विशाल रैली करेगी। यह रैली बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के विरोध में होगी। शुभेंदु अधिकारी ने एक वीडियो दिखाया, जिसमें उन्होंने दावा किया कि बांग्लादेश के एक कैबिनेट मंत्री भारत विरोधी नारे लगा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत और बांग्लादेश के रिश्ते बहुत अच्छे हैं, लेकिन वहां वर्तमान सरकार भारत के खिलाफ भावना पैदा कर रही है, जो पहले कभी नहीं हुआ। उन्होंने बांग्लादेशी नागरिकों से भारतीय अस्पतालों में इलाज कराने की बजाय पाकिस्तान जाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि भारत में इलाज के लिए मत आओ, कराची या लाहौर जाओ। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि गुरुवार को हिंदू जागरण मंच सियालदह से बांग्लादेश उप-उच्चायोग तक मार्च करेगा। यह प्रदर्शन चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी के विरोध में आयोजित किया जाएगा। गौरतलब है कि चिन्मय कृष्ण दास, जो बांग्लादेश के सम्मिलित सनातनी जागरण जोट के प्रवक्ता हैं, उनको सोमवार को ढाका के हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से गिरफ्तार किया गया था। वह चट्टगांव में एक रैली में शामिल होने जा रहे थे। उनके खिलाफ देशद्रोह के मामले में मंगलवार को चट्टगांव की अदालत ने जमानत देने से इनकार कर उन्हें जेल भेज दिया है।

मणिपुर में सीओसीओएमआई के सदस्यों ने बंद कराए सरकारी कार्यालय

एजेंसी

इंफाल। मणिपुर अखंडता समन्वय समिति (सीओसीओएमआई) के सदस्यों ने मणिपुर में सरकारी कार्यालयों को बंद करने का अभियान चलाया। समिति की छात्र शाखा ने मणिपुर सचिवालय सहित केंद्र और राज्य सरकार के कई कार्यालयों को बंद कराया। उन्होंने कर्मचारियों को बाहर निकाल कर कार्यालयों को बंद कर दिया। सीओसीओएमआई द्वारा मणिपुर में केंद्र तथा राज्य सरकारों के कार्यालयों और प्रतिष्ठानों को बंद करने की चेतावनी दी गई थी। हालांकि, मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह ने प्रदर्शनकारियों को शांति बनाए रखने तथा संयम से काम लेने की अपील की थी। मुख्यमंत्री की अपील को धता बताते हुए सीओसीओएमआई के सदस्यों ने मणिपुर में सरकारी कार्यालयों और प्रतिष्ठानों को बंद करवाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि एनआईए ने जिरीबाम हिंसा से संबंधित मामलों को फिर से दर्ज किया है। सुरक्षा बलों ने जिरीबाम में छह बंधकों की मौत के लिए जिम्मेदार लोगों को पकड़ने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान शुरू किया है। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि राज्य सरकार और एनडीए विधायक शेष मांगों को पूरा करने में जनता का समर्थन करने के लिए तैयार हैं। इसमें हिंसा से जुड़े संबंधित संगठनों को आतंकवादी घोषित करना और छह पुलिस स्टेशनों के अधिकार क्षेत्र से अफ्सपा को हटाना आदि शामिल है।सीओसीओएमआई की छात्र शाखा के संयोजक थोकचोम धनचंद्र ने कहा कि सरकारी कार्यालयों को बंद कराना उनकी मांगों पर ध्यान न देने के लिए राज्य और केंद्र सरकारों के खिलाफ एक विरोध प्रदर्शन का हिस्सा है। उन्होंने निराशा व्यक्त की कि समिति के निर्णय की अनदेखी करते हुए कई कार्यालयों में काम करना जारी रखा गया, जिस कारण उन्हें बंद कराना पड़ा। इसी बीच हिंसक गतिविधियों के मद्देनजर मणिपुर सरकार के जिला प्रशासनों द्वारा राज्य के विभिन्न जिलों में लगे इंटरनेट पर प्रतिबंध की अवधि को और दो दिनों के लिए बढ़ा दिया है। राज्य में बड़े पैमाने पर अफवाह फैलाने की कोशिशें चल रही हैं।

समय की गति से करें कदमताल,विरोध करने से नहीं होगा उत्थानः सीएम योगी

एजेंसी

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने युवाओं को रिफॉर्म के प्रति सकारात्मक भाव अपनाने का आह्वान किया है, उन्होंने कहा है कि युवाओं को नए ज्ञान से अपने आप को वंचित नहीं करना चाहिए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के 136वें दीक्षांत समारोह के मंच से युवाओं को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हर नया ज्ञान अपने आप में एक विज्ञान होता है। जब भी आप अपने आप को इससे दूर करेंगे तो आप अपने लिए एक बैरियर खड़ा करेंगे। उन्होंने कहा कि तमाम लोग नई बातों को और नए रिफॉर्म को अंगीकार नहीं कर पाते। जब कोई नयापन आता है तो लोग झंडा लेकर उसका विरोध करने निकल पड़ते हैं। वो समय गया जब नारे लगते थे कि मेरी मांगे पूरी हों, चाहे जो मजबूरी हो। देश और समाज का उत्थान इसमें कभी नहीं हो सकता। याद रखना हमारा एक-एक पल, एक-एक क्षण राष्ट्र धर्म के प्रति समर्पित होना चाहिए। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि जो लोग जाति, मत और मजहब के आधार पर छात्र शक्ति और युवा शक्ति को बांटने की कोशिश कर रहे हैं, वो भारत की युवा शक्ति और युवा ऊर्जा को विभाजित करने का पाप कर रहे हैं। ऐसे लोगों को कभी भी आगे नहीं बढ़ने देना चाहिए। मुख्यमंत्री योगी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के 136वें दीक्षांत समारोह में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उन्होंने यहां छात्र एवं छात्राओं को डिग्री प्रदान की। इससे पूर्व विश्वविद्यालय की कुलपति संगीता श्रीवास्तव ने सीएम योगी को स्मृति चिन्ह देकर एवं शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया। वहीं कुलाधिपति आशीष कुमार चौहान ने दीक्षा पाने वाले छात्रों को शपथ दिलाई। सीएम योगी ने प्रख्यात कवि डॉ. कुमार विश्वास को विश्वविद्यालय की ओर से डी.लिट् की मानद उपाधि भी प्रदान की। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम नए ज्ञान की परंपरा से अपने आप को वंचित नहीं कर सकते। समय की गति बड़ी निराली है।

आगामी सात दिसबंर को होगा एमजीसीयू का द्वितीय दीक्षांत समारोह, उपराष्ट्रपति होगे मुख्य अतिथि

एजेंसी

पूर्वी चंपारण। महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय (एमजीसीयू) का द्वितीय दीक्षांत समारोह अगामी 7 दिसंबर को आयोजित किया जाएगा। दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ उपस्थित होगे। कार्यक्रम का आयोजन मोतिहारी के राजा बाजार स्थित गांधी प्रेक्षागृह मे होगा। इसकी जानकारी देते एमजीसीयू जनसंपर्क अधिकारी शेफालिका मिश्ना ने बताया कि कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा. महेश शर्मा. कुलपति संजय श्रीवास्तव सहित शैक्षणिक तथा सार्वजनिक जीवन की कई अन्य प्रतिष्ठित हस्तियाँ उपस्थित रहेंगे। कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि दीक्षांत समारोह केवल शैक्षणिक सफलता का उत्सव नहीं है, बल्कि यह वह क्षण है, जब हमारे छात्र दीक्षांत के बाद एक वैश्विक नागरिक के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का एहसास करते हैं। एमजीसीयू में हम महात्मा गाँधी के

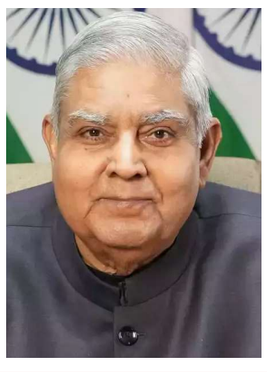

सिद्धांत सत्य, सेवा और समर्पण से प्रेरित होकर कार्य कर रहे है। कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति की मौजूदगी हमारे छात्रों और शिक्षकों को प्रेरित करेगी। उल्लेखनीय है,कि उक्त समारोह में विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट पीएचडी. कार्यक्रमों के छात्रों को उपाधियाँ प्रदान की जाएंगी। प्रत्येक विभाग के शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को स्वर्ण पदक और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा।

भगवान विष्णु ने धर्म की पत्नी रुचि के माध्यम से नर और नारायण नाम के दो ऋषियों के रूप में अवतार लिया। वे जन्म से तपोमूर्ति थे, अतः जन्म लेते ही बदरीवन में तपस्या करने के लिये चले गये। उनकी तपस्या से ही संसार में सुख और शांति का विस्तार होता है। बहुत से ऋषि मुनियों ने उनसे उपदेश ग्रहण करके अपने जीवन को धन्य बनाया। आज भी भगवान नर नारायण निरन्तर तपस्या में रत रहते हैं। इन्होंने ही द्वापर में श्रीकृष्ण और अर्जुन के रूप में अवतार लेकर पृथ्वी का भार हरण किया था।

विष्णु के ऋषि अवतार

नर और नारायण

एक बार इनकी उग्र तपस्या को देखकर देवराज इंद्र ने सोचा कि ये तप के द्वारा मेरे इंद्रासन को लेना चाहते हैं, अतः उन्होंने इनकी तपस्या को भंग करने के लिए कामदेव, वसंत तथा अप्सराओं को भेजा। उन्होंने जाकर भगवान नर नारायण को अपनी नाना प्रकार की कलाओं के द्वारा तपस्या से च्युत करने का प्रयास किया, किंतु उनके ऊपर कामदेव तथा उसके सहयोगियों का कोई प्रभाव न पड़ा। कामदेव, वसंत तथा अप्सराएं शाप के भय से थर थर कांपने लगे। उनकी यह दशा देखकर भगवान नर नारायण ने कहा- ,तुम लोग तनिक भी मत डरो। हम प्रेम और प्रसन्नता से तुम लोगों का स्वागत करते हैं।

भगवान नर नारायण की अभय देने वाली वाणी को सुनकर काम अपने सहयोगियों के साथ अत्यन्त लज्जित हुआ। उसने उनकी स्तुति करते हुए कहा- प्रभो! आप निर्विकार परम तत्व हैं। बड़े बड़े आत्मज्ञानी पुरुष आपके चरण कमलों की सेवा के प्रभाव से कामविजयी हो जाते हैं। देवताओं का तो स्वभाव ही है कि जब कोई तपस्या करके ऊपर उठना चाहता है, तब वे उसके तप में विघ्न उपस्थित करते हैं। काम पर विजय प्राप्त करके भी जिन्हें क्रोध आ जाता है, उनकी तपस्या नष्ट हो जाती है। परंतु आप तो देवाधिदेव नारायण हैं। आपके सामने भला ये काम क्रोधादि विकार कैसे फटक सकते हैं? हमारे ऊपर आप अपनी कृपादृष्टि सदैव बनाये रखें। हमारी आपसे यही प्रार्थना है।

कामदेव की स्तुति सुनकर भगवान नर नारायण परम प्रसन्न हुए और उन्होंने अपनी योगमाया के द्वारा एक अद्भुत लीला दिखायी। सभी लोगों ने देखा कि साक्षात लक्ष्मी के समान सुंदर सुंदर नारियां नर नारायण की सेवा कर रही हैं। नर नारायण ने कहा- तुम इन स्त्रियों में से किसी एक को मांगकर स्वर्ग में ले जा सकते हो, वह स्वर्ग के लिए भूषण स्वरूप होगी। उनकी आज्ञा मानकर कामदेव ने अप्सराओं में सर्वश्रेष्ठ अप्सरा उर्वशी को लेकर स्वर्ग के लिए प्रस्थान किया। उसने देवसभा में जाकर भगवान नर नारायण की अतुलित महिमा से सबको परिचित कराया, जिसे सुनकर देवराज इंद्र चकित और भयभीत हो गये। उन्हें भगवान नर नारायण के प्रति अपनी दुर्भावना और दुष्कृति पर विशेष पश्चाताप हुआ।

भगवान नर नारायण के लिये यह कोई बड़ी बात नहीं थी। इससे उनके तप के प्रभाव की अतुलित महिमा का परिचय मिलता है। उन्होंने अपने चरित्र के द्वारा काम पर विजय प्राप्त करके क्रोध के अधीन होने वाले और क्रोध पर विजय प्राप्त करके अभिमान से फूल जाने वाले तपस्वी महात्माओं के कल्याण के लिए अनुपम आदर्श स्थापित किया।

महामृत्युंजय मंत्र की महिमा

ओम त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

महामृत्यंजय मंत्र काफी असरकारी माना जाता है। इसका यदि शुद्ध उच्चारण किया जाए तो मृत्यु को दूर किया जा सकता है। यह बात इस कथा से स्पष्ट होती है। दर्शाण देश (वर्तमान मध्य प्रदेश के उत्तर पूर्व का एक भाग) के राजा वज्रबाहु की सुमति नाम की एक रानी थी। एक बार जब वह गर्भवती थी, तब उसकी सपत्नियों उसे विष दे दिया। भगवत कृपा से उसका गर्भस्थ भ्रूण विनष्ट नहीं हो पाया किंतु वह व्रणयुक्त हो गया। जिससे जो बालक उत्पन्न हुआ, उसका शरीर व्रण से भरा था। दोनों मां-बेटे के शरीर घावों से भर गये।

राजा ने अनेकों प्रकार के उपचार किये, परंतु कुछ भी लाभ न होते देख निराश हो सुमति से द्वेष रखने वाली अन्यान्य स्त्रियों की सलाह से, रानी सुमति को उसके बच्चे के साथ वन में छुड़वा दिया। वह वहां छोटी सी कुटिया बनाकर रहने लगी। वन में सुमति को दुरूसह कष्ट होने लगे, शरीर की पीड़ा से उसे बार-बार मूर्च्छा आने लगी, उसके बालक को तो पहले ही काल ने कवलित कर लिया।

उसे जब चेतना आयी तो वह बहुत ही कातरभाव से भगवान शंकर से प्रार्थना करने लगी- हे प्रभो! आप सर्वव्यापक हैं, सर्वज्ञ हैं, दीन-बन्धु-दुःखहारी हैं, मैं आपकी शरण हं, अब मुझे एकमात्र आपका ही अवलम्बन है। उसकी इस कातरवाणी को सुनते ही करुणामय आशुतोष का आसन डोल उठा। शीघ्र ही शिवयोगी वहां प्रकट हुए और उन्होंने सुमति को मृत्युंजय मंत्र का जप करने को कहा और अभिमंत्रित भस्म को उसकी तथा उसके बच्चे की देह में लगा दिया। भस्म के स्पर्श मात्र से ही उसकी सारी व्यथा दूर हो गयी और बालक भी प्रसन्नमुख हो जी उठा। सुमति ने शिवयोगी की शरण ली। शिवयोगी ने बालक का नाम भद्रायु रखा।

सुमति और भद्रायु दोनों मृत्युंजय मंत्र का जाप करने लगे और इधर राजा वज्रबाहु को अपनी निर्दोष पत्नी और अबोध बालक को व्यर्थ कष्ट पहुंचाने का दुष्परिणाम भी भुगतना पड़ा। उसके राज्य को शत्रुओं ने अपहृत कर राजा को बंदीगृह में डाल दिया।

एक दिन भद्रायु के मंत्र जप से प्रसन्न हो शिवयोगी पुनः प्रकट हुए। उन्होंने एक खड्ग और एक शंख दिया तथा बारह हजार हाथियों का बल देकर वे अर्न्तध्यान हो गये। भद्रायु ने अपने पिता के शत्रुओं पर आक्रमण कर उन्हें मार डाला और पैतृक राज्य को अधिकृत कर पिता को बंदीगृह से मुक्त किया। उसका यश चारों और फैल गया। चित्रांगद और सीमन्तिनी ने अपनी कन्या कीर्तिमालिनी का विवाह भद्रायु के साथ कर दिया।

भद्रायु ने शिवपूजा करते हुए सहस्त्रों वर्षों तक सुखपूर्वक प्रजा को सुख-शांति पहुंचाते हुए अविचल राज्य किया और अंत में शिवसायुज्य को प्राप्त हुआ। यह मृत्युंजय मंत्र के जप का लोकोत्तर माहात्मय है।

भारतीय ज्योतिष पर क्या कहते हैं विदेशी विद्वान

भारतीय ज्योतिष को प्राचीन और मौलिक केवल भारतीय विद्वान ही सिद्ध नहीं करते, अपितु अनेक भारतीय विद्वानों ने भी इसकी प्राचीनता स्वीकार की है। यहां कुछ विद्वानों के मत प्रस्तुत है-

1. अलबरूनी ने लिखा है कि ज्योतिष शास्त्र में हिन्दू लोग संसार की सभी जातियों से बढ़कर हैं। मैंने अनेक भाषाओं के अंकों के नाम सीखे हैं, पर किसी जाति में भी हजार से आगे की संख्या के लिए मुझे कोई नाम नहीं मिला। हिन्दुओं में 18 अंकों तक की संख्या के लिए नाम हैं जिनमें अंतिम संख्या का नाम परार्ध बताया गया है।
2. प्रो. मैक्समूलर ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि भारतवासी आकाशमंडल और नक्षत्रमंडल आदि के बारे में अन्य देशों के ऋणी नहीं हैं। इन वस्तुओं के मूल आविष्कर्ता वे ही हैं।
3. फ्रांसीसी पर्यटक फ्राक्वीस वर्नियर भी भारतीय ज्योतिष-ज्ञान की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं कि भारतीय अपनी गणना द्वारा चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण की बिलकुल ठीक भविष्यवाणी करते हैं। इनका ज्योतिष ज्ञान प्राचीन और मौलिक है।
4. फ्रांसीसी यात्री टरवीनियर ने भी भारतीय ज्योतिष की प्राचीनता और विशालता से प्रभावित होकर कहा है कि भारतीय ज्योतिष ज्ञान प्राचीनकाल से ही अतीव निपुण हैं।
5. इन्साइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटैनिका में लिखा है कि इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे (अंग्रेजी) वर्तमान अंक-क्रम की उत्पत्ति भारत से है। संभवतः खगोल-संबंधी उन सारणियों के साथ जिनको एक भारतीय राजदूत ईस्वीं सन् 773 में बगदाद में लाया, इन अंकों का प्रवेश अरब में हुआ। फिर ईस्वीं सन् की 9वीं शती के प्रारंभिक काल में प्रसिद्ध अबुजफर मोहम्मद अल् खारिज्मी ने अरबी में उक्त क्रम का विवेचन किया और उसी समय से अरबों में उसका प्रचार बढ़ने लगा। यूरोप में शून्य सहित यह संपूर्ण अंक-क्रम ईस्वी सन् की 12वीं शती में अरबों से लिया गया और इस क्रम से बना हुआ अंकगणित अल गोरिट्मस नाम से प्रसिद्ध हुआ।

वास्तु

किराए के मकान में रहने वालों पर भी मंडराता है वास्तु दोष का प्रकोप

कभी-कभी किसी घर के पुराने दोषों के कारण वहां रहने वाले लोगों के जीवन में समस्याएं बढ़ जाती हैं। किराए के घर में रहने वाले मकान मालिक की मर्जी के बिना घर में कोई बदलाव भी नहीं करवा सकते हैं। ऐसे में किराएदार को वास्तु दोष के कारण स्वास्थ्य संबंधी या धन संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यहां कुछ ऐसे सामान्य उपाय बताए जा रहे हैं, जिन्हें मकान मालिक से पूछे बिना भी घर में कर सकते हैं...

- घर का उत्तर-पूर्व का भाग ज्यादातर खाली ही रखना चाहिए। यहां सामान रखना वास्तु दोष उत्पन्न करता है। ऐसे में घर के लोगों के जीवन में धन संबंधी परेशानियां बनी रहती हैं।
- घर के भारी सामान या अनावश्यक वस्तुओं को घर के दक्षिण-पश्चिम भाग में रखना चाहिए। किसी अन्य स्थान पर भारी सामान रखना वास्तु के अनुसार अशुभ माना जाता है। ऐसा करने पर आपकी पैसों से जुड़ी समस्याएं कम हो सकती हैं।
- घर में बाथरूम या किचन के लिए पानी की सप्लाई उत्तर-पूर्व दिशा से लेना चाहिए।
- इस बात का भी ध्यान रखें कि बाथरूम में या किचन में या किसी अन्य स्थान पर नल से हमेशा पानी टपकना अशुभ होता है। यदि नल से हमेशा पानी टपकता रहता है तो उसे ठीक करवाएं। जैसे-जैसे नल से टपकता है ठीक वैसे ही आपके पैसों का अपव्यय होता है।
- शयनकक्ष में पलंग का सिरहाना दक्षिण दिशा में रखना चाहिए। ध्यान रखें सोते समय आपका सिर दक्षिण दिशा में व पैर उत्तर दिशा में हो तो बेहतर रहता है। यदि ऐसा न हो तो पश्चिम दिशा में सिरहाना या सिर कर सकते हैं। यदि आप इस प्रकार सोएंगे तो कई प्रकार की बीमारियों से बचाव हो जाएगा।
- खाना खाते समय ध्यान रखें कि आपका मुख दक्षिण-पूर्व दिशा में होगा तो बेहतर रहेगा। ऐसा करने पर भोजन से पूर्ण शक्ति प्राप्त होती है और वास्तु दोषों का नाश होता है।

सीनियर स्टेट आर्टिस्टिक जिमनास्टिक चैम्पियनशिप का समापन

एजेंसी

उदयपुर। राजस्थान राज्य जिमनास्टिक संघ के तत्वावधान में नारायण सेवा संस्थान परिसर में चल रही तीन दिवसीय सीनियर स्टेट जिमनास्टिक चैम्पियनशिप का समापन हुआ। उदयपुर जिला जिमनास्टिक संघ के अध्यक्ष हिम्मत सिंह चौहान ने बताया कि समापन समारोह के मुख्य अतिथि नारायण सेवा के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल तथा नितुल चंडालिया,अतुल चंडालिया,अंतर्राष्ट्रीय तैराकी कोच दिलीप सिंह चौहान, राजेन्द्र नलवाया, राजस्थान राज्य जिमनास्टिक अध्यक्ष चैन सिंह राठौड़, परमेश्वर कुमार एवं कान सिंह राठौड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री अग्रवाल ने खिलाड़ियों का भरपूर उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें सम्मानित किया। प्रतियोगिता में महिला वर्ग में जोधपुर की टीम प्रथम स्थान पर रही तथा नागौर, अजमेर की टीम द्वितीय एवं तृतीय पर रहीं। वहीं पुरुष वर्ग में जोधपुर की टीम प्रथम, भीलवाड़ा की द्वितीय और उदयपुर की टीम तृतीय स्थान पर रहीं।सचिव भरत सिंह भाटी ने बताया कि, व्यक्तिगत स्पर्धा में दिशा - प्रथम, ईशा - द्वितीय एवं दीपा - तृतीय स्थान पर रहीं। यह तीनों विजेता जोधपुर से हैं। तथा पुरुष वर्ग में जोधपुर के शुभम - प्रथम, भीलवाड़ा से प्रतीक - द्वितीय और उदयपुर के कृष्ण - तृतीय रहे।

उप्र ने मणिपुर को और बंगाल ने मिजोरम को हराया

मुम्बई/सौराष्ट्र। सैयद मुश्ताक अली टॉफी में खेले गये ग्रुप सी के मुकाबले में उत्तर प्रदेश ने मणिपुर को सात विकेट से हराया। वहीं ग्रुप ए के मुकाबले में बंगाल ने मिजोरम को आठ विकेट से शिकस्त दी। उत्तरप्रदेश ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी मणिपुर ने उलेन्याई ख्वाइराकपम (30), जॉनसन सिंह (25), सद्दाम अहमद शाह (20) कप्तान रेक्स राजकुमार सिंह (12) और एस सिंह (10) के योगदान से निर्धारित 20 ओवर में आठ विकेट पर 110 रन का स्कोर खड़ा किया। मणिपुर के 110 रनों के जवाब में आर्यन जुयाल (55), माधव कौशिक (22), नीतीश राणा (नाबाद 20) के आतिशी योगदान से उत्तर प्रदेश ने 11.2 ओवर में तीन विकेट पर 112 रन बनाकर मुकाबला सात विकेट से जीत लिया। आर्यन जुयाल को उनकी शानदार बल्लेबाजी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच से नवाजा गया। एक अन्य मुकाबले में बंगाल ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी मिजोरम ने मोहित जांगड़ (नाबाद 80) की तूफानी पारी और एफ वनलालमुआनजुआला (20), ललहरियाट्रेंगा (नाबाद 17), जेहु एंडरसन (14) और अग्नि चोपड़ा (13) के योगदान से निर्धारित 20 ओवर में चार विकेट पर 157 रन का स्कोर बनाया। अभिषेक पोरेल (81) और करण लाल (67) की शानदार तूफानी बल्लेबाजी के दम पर बंगाल ने 15.3 ओवर में दो विकेट पर 158 रन बनाकर मुकाबला आठ विकेट से जीत लिया। अभिषेक पोरेल को उनकी शानदार पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच से नवाजा गया।

अंशकालिक खेल प्रशिक्षकों के रिक्त पदों परआनलाइन आवेदन 26 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक

जौनपुर। उत्तर प्रदेश खेल निदेशालय ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में विभिन्न खेलों- एथलेटिक्स, तीरन्दाजी, नेटबाल, टेबुल-टेनिस, तलवारबाजी, जिम्नास्टिक, बैडमिन्टन, ताइक्वाण्डो, वुशू, तैराकी, लॉन टेनिस, बास्केटबाल, वॉलीबाल, भारोत्तोलन, हॉकी, जूडो, बाक्सिंग, क्रिकेट, खो-खो, कबड्डी, स्क्वैश, शूटिंग, कुश्ती, साफ्ट टेनिस, क्याकिंग एण्ड केनोइंग, रोइंग, कराटे खेलों में अंशकालिक मानदेय प्रशिक्षकों के 107 रिक्तों पदों को जेम पोर्टल के माध्यम से सेवा प्रदाता फर्म के माध्यम से भरकर चयन सम्बन्धी कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया है।इस संबंध में गुरुवार को हिन्दुस्थान समाचार से बात करते हुए जिला क्रीड़ा अधिकारी डॉ. अतुल कुमार सिन्हा ने बताया कि पूरे प्रदेश में लगभग 450 पद रिक्त थे जिन्हें सेवा प्रदाता एजेंसी के माध्यम से भरा जा रहा है। सभी जनपदों से आवेदन पत्र भरने को कहा गया है। अभी लगभग 107 पद खाली हैं। उसे भरने की प्रक्रिया चल रही है। ये प्रक्रिया लगातार चलती रहती है क्योंकि यह पद संविदा पर होते हैं। लोग सरकारी नौकरी मिलने के बाद छोड़कर चले जाते हैं। ऐसे में दोबारा उसी पद पर लोगों की नियुक्ति की जाती है। यह प्रक्रिया पूरे प्रदेश में लगातार चलती रहती है।

ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए चोटिल यास्तिका भाटिया की जगह उमा छेत्री का चयन

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए चयनित भारतीय महिला क्रिकेट टीम में एक फेरबदल हुआ है। चोटिल यास्तिका भाटिया की जगह उमा छेत्री को टीम में स्थान मिला है। इस परिवर्तन से पहले बीसीसीआई मेडिकल टीम ने पुष्टि की कि यास्तिका भाटिया कलाई की चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला से बाहर हो गई हैं। उनकी रिकवरी पर कड़ी नजर रखी जा रही है। ऐसे में टीम में एक और विकेटकीपक के लिए भाटिया की जगह उमा छेत्री को शामिल किया गया है। श्रृंखला के पहले दो मुकालबे भारतीय टीम क्रमशः 05 और 08 दिसंबर को एलन बॉर्डर फील्ड, ब्रिस्बेन में खेलेगी। तीसरा और अंतिम वनडे 11 दिसंबर को वाका ग्राउंड, पर्थ में खेला जाएगा। यह सीरीज आईसीसी महिला चैम्पियनशिप का हिस्सा है।

प्रो कबड्डी लीग सीजन-11 के प्लेऑफ और फाइनल होंगे पुणे में

एजेंसी

पुणे। प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के आयोजक मशाल स्पोर्ट्स ने कहा है कि प्रो कबड्डी लीग सीजन-11 के प्लेऑफ और फाइनल मुकाबले 26 दिसंबर से 29 दिसंबर तक पुणे के बालेवाड़ी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के बैडमिंटन हॉल में खेले जायेंगे। लीग चरण में शीर्ष दो टीमें सीधे सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी जबकि तीसरे, चौथे, पांचवें और छठे स्थान पर रहने वाली टीमें 26 दिसंबर को एलिमिनेटर चरण में आमने-सामने होंगी। तीसरे स्थान पर रहने वाली टीम एलिमिनेटर-1 में छठे स्थान पर रहने वाली टीम से भिड़ेगी और चौथे स्थान पर रहने वाली टीम एलिमिनेटर-2 में पांचवें स्थान पर रहने वाली टीम से मुकाबला करेगी। एलिमिनेटर-1 का विजेता सेमीफाइनल-1 में तालिका में शीर्ष पर रहने वाली टीम से मुकाबला करेगी और एलिमिनेटर-2 का विजेता

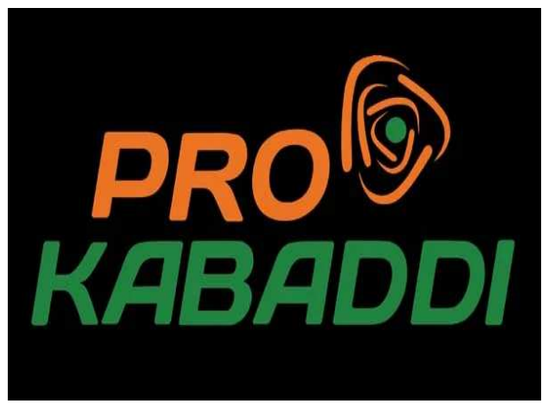

सेमीफाइनल-2 में 27 दिसंबर को दूसरे स्थान पर रहने वाली टीम से भिड़ेगा। इसके बाद, पीकेएल सीजन -11 के विजेता का फैसला करने के लिए 29 दिसंबर को ग्रैंड फिनाले होगा। लीग वर्तमान में नोएडा में आयोजित ही रही है, जिसके मैच-1 दिसंबर तक नोएडा इंडोर स्टेडियम में होंगे। इसके बाद टूर्नामेंट तीन से 24 दिसंबर तक पुणे में होगा। जिसके बाद प्लेऑफ होंगे। प्रो कबड्डी लीग के लीग चेयरमैन और मशाल के बिजनेस हेड श्री अनुपम गोस्वामी ने कहा, ÷हम प्लेऑफ और फाइनल को पुणे में लाने को लेकर रोमांचित हैं। यह शहर अपनी जीवंत कबड्डी भावना के लिए जाना जाता है। इस सीजन को हैदराबाद से नोएडा तक इसकी तीव्र प्रतिस्पर्धा और रोमांचक फिनिश ने परिभाषित किया है। चूंकि लीग अब पुणे में आयोजित होने जा रही है, इसलिए हम उसी स्तर के रोमांच और उत्साह की उम्मीद करते हैं। महाराष्ट्र के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के साथ कई टीमों में चमकते हुए, हमें विश्वास है कि यहाँ का उत्साही कबड्डी समुदाय इन निर्णायक मैचों के लिए एक रोमांचक माहौल बनाएगा जो इस सीजन के चैंपियन का निर्धारण करेगा।

डीएफसी ने यूनाइटेड भारत को हराया

एजेंसी

नयी दिल्ल। दिल्ली फुटबॉल क्लब (डीएफसी) ने यूनाइटेड भारत को 3-1 से हरा कर डीएसए प्रीमियर लीग में पूरे अंक अर्जित किए।आज यहाँ अम्बेडकर स्टेडियम मैदान पर खेले गए मैच में दिल्ली एफ सी को जमने में समय लगा लेकिन तब तक अंक तालिका में काफी नीचे चल रही और अपेक्षाकृत कमजोर आँकी जा रही यूनाइटेड भारत एक गोल से बढ़त लेने में सफल रही। विजेता डीएफसी के लिए गयारी, जाकोब और प्लेयर ऑफ द मैच नौबा ने गोल किये। वहीं पराजित यूनाइटेड भारत का गोल चन्दन ने छठे मिनट में किया। अंक तालिका में चौथे स्थान पर चल रही दिल्ली एफसी को आज के मुकाबले में भले जी कमजोर प्रतिद्वन्दवी मिला लेकिन पहले हाफ में यूनाइटेड भारत ने डट कर मुकाबला ही नहीं किया बल्कि चन्दन के गोल से छठे मिनट में बढ़त भी बनाई। डीएफसी के गयारी ने 58वें मिनट में बराबरी का गोल जमाया। इस बीच डी एफ सी के फारवर्ड ने आधा दर्जन मौके गँवाए। अंततः गयारी, जाकोब और नौबा ने गोल जमा कर टीम को राहत दिलाई। विजेता टीम ने नौ मैचों में 18 अंक बना लिए हैं। यूनाइटेड भारत के आठ मैचों में 6 अंक हैं।

प्रियांशु पुरुष एकल के दूसरे दौर में,आकर्षी उलटफेर की शिकार

एजेंसी

लखनऊ। दूसरी वरीय प्रियांशु राजावत ने सैयद मोदी इंडिया इंटरनेशनल एचएसबीसी वर्ल्ड टूर सुपर 300 बैडमिंटन चैंपियनशिप 2024 में आसान जीत के साथ प्री क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली। वहीं महिला एकल के पहले दौर में तीसरी वरीय भारत की आकर्षी कश्यप उलटफेर का शिकार हो गई। योनेक्स सनराइज बाबू बनारसी दास बैडमिंटन अकादमी में आयोजित चैंपियनशिप में पुरुष एकल के पहले दौर में पिछले संस्करण में सेमीफाइनल तक का सफर तय कर चुके प्रियांशु राजावत ने हमवतन कार्तिकेय गुलशन कुमार को 21-13, 21-12 से हराया। पुरुष युगल के पहले दौर में दूसरी वरीय हरिहरन अमसाकरुणन व रूबन कुमार ने भारत के ही संजय एसडी व साई पवन के. को 21-10, 21-8 से हराया। महिला एकल में थाईलैंड की एल.चाइवान ने भारत की तीसरी वरीय आकर्षी कश्यप को 21-8, 21-12 से हराकर उलटफेर किया। चीन की वू लूओ यू ने भारत की इशारानी बरुआ

को 21-16, 21-12 से और भारत की छठीं वरीय आर.श्री संतोष रामराज ने हमवतन केयूरा मोपाती को 21-10, 16-21, 21-13 से हराया। महिला युगल में थाईलैंड की तीसरी वरीय बेन्यापा एमसर्ड व एन.एमसर्ड ने भारत की उन्नति हुड्डा व रिद्धि कौर तूर को 21-17, 21-7 से, भारत की गायत्री रावत व मंसा रावत ने भारत की अपूर्वा गहलावत व साक्षी गहलावत को 21-17, 21-15 से, चीनी ताइपे की चेन सू यू एवं यी येन एच ने भारत की समृद्धि सिंह व तनीषा सिंह को 21-12, 21-11 से हराया। दूसरी वरीय त्रिशा जाली व गायत्री गोपीचंद पी.को पहले दौर में वाकओवर मिला। पुरुष एकल में चीन के वांग झेंग जिंग ने भारत के सनीथ दयानंद को 21-23, 21-17, 23-21 से और श्रीलंका के वीरेन एन. ने भारत के सिद्धार्थ प्रताप सिंह को 21-14, 21-18 से हराया।

मेरा निलंबन भाजपा सरकार की राजनीतिक साजिश : पूनिया

एजेंसी

नयी दिल्ली। पहलवान बजरंग पूनिया ने राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी (नाडा) द्वारा उन पर लगाए गए चार साल के प्रतिबंध की कड़ी निंदा करते हुए इसे भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार की राजनीतिक साजिश और व्यक्तिगत प्रतिशोध करार दिया है।

दिये गये एक बयान में पूनिया ने दावा किया कि उनके खिलाफ की गई कार्रवाई महिला पहलवानों के आंदोलन का समर्थन करने में उनकी मुखर भूमिका का प्रतिशोध है।टोक्यों ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाले पूनिया ने सोशल मीडिया मंच पर भाजपा सरकार और भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) पर उनके करियर को खत्म करने की साजिश रचने का आरोप लगाया। उन्होंने लिखा, ÷यह चार साल का प्रतिबंध मेरे खिलाफ व्यक्तिगत दुश्मनी और राजनीतिक साजिश का नतीजा है।उन्होंने कहा, यह महिला पहलवानों के समर्थन में हमारे द्वारा चलाए गए आंदोलन का सीधा नतीजा है, जिसमें हमने उनके साथ हुए अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज उठाई थी। उन्होंने कहा, जब नाडा की टीम मेरे पास परीक्षण के लिए आई, तो उनके पास जो डोप किट थी, वह एक्सपायर

हो चुकी थी। यह एक बड़ी लापरवाही थी, और मैंने केवल इस बात पर जोर दिया कि परीक्षण एक वैध और स्वीकृत किट के साथ किया जाए। यह मेरे स्वास्थ्य और करियर की रक्षा के लिए आवश्यक था। लेकिन, इसे जानबूझकर मेरे खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया। उन्होंने कहा, भाजपा सरकार और महासंघ ने मुझे फंसाने और मेरा करियर खत्म करने के लिए यह चाल चली है। यह फैसला निष्पक्ष नहीं है, बल्कि मुझे और मेरे जैसे अन्य खिलाड़ियों को चुप कराने का प्रयास है।उन्होंने कहा, मैं यह स्पष्ट कर दूं कि भले ही मुझे आजीवन निलंबित कर दिया जाए, लेकिन मैं अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना बंद नहीं करूंगा। यह लड़ाई सिर्फ मेरी नहीं है, बल्कि हर उस खिलाड़ी की है, जिसे सिस्टम ने चुप करा दिया है। मैं इस फैसले के खिलाफ अपील करूंगा और आखिरी सांस तक अपने अधिकारों के लिए लड़ता रहूंगा। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय टीम के चयन ट्रायल में डोप जांच नमूना देने से इनकार करने पर राष्ट्रीय एंटी डोपिंग एजेंसी (नाडा) ने बजरंग पूनिया को चार साल के लिए निलंबित कर दिया है। इस निलंबन के कारण पूनिया को प्रतिस्पर्धी कुश्ती में भाग लेने और विदेश में प्रशिक्षण की अनुमति नहीं होगी।

भारत ने पुरुष जूनियर एशिया कप 2024 में थाईलैंड को 11-0 से हराया

एजेंसी

मस्कट (ओमान)। भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम ने आज ओमान के मस्कट में पुरुष जूनियर एशिया कप 2024 अभियान के पहले मैच में थाईलैंड के खिलाफ 11-0 से जीत दर्ज की। अरजीत सिंह हुंदल (2फीसदी, 24फीसदी) जो आगामी एचआईएल में टीम गोनासिका के लिए खेलेंगे और दिल्ली एसजी पाइपर्स के सौरभ आनंद कुशवाह (19फीसदी, 52फीसदी) और यूपी रुद्रस के गुरजोत सिंह (18फीसदी, 45फीसदी) ने स्कोर किया। खेल में प्रत्येक को संभालो। जबकि अर्शदीप सिंह (8फीसदी), शारदा नंद तिवारी (10फीसदी) दिलराज सिंह (21%), रोहित (29%) और मुकेश टोप्पो (59%) ने भारत की व्यापक जीत में एक-एक गोल किया। भारत ने शुरुआती सीटी से ही गेंद पर नियंत्रण बनाए रखा और जल्द ही गेंद को नेट में डाल दिया। बैकलाइन से प्रियोबार्ता तालेम के तीक्ष्ण पास के बाद, अरजीत सिंह हुंदल ने बाएं विंग से एक भयानक रिवर्स शॉट के साथ पहला गोल किया। भारत ने थाईलैंड पर लगातार दबाव बनाना जारी रखा और बार-बार हवाई पास देकर शूटिंग सर्कल में प्रवेश किया। इसके तुरंत बाद, तालेम को बाएं विंग में एक तेजतर्रार पास मिला, और अर्शदीप सिंह थाईलैंड के गोलकीपर थाविन फोमजंट से बचाने के बाद गेंद को गोल में धकेलने के लिए सतर्क थे। क्वार्टर खत्म होने में पांच मिनट बचे थे, भारत को पेनल्टी कॉर्नर मिला और शारदा नंद तिवारी ने गेंद को थाईलैंड की रक्षापंक्ति के पार खींच लिया, जिससे भारत का स्कोर 3-0 हो गया। दूसरे क्वार्टर में कुछ ही मिनटों में, गुरजोत ने अरिजीत के शॉट को कीपर के पास से हटाकर बोर्ड को चकमा दे दिया और खेल में भारत के अधिकार पर मोहर लगा दी। जबकि थाईलैंड अभी भी एकजुट हो रहा था, सौरभ ने एक करीबी-रेंज शॉट से रिबाउंड पर हमला किया और इसे कीपर के ऊपर से उठाकर स्कोर 5-0 कर दिया। दिलराज स्कोरशीट पर अपना नाम दर्ज कराने के करीब थे, उन्होंने सर्कल में एक विक्षेपित गेंद को उठाया और सर्कल के ऊपर से रिवर्स शॉट के साथ कीपर को हरा दिया। भारत का दबदबा जारी रहा और उन्होंने थाईलैंड के हाफ में गेंद को पिन किया और दूसरे गोल की तलाश में आगे बढ़े। 24वें मिनट में, अरिजीत ने सर्कल में कई रक्षकों को छकाया और एक शानदार रिवर्स शॉट के साथ ऊपरी बाएं कोने को भेद दिया। आधे मिनट से कुछ अधिक समय शेष रहने पर, आमिर को पेनल्टी स्ट्रोक मिला और रोहित ने मौके से एक कम और शक्तिशाली शॉट के साथ स्कोर 8-0 कर दिया।

लबरेज गुकेश ने तीसरे गेम में डिंग लिरेन को हराया

एजेंसी

सिंगापुर। भारतीय चैलेंजर गुकेश डी नेफिडे विश्व शतरंज चैंपियनशिप के फाइनल में पहली जीत है। अभी 11 गेम होने शेष है। मैच के बाद गुकेश ने कहा, बहुत अच्छा लग रहा है। पिछले दो दिनों के बाद मैं अपने खेल से बहुत खुश हूँ और आज मैं अपने प्रतिद्वंद्वी को मात देने में कामयाब रहा।गुकेश का चौथा गेम शुक्रवार को होगा और डिंग लिरेन सफेद मोहरों के साथ खेलेंगे।

बंगलादेश की महिला टीम ने आयरलैंड को 154 रनों से हराया

एजेंसी

ढाका। शर्मिन अख्तर (96) और फरगाना हक (61) की शानदार बल्लेबाजी के बाद सुलताना खातून (तीन विकेट), मारुफा अख्तर और नाहिदा अख्तर (दो-दो विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी की बदौलत बंगलादेश की महिला टीम ने एकदिवसीय मुकाबले में आयरलैंड की महिला टीम को 154 रनों से हरा दिया है।253 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी आयरलैंड की शुरुआत खराब रही और उसने 10 के स्कोर पर अपने दो विकेट गवां दिये। उसके बाद ओर्ला प्रेंडरगैस्ट और सारा फोर्ब्स ने पारी को संभालने का प्रयास किया। नाहिदा अख्तर ने ओर्ला प्रेंडरगैस्ट (19) को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। सारा फोर्ब्स (25) रन बनाकर आउट हुई। लौरा डेलानी ने (22) रन बनाये। आयरलैंड टीम के आठ

खिलाड़ी दहाई आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सके। बंगलादेश के गेंदबाजों के आगे आयरलैंड की पूरी टीम 28.5 ओवर में 98 रन पर ढ़ेर हो गई। बंगलादेश की ओर से सुलताना खातून ने तीन विकेट लिये। मारुफा अख्तर और नाहिदा अख्तर को दो-दो विकेट मिले।

इससे पहले आज यहां बंगलादेश की महिला टीम ने टॉस जीतकर आयरलैंड के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। फरगाना हक और मुर्शिदा खातून की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिये 59 रन जोड़े। 19वें ओवर में लौरा डेलानी ने मुर्शिदा खातून (38) को आउट कर आयरलैंड को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद शर्मिन अख्तर और फरगाना हक के बीच दूसरे विकेट के लिये 104 रनों की साझेदारी हुई। 37वें ओवर में एमी मैग्वायर ने फरगाना हक (61) को आउट कर इस साझेदारी तोड़ी। इसके बाद कप्तान निगार सुल्ताना (28) रन बनाकर आउट हुई। शर्मिन अख्तर ने टीम के लिए 89 गेंदों में 14 चौके लगाते हुये (96)रनों की पारी खेली। इन दोनों बल्लेबाजों को फ्रेया सार्जेंट ने आउट किया। बंगलादेश ने निर्धारित 50 ओवरों में चार विकेट पर 252 रन का स्कोर बनाया।

आयरलैंड के लिए फ्रेया सार्जेंट ने दो विकेट लिये। लौरा डेलानी और एमी मैग्वायर ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

राष्ट्रीय स्कूल एथलेटिक्स प्रतियोगिता : दो स्वर्ण के साथ महाराष्ट्र अव्वल, तमिल रहा दूसरे स्थान पर

एजेंसी

लखनऊ। माध्यमिक शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा अंडर-17 आयु वर्ग के बालक बालिकाओं की 68वीं राष्ट्रीय स्कूली एथलेटिक्स प्रतियोगिता के दूसरे दिन दो स्वर्ण पदक के साथ महाराष्ट्र अभी तक प्रथम पर रहा। वहीं तमिलनाडु एक स्वर्ण पदक, एक रजत पदक और एक कांस्य पदक के साथ दूसरे स्थान पर रहा, जबकि उप्र एक रजत और एक कांस्य पदक के साथ तीसरे स्थान पर रहा।

गुरु गोविंद सिंह स्पोर्ट्स कालेज में चल रही प्रतियोगिताओं में युवा खिलाड़ियों ने खूब उत्साह दिखाया। दर्शक भी खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन करते रहे। बालक वर्ग के पोल वाल्ट खेल में केरल के मिलन साबू अव्वल रहे। वहीं मध्य प्रदेश के प्रिंस यादव ने दूसरा स्थान प्राप्त किया, जबकि तमिलनाडु के संजय कुमार तीसरे स्थान पर रहे। वहीं गोला फेंक

में तमिलनाडु के लनिश जोशवा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उप्र के कृष्णा सिंह दूसरे स्थान पर रहे।100 मीटर दौड़ में महाराष्ट्र के आदित्य पिसल अव्वल, सीबीएसई के एफ फेडरिक दूसरे और उत्तर प्रदेश के जमील तीसरे स्थान पर रहे। वहीं बालिका वर्ग के गोला फेंक में पंजाब के जैस्मिन कौर प्रथम स्थान पर, केंद्रीय विद्यालय के जाय बैदवान दूसरे और केंद्रीय विद्यालय के ही एम रेड्डी तीसरे स्थान पर रहीं। ऊंची कूद में महाराष्ट्र की आंचल अव्वल, तमिलनाडु की सादना दूसरे और केरल की अशमिका तीसरे स्थान पर रहीं। वहीं 100 मीटर दौड़ में सीआईएससीई की शौर्य अम्बूर अव्वल, गुजरात की वाला दूसरे स्थान पर रहीं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विधायक बख्शी का तालाब योगेश शुक्ल ने कहा कि अपने परिश्रम का क्रम बनाये रखें और आने वाले समय में और बड़ी उपलब्धियों को हासिल कर अपने देश को गौरवान्वित करें। जो पदक नहीं जीत सके उन प्रतिभागियों का हौसला बुलन्द करते हुए कहा कि जीतना और हारना खेल का एक हिस्सा है, महत्वपूर्ण है आपका आत्मविश्वास और सामर्थ्य बना रहे।

गुजरात जाएंट्स ने रोमांचक मुकाबले में बंगाल वारियर्स को 2 अंक से हराया

एजेंसी

नोएडा। गुजरात जाएंट्स ने अंतिम मिनट में आलआउट लेते हुए नोएडा इंडोर स्टेडियम में रिवेंज वीक के तहत खेले गए प्रो कबड्डी लीग के 11वें सीजन के 80वें मैच में बंगाल वारियर्स को 39-37 के स्कोर से हरा दिया। यह इस सीजन में गुजरात की 13 मैचों में चौथी जीत है जबकि बंगाल को इतने ही मैचों में आठवीं हार मिली। गुजरात के लिए गुमान सिंह ने 12 अंक लिए जबकि हिमांशु ने 6 अंक जुटाए। इसी तरह बंगाल के लिए मनिंदर सिंह (11) ने लंबे समय बाद सुपर-10 लगाया जबकि नितेश ने डिफेंस से 6 और फजल अतराचली ने चार अंक लिए। इस जीत के साथ गुजरात अंक तालिका में 11वें से 10वें स्थान पर आ गई है। कप्तान गुमान ने तीसरे मिनट में सुपर रेड के साथ गुजरात को 5-1 की लीड दिला दी थी। अगली रेड पर हालांकि फजल ने परतीक को बाहर किया और फिर नितिन ने डू ओर डाई रेड पर दो अंक ले स्कोर 4-5 कर दिया। बंगाल ने इसके बाद लगातार दो अंक लेकर स्कोर बराबर कर गुजरात के लिए सुपर टैकल आन कर दिया। इस बीच हिमांशु ने मनिंदर को सुपर टैकल कर स्कोर 8-6 कर दिया। फिर हिमांशु ने डू ओर डाई रेड पर दो अंक लेकर फासला 4 का कर दिया। 10 मिनट बाद गुजरात 11-6 से आगे थे। ब्रेक के बाद बंगाल ने एक के मुकाबले चार अंक लेकर वापसी की राह पकड़ी। फिर नितिन ने प्रियांक को आउट कर गुजरात को आलआउट की ओर धकेला। मनिंदर गए और मोहित का शिकार कर

गुजरात को आलआउट कर स्कोर 15-15 कर दिया। आलइन के बाद मनिंदर ने दो अंक ले पहली बार बंगाल को दो अंक की लीड दिला दी। गुजरात ने हालांकि जल्द स्कोर बराबर कर दिया। बंगाल ने इसके बाद हालांकि लगातार दो अंक लेकर 20-19 स्कोर पर पाला बदला। हाफटाइम के बाद मनिंदर खुद डू ओर डाई रेड पर आए और जीतेंद्र का शिकार किया लेकिन परतीक ने इसी तरह की रेड पर दो अंक लेकर स्कोर 21-21 कर दिया। इस बीच गुजरात ने 24-22 की लीड ले ली। इस बीच बंगाल ने गुमान और परतीक को बाहर कर दिया। अगली रेड पर क्लासिकल टो टच पर मनिंदर ने स्कोर बराबर कर दिया। फिर हिमांशु को लपक मयूर ने बंगाल को 26-25 से आगे कर गुजरात के लिए सुपर टैकल आन कर दिया। नितिन ने हिमांशु का शिकार कर गुजरात को आलआउट की ओर धकेल दिया लेकिन नितिन का सुपर टैकल कर मोनू ने नितिन को सुपर टैकल कर गुजरात को लीड दिला दी। बंगाल ने हालांकि जल्द ही गुजरात को आलआउट कर 32-29 की लीड ले ली। इसी बीच नितेश ने हाई-5 और मनिंदर ने सुपर-10 पूरा किया। दो मिनट बचे थे और गुजरात ने लगातार दो अंक के साथ स्कोर 33-34 कर दिया। इसके बाद गुमान ने चार के डिफेंस में मयूर का शिकार कर स्कोर बराबर कर दिया। अगली रेड पर हिमांशु ने नितिन को लपक गुजरात को 35-34 से आगे कर किया। बंगाल के सिर्फ दो खिलाड़ी मैट पर थे। गुजरात के डिफेंस ने स्थानापन्न विश्वास को लपक स्कोर 36-34 किया और फिर आलआउट लेकर 39-34 की लीड ले ली। 30 सेकेंड बचे थे और नितिन ने दो अंक लेकर फिर मैच में रोमांच ला दिया। हिमांशु रेड पर गए और वाकलाइन पार किए बगैर लौट गए। अब स्कोर 37-39 हो गया था और इसी के साथ समय भी समाप्त हो गया। साथ ही गुजरात ने यह मैच दो अंक ले जीत लिया।

टीना दत्ता

TV सीरियल 'उतरन' की इच्छा कहां और किस हाल में जी रही हैं जिंदगी

साल 2008 में टीवी चैनल कलर्स पर एक ऐसा सीरियल आया जिसने काफी कुछ बदल दिया. सीरियल का नाम था उतरन जिसमें दो बच्चियों इच्छा और तपस्या की कहानी को दिखाया गया था. जहां तपस्या एक रिच बैकग्राउंड से आती थी और थोड़ी घमंडी थी, वहीं इच्छा, तपस्या के घर में काम करने वाली सर्वेंट की बेटी थी जिसको काफी प्यारी और मासूम दिखाया गया था. सीरियल में दोनों की फ्रेंडशिप और लव-हेट स्टोरी को काफी अच्छे से दिखाया गया था. इसके बाद आए लीप में लोगों ने तपस्या के किरदार में रश्मि देसाई और इच्छा के किरदार में टीना दत्ता को देखा था जिन्होंने शो से काफी पॉपुलैरिटी हासिल की. आज शो की इच्छा यानी टीना दत्ता का बर्थडे है. तो चलिए जानते हैं आजकल टीना कहां हैं और क्या कर रही हैं ?

टीना दत्ता ने 'उतरन' के अलावा फिल्म 'परिनीता' में विद्या बालन के किरदार की यंग ऐज वाले रोल को भी निभाया था. इसके अलावा टीना, बिग बॉस 16 में एक कंटेस्टेंट के तौर पर भी नजर आई थीं. टीना को उतरन के बाद बिग बॉस से एक बार फिर से पहचान मिली थी. वो इस शो में सबसे स्ट्रॉन्ग कंटेस्टेंट्स में से एक थीं. वो स्टंट बेस्ड रिएलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी 7' में भी नजर आ चुकी हैं.

बिग बॉस से किया था कमबैक

इस सीजन में टीना और शालीन भनोट के साथ उनका रोमांटिक बॉन्ड काफी लाइमलाइट में भी रहा था. टीना दत्ता सालों से छोटे पर्दे पर एक्टिव हैं. वो कुछ सालों से इंडस्ट्री से गायब थीं, लेकिन बिग बॉस से उन्होंने दोबारा कमबैक किया था. हालांकि, शो से बाहर आने के बाद से टीना ने लोगों से दूरी बना ली. एक्ट्रेस टीना दत्ता अभी भी स्क्रीन से दूर हैं, लेकिन सोशल मीडिया पर वो बाक़ायदा पोस्ट करती रहती हैं.

सरोगेसी के ज़रिए बनना चाहती हैं मां

मीडिया रिपोर्ट की मानें तो टीना ने महज 5 साल की उम्र में एक्टिंग की दुनिया में कदम रखा था. 37 साल की टीना को इंडस्ट्री में करीब 32 साल हो गए हैं. हाल ही में टीना की अपनी प्रेग्नेंसी को दिए गए बयान को लेकर चर्चा में थीं. टीना ने कहा था कि अगर उनकी शादी नहीं होती है, तो उनके पिता चाहते हैं कि सरोगेसी के ज़रिए उनका बच्चा हो. इस बात को ध्यान में रखते हुए, टीना ने एग्स फ्रीज करा लिए हैं. वो सरोगेसी के ज़रिए मां बनना चाहती हैं. टीना लास्ट सीरियल 'हम रहे ना रहें हम' में दिखाई दी थीं.

जिस एक्ट्रेस से जुड़ रहा मोहम्मद सिराज का नाम, वो सलमान खान को दिखा चुकी हैं पैसों का घमंड!

भारतीय क्रिकेटर्स का नाम कभी बॉलीवुड, तो कभी टीवी एक्ट्रेसेस के साथ जुड़ता रहता है. बीते दिनों इन अफवाहों को लेकर शुभमन गिल काफी चर्चा में रह चुके हैं. पहले सारा अली खान संग रिश्ते को लेकर खबर आई, फिर टीवी एक्ट्रेस रिद्धिमा पंडित के साथ शादी की अफवाहें उड़ने लगी. अब ऐसा ही कुछ तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज के साथ हो गया है. दरअसल उन्होंने बीते दिनों टीवी एक्ट्रेस माहिरा शर्मा की एक पोस्ट लाइक की थी. इसके बाद से ही उनका नाम माहिरा शर्मा संग जोड़ा जा रहा है.दरअसल फैन्स भारतीय क्रिकेटर्स की एक-एक एक्टिविटी पर नजर रखते हैं. यहां कुछ भी बदलाव हुआ कि दूसरी ओर सोशल मीडिया पर सवाल उठने लगते हैं. अब ऐसा ही कुछ मोहम्मद सिराज के साथ भी हो रहा है. पर जिस टीवी एक्ट्रेस से सिराज का नाम जुड़ रहा है, वो सलमान खान को पैसों का घमंड दिखा चुकी हैं. यह कोई और नहीं माहिरा शर्मा हैं.

जब सलमान को दिखाया पैसों का घमंड

टीवी एक्ट्रेस माहिरा शर्मा 'बिग बॉस 13' का हिस्सा रह चुकी हैं. शो में जब उनकी एंट्री हुई थी, तो वो प्रोमो काफी वायरल हुआ था. एंट्री के साथ ही सलमान खान ने माहिरा शर्मा से कुछ सवाल किए थे. इस दौरान उनका एक प्रोमो सामने आया था. इसमें वो कहती हैं- पैसा हाथों की धूल है, मैं पैसों के लिए नहीं पैशन के लिए काम करती हूं. इतना ही नहीं, जैसे ही वो स्टेज पर सलमान खान के सामने पहुंचीं, तो सलमान खान ने सवाल किया था कि- वो कौन सी चीज है, जो आपको बिग बॉस के घर की तरफ खींच लाई है.इस सवाल के जवाब में माहिरा शर्मा ने कहा कि- फेम तो मिल जाता है. साथ ही सलमान को पैसों का घमंड दिखाते हुए बोलीं- पैसे तो बहुत है मेरे पास क्योंकि मैं रईस हूं दिल से भी वैसे भी. इसके जवाब में सलमान खान कहते हैं कि बहुत अच्छी बात है. हालांकि, इस बयान के चलते उन्हें काफी ट्रोल भी किया गया था.

माहिरा शर्मा का क्यों हुआ था ब्रेकअप ?

'बिग बॉस 13' के घर में माहिरा शर्मा की मुलाकात पारस छाबड़ा से हुई थी. दोनों शो में करीब आए और डेट करने लगे थे. घर से बाहर आने के बाद भी साथ में कई बार दिखे थे. दरअसल दोनों के कई म्यूजिक वीडियो भी सामने आ चुके हैं. पर 3 साल के रिलेशन के बाद जब शादी की चर्चा होने लगी, तो दोनों का ब्रेकअप हो गया.

'लाहौर 1947' में आमिर खान ने किए बड़े बदलाव! सनी देओल को भेजा बुलावा, अब क्या होने वाला है?

सनी देओल को लेकर माहौल सेट है. साल 2023 में उन्होंने 'गदर 2' से खूब भौकाल काटा था. इस साल उनकी कोई भी फिल्म रिलीज नहीं हुई. पर 2025 में फिर से धमाल मचाने के लिए लौटने वाले हैं. अगले साल उनकी दो फिल्में रिलीज होंगी. पहली- लाहौर 1947 और दूसरी- जाट. सनी देओल काफी वक्त पहले ही 'लाहौर 1947' की शूटिंग खत्म कर चुके हैं. लेकिन आमिर खान के चलते उन्हें सेट पर वापस लौटना पड़ रहा है.हाल ही में मिड डे पर एक रिपोर्ट छपी. इससे पता लगा कि आमिर खान ने फिल्म के सीन्स में कुछ बदलाव की सलाह दी है. साथ ही फिल्म के पैचवर्क और गाने की शूटिंग के चलते अब सनी देओल को लौटना पड़ेगा.

शूटिंग हुई खत्म, तो क्यों लौट रहे सनी देओल ?

'लाहौर 1947' में सनी देओल के अपोजिट प्रीति जिंटा काम कर रही हैं. वहीं फिल्म को आमिर खान प्रोड्यूस कर रहे हैं. ऐसा भी कहा जा रहा है कि उनका पिक्चर में कैमियो होगा. फिल्म की शूटिंग कंप्लीट होने के बाद आमिर खान ने सनी देओल को वापस बुला लिया है. अब पैचवर्क, सीन्स में बदलाव और गाने की शूटिंग के लिए सनी देओल जल्द काम शुरू करेंगे. हाल ही में सनी देओल ने अपनी फिल्म 'जाट' की शूटिंग पूरी की है.

अब वो जल्द ही राजकुमार संतोषी की फिल्म का काम करने के लिए लौटेंगे. दरअसल आमिर खान 'लाहौर 1947' के पहले कट को देख रहे थे. इस दौरान उन्हें फील हुआ कि कुछ सीन्स को थोड़ा और ड्रामेटिक बनाने की जरूरत है, जिसका फिल्म को फायदा होगा. उन्होंने यह बातें राजकुमार संतोषी से शेयर की. उसके बाद यह फैसला हुआ कि कुछ और सीन्स को जोड़ा जाना चाहिए.

कितने दिन की शूटिंग होगी ?

इस रिपोर्ट से पता लगा कि सनी देओल पैचवर्क पर काम करने के लिए तैयार हैं. इसके चलते उन्होंने अपने शेड्यूल को भी एडजस्ट कर दिया है. फिल्म को ग्रैंड बनाने के लिए एक गाना भी जोड़ा गया है. महबूब स्टूडियो में एक सेट बना है, जहां 1 दिसंबर से गाने का शूट होगा. गाने का शूट, पैचवर्क और एडिशनल सीन्स को जोड़े जाने का काम 10-15 दिन तक चलेगा. जहां जरूरी सीन्स के अलावा गाने की शूटिंग की जाएगी.दरअसल कश्मीर में 'बॉर्डर 2' की शूटिंग से पहले वो पैचवर्क पूरा करेंगे. फिल्म में जहां अभिमन्यु सिंह नेगेटिव रोल में होंगे, वहीं सनी देओल का बेटा भी इस फिल्म में दिखने वाला है. फिल्म की रिलीज डेट का अब भी इंतजार किया जा रहा है.

रॉयल अंदाज, हाथों में हाथ...

अदिति राव हैदरी

दूसरी बार बनीं सिद्धार्थ की दुल्हन, देखें तस्वीरें

बॉलीवुड के पॉपुलर कपल अदिति राव हैदरी और सिद्धार्थ ने दूसरी बार एक दूसरे का हाथ थामा है. एक्ट्रेस दूसरी बार सिद्धार्थ की दुल्हन बन गई हैं. दोनों साथ में बेहद प्यारे लग रहे हैं. 16 सितंबर को दोनों ने 400 साल पुराने मंदिर में शादी की थी. इस दौरान ट्रेडिशनल आउटफिट में जच रहे थे. अब राजस्थान के अलीला फोर्ट बिशनगढ़ में रॉयल वेडिंग की तस्वीरें सामने आ गई है. इन तस्वीरों को अदिति राव हैदरी ने इंस्टाग्राम पर शेयर किया है.यूं तो दोनों ने दूसरी बार शादी की है या फिर सिर्फ ब्राइडल फोटोशूट है. यह जानने के लिए फैन्स भी काफी एक्साइटेड हैं. पर इस खास मौके की जो तस्वीरें सामने आई है, उसमें कोई भी फैमिली मेंबर नजर नहीं आया.

शाही अंदाज में अदिति-सिद्धार्थ की शादी

अदिति राव हैदरी लाल रंग के लहंगे में बेहद खूबसूरत नजर आ रही हैं. माथा पट्टी, नथ और हैवी ज्वेलरी के साथ अदिति ने लुक को कंप्लीट किया है. वहीं सिद्धार्थ क्रीम कलर की शेरवानी और मोतियों वाली माला पहने दिख रहे हैं. खेतों के बीचों-बीच दोनों ने ब्राइडल फोटोशूट भी करवाया है. राजस्थान में अदिति-सिद्धार्थ ने जो शादी की, वो तस्वीरें नई हैं या फिर पुरानी. इसकी जानकारी अबतक नहीं दी है. पर फैन्स दोनों को दोबारा बधाई दे रहे हैं. तस्वीरों में कपल शादी की रस्में निभाते हुए भी दिखाई दे रहे हैं. दोनों ने एक दूसरे को वरमाला भी पहनाई है. इस ड्रीमी वेडिंग ने हर किसी का ध्यान खींच लिया है. दोनों रोमांटिक अंदाज में नजर आ रहे हैं.

फैन्स अदिति राव हैदरी और सिद्धार्थ को मेड फॉर इच अदर कह रहे हैं. एक्ट्रेस ने इस ड्रीमी वेडिंग के एक नहीं, बल्कि तीन अलग-अलग पोस्ट शेयर किए हैं. दूल्हे राजा अपनी रानी अदिति को कॉम्पलिमेंट करते दिख रहे हैं. दरअसल यह तस्वीरें देखकर भी फैन्स शॉक्ड हैं. हर बार कपल गुपचुप तरीके से शादी कर लेता है और फिर तस्वीरें शेयर की जाती है. 2 महीने पहले भी एक्ट्रेस ने पूर्वजों के बनाए मंदिर में शादी की थी. साथ ही सिंपल वेडिंग के लिए उनकी तारीफ भी हुई थी.**सितंबर में एक दूसरे का थामा था हाथ**

अदिति-सिद्धार्थ ने इसी साल मार्च में सगाई की है. फिर सितंबर में शादी के बंधन में बंधे थे. अब दूसरी बार सिद्धार्थ की दुल्हन बन गई हैं. यूं तो दोनों की यह दूसरी ही शादी है. पहला रिश्ता लंबा नहीं चल पाया था, जिसके बाद अलग हो गए थे. साल 2021 से साथ थे, साल 2024 में शादी की.